गीता मैत्री

चार दशक विशेषांक



संत वाणी : भगवद्गीता : आनंद का विज्ञान

अपूर्व सद्गुरु जीवन दर्शन

गीता परिवार : चार दशकों की संस्कार-साधना से...

गीता जयंती महोत्सव

When the Gītā Found New Homes Gītā Jayanti Across...

गीता मैत्री

इस अंक में

अंक १० · जुलाई से दिसम्बर २०२५
४५ रचनाएँ · १९० पृष्ठ

01 अग्रदूतों के मन की बात

संत वाणी : भगवद्गीता : आनंद का विज्ञान ५
धर्मक्षेत्रे - कुरुक्षेत्रे ९
संपादकीय: गीता युग का उदय १२

02 अपूर्व सद्गुरु जीवन दर्शन

अपूर्व सद्गुरु जीवन दर्शन १५

03 गीता परिवार : चार दशकों की संस्कार-साधना से विश्वचेतना तक

गीता परिवार : चार दशकों की संस्कार-साधना से विश्वचेतना तक २२
नागपुर में 52,559 बालकों द्वारा सामूहिक गीता पाठ से विश्व कीर्तिमान! २७
The Gītā and the Corporate World ३२
स्वामी विवेकानन्द जी - आज के युवाओं के शाश्वत सारथी ३५

04 गीता जयंती महोत्सव

गीता जयंती महोत्सव ४१
गीता जयंती: चेतना का पर्व ४२
ऑफलाइन की तैयारी , तकनीकी सहयोग और भव्य उपलब्धियाँ ४३
ऑनलाइन विशेष आयोजन; गीता साधना का अभिनव आयाम ५३
गीता ओलंपियाड – एक दिव्य यात्रा ५६
आज का कुरुक्षेत्र, आज का युद्ध ५९
संगीतमय सस्वर पारायण - गीता जयन्ती महोत्सव लखनऊ ६१

05 When the Gītā Found New Homes Gītā Jayanti Across the World — A LearnGeeta & GeetaPariwar Journey

When the Gītā Found New Homes Gītā Jayanti Across the World — A LearnGeeta & GeetaPariwar Journey ६५

06 LearnGeeta के माध्यम से गीता अध्ययन का विकास

LearnGeeta के माध्यम से गीता अध्ययन का विकास ७३
L1 उद्घाटन समारोह ७५
विभिन्न L2, L3 ,L4 वर्गों के शुभारम्भ समारोह ८३
गीता मैत्री मिलन ८७
चिंतनिका सत्र ९४
“आओ, गीता सेवी बनें” — सेवा का सहज, स्वाभाविक और जीवन्त मार्ग ९७

07 गीता परिवार की उपलब्धियाँ

All Jails in Maharashtra to start Geeta Santha Varga १०२
Two expressions by an inmate Shri Ganesh S ji before and after Geeta Classes १०३
श्रीमद्भगवद्गीता : स्कूली पाठ्यक्रम का हिस्सा १०५
अनहोनी से होनी: वैशाली दीदी की गीता कहानी १०७
रायपुर के कैदी को 700 गीता श्लोक कंठस्थ: वासुदेव देश के पहले बंदी गीता-व्रती १०९
मेगा स्वास्थ्य शिविर में गीता परिवार छत्तीसगढ़ का विशेष प्रदर्शनी ११२

08 कार्यकर्ता शिविर

गीता परिवार ‘तेजस’ दक्षिणांचल कार्यकर्ता शिविर ११५
मध्य प्रदेश गीता परिवार की ऐतिहासिक पहल – “तेजोहम” आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर ११७

09 Bharat ka itihas The sole living legacy of the ancient world

Bharat ka itihas The sole living legacy of the ancient world १२३
The Teacher to the World १२४

10 सनातन धर्म

सनातन धर्म १३०

11 Kids Section

Shree Krishna Alphabets १३३
Ignited minds १३५
श्लोक पझल गेम १३७
Nachiketa: The Boy Who Chose Truth १३९
Aahar १४१
Dharma Detective Quiz: १४३
Unscramble the Daivī Qualities १४५
Mini-Game: Arrange the Ramayana Events १४६
Theta Maze १४८

12 Regional Creative Mosaic

Regional Creative Mosaic १५०

13 गीता भाव गीत

गीता भाव गीत ~डॉ संजय मालपाणी १५५

14 Proud Moments

Proud Moments १५८

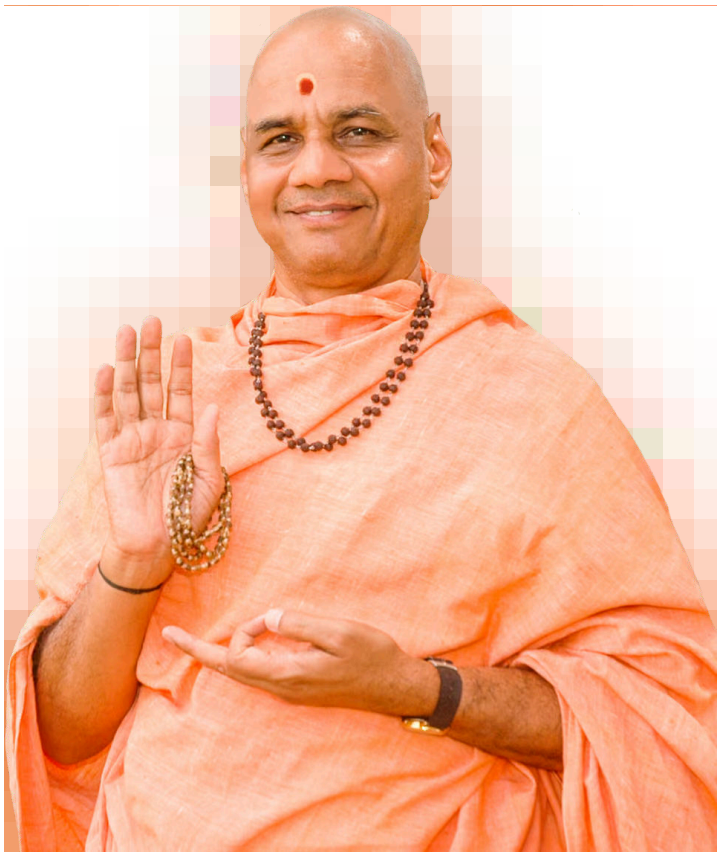
01

अग्रदूतों के मन की बात

संत वाणी : भगवद्गीता : आनंद का विज्ञान पृष्ठ ५

धर्मक्षेत्रे - कुरुक्षेत्रे पृष्ठ ९

संपादकीय: गीता युग का उदय पृष्ठ १२



भगवा वस्त्रधारी परम पूज्य स्वामीजी आशीर्वाद मुद्रा में हाथ उठाए मुस्कराते हुए।

०१ अग्रदूतों के मन की बात

संत वाणी : भगवद्गीता : आनंद का विज्ञान

६ मिनट पठन • २ चित्र

- **परम पूज्य स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरिजी महाराज, संस्थापक**
  अध्यक्ष, गीता परिवार



प. पू. स्वामी गोविन्ददेवगिरि जी महाराज भगवा वस्त्रों में हाथ में रुद्राक्ष माला लिए चलते हुए।

भगवद्गीता के अनुशीलन हेतु इससे उत्कृष्ट और प्रामाणिक विषय अन्य नहीं हो सकता। श्रीमद्भगवद्गीता हमारे समस्त वेदों एवं उपनिषदों का नवनीत और सार-सर्वस्व है। प्रकांड मनीषी पंडित मधुसूदन ओझा जी गीता को स्मृति नहीं, अपितु 'श्रुति' रूप में स्वीकार करते थे। संत ज्ञानेश्वर महाराज ने भी लगभग सात सौ वर्ष पूर्व गीता को श्रुति की ही संज्ञा दी थी।

वेद परमात्मा का निःश्वास हैं "वेदोऽस्य निःश्वसितं वेदाः।" ईश्वरीय श्वास के गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन करना केवल असाधारण प्रज्ञावान आचार्यों का कार्य है; किंतु साक्षात् भगवान के मुखारविंद से निःसृत वाणी का अर्थ ग्रहण करना उसकी तुलना में अधिक सुगम है। चूँकि यह भगवान की जाग्रत अवस्था में प्रकट वाणी है, अतः यह श्रुति-तुल्य ही है।

गीता की विलक्षणता यह है कि इसका प्राकट्य हिमालय की किसी प्रशांत कंदरा, गंगा-तट के सुरम्य आश्रम अथवा किसी देवालय के शांत प्रांगण में नहीं हुआ। यह समरांगण में उच्चरित हुआ महाशास्त्र है। कुरुक्षेत्र के भीषण रणक्षेत्र में, उभय पक्षों की सेनाओं के मध्य, जीवन के ज्वलंत संघर्षों के बीच भगवान योगेश्वर ने अर्जुन को यह अमृतमयी दृष्टि प्रदान की।

जब तक मानव-संसार विद्यमान है, द्वंद्व और संघर्ष कभी समाप्त नहीं होंगे। सतयुग में हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष थे, त्रेता में रावण और कुंभकर्ण हुए, द्वापर में शिशुपाल और दंतवक्त्र आए, और आज कलियुग में यह अंतर्द्वंद्व हम सभी के भीतर व्याप्त है। दैवी और आसुरी संपद् का यह सनातन विभाजन सदैव रहेगा; केवल उनका अनुपात परिवर्तित हो सकता है। सत्त्व, रज और तम तीनों गुणों की यह टकराहट शाश्वत है, और जीवन के इसी महासंग्राम में विजय-श्री प्राप्त करने की अचूक संजीवनी भगवद्गीता है।

सर्वांगीण जीवन और पंचकोश

कुरुक्षेत्र का युद्ध केवल कौरवों और पांडवों का ऐतिहासिक संघर्ष नहीं था, वह वस्तुतः हमारे आंतरिक विकास और अस्तित्व के प्रत्येक तल पर चलने वाले द्वंद्व का प्रतीक है। हमारा व्यक्तित्व केवल बाह्य स्थूल देह तक सीमित नहीं है, यह पंचकोशात्मक है:

- **अन्नमय कोश**
- **प्राणमय कोश**
- **मनोमय कोश**
- **विज्ञानमय कोश**
- **आनंदमय कोश**

वैदिक वांग्मय इन पाँचों स्तरों पर समग्र कल्याण ('स्वस्ति') का विधान करता है। सर्वांगीण स्वस्ति का यथार्थ अभिप्राय इन पाँचों कोशों की संतुलित शुद्धि है।

गीता का सर्वाधिक पावन और आधारभूत शब्द है **"स्वस्थ"**। स्वस्थ होने का अर्थ केवल शारीरिक आरोग्यता नहीं, अपितु 'स्वस्मिन् तिष्ठति इति स्वस्थः' अर्थात् स्वयं की आत्मा में स्थित हो जाना है। यह एक गंभीर साधना है। गीता हमें कहीं अन्यत्र पलायन का उपदेश नहीं देती:

यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम्।
ततस्ततो नियम्यैतद् आत्मन्येव वशं नयेत्॥

श्लोक सुनें
६.२६

जहाँ-जहाँ यह चंचल और अस्थिर मन बहिर्मुखी होकर भटके, वहाँ-वहाँ से इसे संयमित कर आत्मा में ही स्थिर करना है। जब तक इंद्रियाँ केवल बाहर के विषयों को देखती रहेंगी, मानव संताप भोगता रहेगा। समाधान केवल और केवल अंतर्मुखी यात्रा में है।

अंतर्निहित चैतन्य का साक्षात्कार

परमपूज्य रमण महर्षि से जब उनकी प्रिय गीता-उक्ति पूछी गई, तो उन्होंने संपूर्ण गीता की महत्ता स्वीकारते हुए इस श्लोक को उद्धृत किया:

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च॥

श्लोक सुनें
१०.२०

आनंदस्वरूप परमात्मा हमारे अंतःकरण में ही चैतन्य रूप से प्रतिष्ठित हैं। हमारी मूलभूत भूल यह है कि हम उस परम आनंद को बाह्य प्रपंचों में खोजते हुए भटक रहे हैं।

जोधपुर के एक संपन्न सेठ जी का दृष्टांत इस सत्य को पूर्णतः उद्घाटित करता है। सेठ जी ने अपने भवन में अथाह स्वर्ण-निधि संचित कर रखी थी, किंतु देहावसान से पूर्व वे अपनी अगली पीढ़ी को इसका भेद न बता सके। अकूत संपत्ति के होते हुए भी उनके वंशज दारिद्र्य और दैन्य में जीने लगे। एक दिन उनके पिता के वृद्ध मित्र आए और परिवार की दुरावस्था देखकर बोले—"तुम्हारे पिता ने आजीवन जो संचित किया,
वह इसी गृह की भूमि में सुरक्षित रखा है।
अपने ही घर का उत्खनन करो।" जैसे ही उन्होंने भूमि की खुदाई की, उन्हें वह अक्षय निधि प्राप्त हो गई और उनका दारिद्र्य क्षणभर में विलीन हो गया।

यह कथा हम सभी के जीवन का यथार्थ है। परम निधि हमारे ही अंतस्तल में अंतर्निहित है, जिसे हम विस्मृत कर चुके हैं। पूज्य स्वामी हरिहरानन्द जी महाराज जैसे आत्मदर्शी महापुरुष आकर हमें यही स्मरण कराते हैं कि जिसे तुम बाहर खोजकर विलाप कर रहे हो, वह परम धन तो तुम्हारे अपने ही भीतर विद्यमान है। वैकुंठ, गोलोक या अन्यत्र किसी बाह्य लोक में भटकने की आवश्यकता नहीं है; आवश्यकता केवल आत्मसंज्ञान की है। जैसा कि गीता उद्घोष करती है
"आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते।"

मनुष्य की विलक्षणता : आत्म-बुद्धि

इस नश्वर सृष्टि में मानव-जन्म की अद्वितीय महिमा क्या है? दार्शनिक अरस्तू का यह कथन कि 'मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है', पूर्ण सत्य नहीं है। आंशिक बुद्धि पशु-पक्षियों में भी होती है गज, वानर अथवा डॉल्फ़िन भी व्यवहार-कुशल और बुद्धिमान होते हैं। मनुष्य की वास्तविक विशिष्टता उसकी बौद्धिक क्षमता नहीं, अपितु उसकी **'आत्म-बुद्धि'** (आत्म-चेतना) है।

"मैं कौन हूँ? मेरा मूल स्रोत क्या है?
इस चराचर जगत का अधिष्ठान कौन है?" यह जिज्ञासा केवल मनुष्य की चेतना में ही प्रस्फुटित हो सकती है। शीश पर तारों जड़ा अनंत नभोमंडल

और अंतःकरण में विराजमान नैतिक चैतन्य इन दोनों पर विचार करने का सामर्थ्य केवल मानव के पास है। इसी गूढ़ तत्त्व के कारण महाभारत ने सिंहनाद किया है:

गुह्यं ब्रह्म तदिदं ब्रवीमि न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित्।

देवता हों या तीर्थ, संपूर्ण ब्रह्मांडीय संपदा अंततः हमारे अपने चैतन्य में ही समाहित है। जब तक यह चेतना बहिर्मुखी है, तब तक जगत एक अंतहीन भटकाव है; और जैसे ही यह अंतर्मुखी होकर निज-स्वरूप में अवस्थित होती है, जीवन का कण-कण परम आनंद का अनुष्ठान बन जाता है।

भगवद्गीता उसी अंतर्यात्रा का विज्ञान है जो हमें कर्म के कुरुक्षेत्र से उठाकर आत्मा के शांत और शाश्वत आनंद-धाम में प्रतिष्ठित कर देती है।

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2026-01/agrduuton-ke-mn-kii-baat/snt-vaannii-bhgvdgiitaa-aannd-kaa-vijnyaan/



संजय भैया का स्टूडियो में लिया गया मुस्कराता हुआ चित्र।

०१ अग्रदूतों के मन की बात

धर्मक्षेत्रे - कुरुक्षेत्रे

गीता परिवार की स्थापना 1986 में संगमनेर (महाराष्ट्र) में हुयी। उस मंगल क्षण को इस वर्ष चालीस वर्ष पूर्ण हुये। चतुर्दशकपूर्ति के निमित्त इस वर्ष अन्यान्य कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा हैं। इसी शृंखला में कुरुक्षेत्र में एक सहस्र गीता व्रती एकसाथ मुखोद्गत गीता कण्ठनाद करने वाले है।

डॉ. संजय मालपाणी
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, गीता परिवार

५ मिनट पठन · १ चित्र

कुरुक्षेत्र का अर्थ

भगवद्गीता का आरंभ ही 'धर्मक्षेत्रे - कुरुक्षेत्रे' इन शब्दों से होता है। कहते है की यदि संपूर्ण भगवद्गीता का संस्मरण नहीं कर सकते हो तो गीता का पहला श्लोक कंठस्थ करना चाहिए। यदि पुरा श्लोक कंठस्थ करने का सामर्थ्य नहीं हो तो कम से कम ये दो शब्द 'धर्मक्षेत्रे-कुरुक्षेत्रे' स्मरण में रखने चाहिए।

कुरुक्षेत्र को धर्मक्षेत्र बनाने वाले जगद्गुरु भगवान श्रीकृष्ण है। गीता के तेरहवें अध्याय का नाम क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभाग योग है। इस में क्षेत्र का अर्थ शरीर तथा क्षेत्रज्ञ का अर्थ क्षेत्र का ज्ञाता अर्थात शरीर को जानने वाला ऐसा बताया गया है।

शरीर प्रकृति और पुरुष के संयोग से बना है। जिसमे पंच ज्ञानेन्द्रिय, पंच कर्मेन्द्रिय, मन, बुद्धि एवं अहंकार यह सारी प्रकृती की देन हैं। केवल आत्मा हमें पुरुष से अर्थात परमात्मासे प्राप्त होता है। देह याने क्षेत्र की

निर्मिती का यह शास्त्र जानने के पश्चात अब 'कुरु' शब्द को समझते हैं। कुरु का अर्थ है कार्य अर्थात कर्म! अर्थात कुरुक्षेत्र का अर्थ होता है 'कर्म करनेवाला शरीर'!

कर्म के प्रकार

हमारा शरीर निरंतर कार्यमग्न होता है। व्यक्ति का शरीर जब कोई भी कार्य करता है तब मन तथा बुद्धि उस कर्म को पंचेंद्रियों के माध्यम से करवाती हैं।

कर्म के तीन प्रकार गीता में बताये गये है।
कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः।
अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः॥ (4.17)
कर्म विकर्म और अकर्म ऐसे तीन प्रकार के कार्यों का उल्लेख यहाँ हैं।
कर्म विकर्म और अकर्म को सरल शब्दों में समझने का प्रयास करते हैं।

श्लोक सुनें ४.१७

कर्म - जब बुद्धि कहती है यह कर्म करो और वह कार्य करने को मन राजी नहीं होनेपर भी बुद्धि द्वारा वह कार्य करवाया जाता है तब उसे 'कर्म' कहा जा सकता हैं। जैसे कार्यालय में समय पर पहुँचना... कई बार मन आलस्य के कारण ऐसे कार्य को नहीं करना चाहता। परंतु बुद्धि प्रबलता से वह कार्य करवाकर रहती हैं। ऐसे अधिकतर कार्य स्वार्थ मूलक होते हैं। मन मारकर वह कार्य अनिवार्य है इस लिए किये जाते हैं।

विकर्म - अनेक बार मन कहता है की यह कार्य करों। परंतु बुद्धि मना करती हैं। जैसे मधुमेह के रोगी का मन मीठाई खाने को करता हैं। तब बुद्धि कहती है की यह कार्य ठीक नहीं हैं। परंतु बुद्धि की ना सुनकर वह रोगी मिठाई खा लेता है। ऐसे कर्म व्यक्ति को विकृती की ओर ले जाते हैं। इस प्रकार के कर्म विनाश के कारण बनते है। ऐसे कार्य को 'विकर्म' समझना चाहिए।

अकर्म - जब बुद्धि कहती है की यह कार्य करना चाहिए और मन भी उस कार्य में आनंद की अनुभूती करता है ऐसे कुछ कार्य होते हैं। जैसे समाजहित में किसी सामाजिक संस्था का कार्य करते समय बुद्धि और मन दोनों ही संतुष्टी का अनुभव करते हैं। जिस कार्य में स्वार्थ नहीं अपितु परमार्थ हो ऐसे कार्य सहसा इस अकर्म की श्रेणी में आते हैं। मनुष्य ऐसे कार्य बडे ही उत्साह से करता हैं। कर्मफल की अपेक्षा के परे, निस्वार्थ भाव से किये गये ऐसे कार्य को 'अकर्म' कहा जाता है।

विकर्म मनुष्य को अधर्म हेतु प्रवृत्त करता है एवं अकर्म मनुष्य को धर्म की राह दिखाता हैं।

बुद्धि और मन का जुडाव ही योग है

भगवान श्रीकृष्ण अनेक स्थानों पर मन और बुद्धि को साथ जोडकर कर्म करने की बात करते हैं। जैसे -

मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम्। (8.7)

श्लोक सुनें ८.७

मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय। (12.8)

श्लोक सुनें १२.८

मन और बुद्धि को जोडने की विधा को ही योग कहा गया हैं। इस योग शास्त्र का नाम ही भगवद्गीता है।

जब यह योग जीवन में उतरता है तब हम विकर्म से निवृत्त होकर अकर्म हेतु प्रवृत्त होने लगते है। अर्थात कुरुक्षेत्र (कार्य करने वाला शरीर) धर्मक्षेत्र (अकर्म करने वाला शरीर) बनने लगता है। मानव जीवन को सफल बनाने की यह एकमात्र विधा है।

युद्धारंभ से पहले शंखनाद

महाभारत का युद्ध कुरुक्षेत्र पर हुआ। इस युद्ध से पहले सभी वीर योद्धाओं ने अपने अपने शंख बजाएं।

शङ्खान् दध्मुः पृथक् पृथक्॥(1.18)

शंख का आकार हृदय जैसा होता है। और हृदय में परमात्मा का अंश आत्मा बसता हैं।

श्लोक सुनें १.१८

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।(18.61)

युद्ध की स्थिति में अपने अंतरात्मा की आवाज अर्थात भगवान की बात जो सुनता है वहीं जीवन में विजयी होता है। शंखनाद इसी का प्रतिक है।

श्लोक सुनें १८.६१

गीता परिवार के चतुर्दशकपूर्ति निमित्त कुरुक्षेत्र में जो **'सहस्र गीता कण्ठनाद'** कार्यक्रम आयोजित हो रहा है वहाँ एक हजार गीता साधक संपूर्ण गीता कण्ठस्थ कर एक स्वर में गीता गान करने वाले हैं। कुरुक्षेत्र की पावन धरा पर पूज्य स्वामीजी की उपस्थिति में सहस्र कण्ठों से गुँजने वाले स्वर्गीय स्वर आत्मबोध का दीप प्रज्ज्वलित कर इन गीता व्रतियों का जीवन निश्चित ही धर्ममय करेंगे इसमें संदेह नहीं। कुरुक्षेत्र को धर्मक्षेत्र बनाने वाला यह समारोह हमारे आत्मोद्धार का मार्ग प्रशस्त करें इसी शुभकामना के साथ कुरुक्षेत्र में आप का स्वागत हैं.....

→ संपादकीय: गीता युग का उदय - एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण की ४० वर्षीय यात्रा

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/agrduuton-ke-mn-kii-baat/dhrmkssetre-kurukssetre/



संपादक आशु गोयल जी का मुस्कराता हुआ चित्र।

०१ अग्रदूतों के मन की बात

संपादकीय: गीता युग का उदय

डॉ.आशू गोयल
प्रोग्राम डायरेक्टर, लर्नगीता, अन्तरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष,गीता परिवार

४ मिनट पठन · १ चित्र

संगमनेर की पावन धरा से प्रस्फुटित हुई एक लघु सरिता आज 'ज्ञान-गंगा' बनकर विश्व पटल पर प्रवाहित हो रही है। वर्ष 1986 में परम पूज्य स्वामी गोविन्द देव गिरि जी महाराज एवं श्रद्धेय स्वर्गीय ओंकारनाथ जी मालपाणी के संकल्प से रोपित 'गीता परिवार' का यह पौधा आज अपने 40 वर्षों की गौरवशाली यात्रा पूर्ण कर एक विशाल वटवृक्ष बन चुका है। यह केवल चार दशकों की कालगणना नहीं है, बल्कि एक सांस्कृतिक शुचिता और आध्यात्मिक जिजीविषा की अनवरत साधना का उत्सव है।

भारत की सनातन संस्कृति केवल रीति-रिवाजों का संकलन नहीं, अपितु जीवन-मूल्यों का एक जीवंत दर्शन है। हमारे इतिहास की धमनियों में त्याग, सेवा और धर्मनिष्ठा का रक्त प्रवाहित होता रहा है। किंतु, आधुनिकता की अंधी दौड़ और भौतिकता के कोलाहल में कहीं न कहीं हम अपनी जड़ों से विस्मृत होते गए। सुख की मृगतृष्णा में भटकती मानवता के लिए आज 'गीता परिवार' एक सांस्कृतिक ध्रुवतारे के समान पथ-प्रदर्शक बनकर उभरा है।

"राष्ट्र का निर्माण ईंट-पत्थरों से नहीं, बल्कि नागरिकों के चरित्र से होता है।"

इसी मूलमंत्र को केंद्र में रखकर गीता परिवार के हजारों निष्ठावान स्वयंसेवक 'बाल-संस्कार' के महत कार्य में संलग्न हैं। वे भली-भांति जानते हैं कि आज के सुसंस्कृत बालक ही कल के सशक्त भारत की नींव होंगे। खेल, मनोरंजन और रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से नई पीढ़ी के मानस पटल पर नैतिक मूल्यों का बीजारोपण करना एक भगीरथ प्रयास है, जो देश के कोने-कोने में 'सम्यक् आकार' ले रहा है।

संकट में सृजन: डिजिटल अध्यात्म का उदय

वर्ष 2020 का वह कालखंड जब संपूर्ण विश्व कोरोना की विभीषिका से स्तब्ध था, तब गीता परिवार ने आपदा को अवसर में बदलते हुए एक नूतन दिशा की ओर कदम बढ़ाए। वह क्षण किसी सघन वन की नीरवता में गूँजती कृष्ण की बाँसुरी के समान था। ऑनलाइन माध्यम से गीता सिखाने का निर्णय एक साहसिक प्रयोग था। संशय था कि क्या डिजिटल पटल पर संस्कृत की क्लिष्टता और साधकों की एकाग्रता का सामंजस्य हो पाएगा? किंतु, जिज्ञासा की लौ ऐसी प्रज्वलित हुई कि दो हजार से शुरू हुई यह यात्रा आज 14 लाख से अधिक साधकों के विशाल परिवार में परिवर्तित हो चुकी है।

परम पूज्य गुरुदेव का पावन उद्घोष— “गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें” —आज एक वैश्विक जन-आंदोलन बन चुका है। डॉ. आशू गोयल जी के नेतृत्व में तकनीक और अध्यात्म का जो मणिकांचन योग बना, उसने व्हाट्सएप और ज़ूम जैसे माध्यमों को 'स्वाध्याय की पाठशाला' बना दिया।

विस्तार और प्रभाव

भाषाई सेतु: तीन भाषाओं से आरंभ होकर आज यह अभियान अनेक क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में अनुदित हो चुका है।

अनुशासित पाठ्यक्रम: चार स्तरीय व्यवस्थित पाठ्यक्रम, व्याकरण कक्षाएं और कंठस्थीकरण की योजना ने गीता सीखने को सुगम और वैज्ञानिक बना दिया है।

मानवीय दृष्टिकोण: जेल के बंदियों तक गीता का प्रकाश पहुँचाना समाज के अंतिम व्यक्ति के पुनरुद्धार की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। यह सिद्ध करता है कि गीता केवल सन्यासियों के लिए नहीं, बल्कि संघर्षरत हर व्यक्ति के लिए संजीवनी है।

आज जब विश्व वैचारिक द्वंद्व और अस्थिरता से जूझ रहा है, तब श्रीमद्भगवद्गीता का निष्काम कर्मयोग ही स्थायी शांति का मार्ग है। आलोचक भले ही इसे कलियुग की संज्ञा दें, किंतु गीता परिवार के पुरुषार्थ ने इसे 'गीता युग' में परिवर्तित कर दिया है—एक ऐसा युग जहाँ ज्ञान, भक्ति और कर्म का त्रिवेणी संगम हो रहा है।

“हर घर गीता, हर कर गीता” केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक क्रांति का शंखनाद है। यह संगठन की शक्ति नहीं, बल्कि समर्पण की पराकाष्ठा है। यहाँ जुड़ने वाला हर साधक मात्र एक 'यूजर' नहीं, बल्कि इस आध्यात्मिक चेतना का अभिन्न अंग है।

४० वर्षों की इस यात्रा का सिंहावलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि गीता परिवार अब एक संस्था मात्र नहीं, बल्कि एक जागृत चेतना है, जो 'वसुधैव कुटुंबकम्' के भाव को चरितार्थ कर रही है।

यह नवजागरण का उदय है। यह गीता युग है। और इस मशाल को थामे रखना हम सबका साझा उत्तरदायित्व है।

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2026-01/agrduuton-ke-mn-kii-baat/snpaadkiiy-giitaa-yug-kaa-udy/

02

अपूर्व सद्गुरु जीवन दर्शन

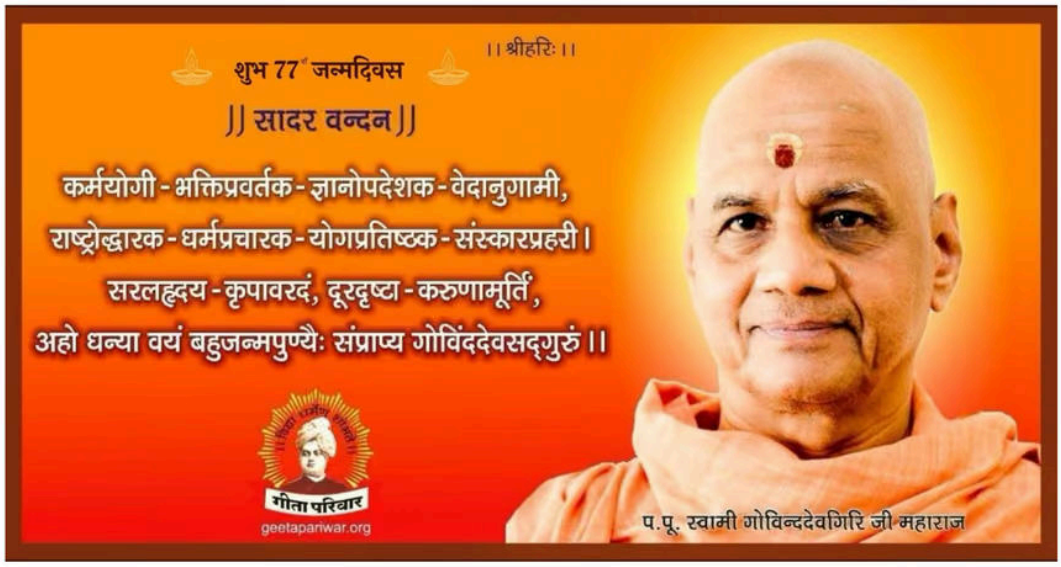


श्वेत साड़ी में वंदना काकीजी का स्नेहपूर्ण मुस्कराता हुआ चित्र।

०२ अपूर्व सद्गुरु जीवन दर्शन

अपूर्व सद्गुरु जीवन दर्शन

सौ .वंदना जी वर्णेकर १२ मिनट पठन • ४ चित्र



प. पू. स्वामी गोविन्ददेवगिरि जी महाराज के 77वें जन्मदिवस पर संस्कृत श्लोक सहित सादर वन्दन का बैनर।

वेद राष्ट्र गीता सेवा में अविरत चलते जिनके चरण।

आओ चिन्तन से हम उनके, धन्य करे जीवन प्रतिक्षण।।

जिनकी अमृतवाणी से अविरत ज्ञानगंगा प्रवाहित होती है, जिनकी दृष्टि चराचर मे भगवद् दर्शन करती है, ईश्वरी प्रेरणा से जिनके जीवन का प्रत्येक क्षण वेदकार्य, राष्ट्रकार्य, राम काज, गीता प्रचार और सनातन धर्मरक्षा के लिए संकल्पित है, ऐसे हमारे **गीता परिवार के संस्थापक अध्यक्ष, सद्गुरु पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरिजी महाराज (षट्तिला एकादशी) २५ जानेवारी २०२६ को अपने प्राकट्य के ७७ वर्ष पूर्ण कर रहे है।** ऐसे पावन पर्व पर उनके अलौकिक जीवन चिन्तन का ये प्रयास मात्र है। वास्तविक सन्तों के जीवन की गहराई शब्दों मे अभिव्यक्त नही की जा सकती, किन्तु उनके जीवन तीर्थ से हम अपने जीवन को अवश्य कृतार्थ कर सकते है।



बहु आयामी प्रज्ञा, सर्वंकष अथांग ज्ञान, प्रखर राष्ट्रभक्ति, गुरु के प्रति असीम निष्ठा और समर्पण, तेजस्वी वाग्मिता, विचारों की सुस्पष्टता, वाणी की भक्तिरसमय मधुरता, ऐसे अनेकानेक दिव्य गुणों से दीप्तिमान यतीश्वर याने श्रद्धेय राष्ट्रसंत स्वामी गोविन्ददेव गिरिजी महाराज !

पूज्य स्वामी जी का जन्म महाराष्ट्र के अहल्यानगर (पूर्वकाल का अहमदनगर) के बेलापूर नामक छोटे गॉव में हुआ।पूज्य श्री मदनगोपाल जी व्यास एवं सौ. गुलाब देवी ये छोटे किशोर के तप:पूत माता पिता। पाठशाला में जाने के पूर्व ही बाल्यकाल से भगवद् भक्ति और सद्गुणों की शिक्षा उन्हें घर में ही प्राप्त हुई, क्योंकि मातृ एवं पितृ कुल की ओर से सात-आठ पीढियों से श्रीमद् भागवत का कथा ज्ञान यज्ञ करने की परंपरा रही। अत्यंत कुशाग्र, निश्चयात्मिका बुद्धि लेकर के आए छोटे किशोर ने बालकाल में ही श्रीमद्भागवत, भगवद् गीता, श्री वाल्मिकि रामायण, श्री दासबोध आदि अनेक ग्रंथ केवल कंठस्थ ही नही किए अपितु आयु के पंधरावे वर्ष से ही अपने मंत्रमयी वाणी में कथा ज्ञान यज्ञ प्रारंभ किए।

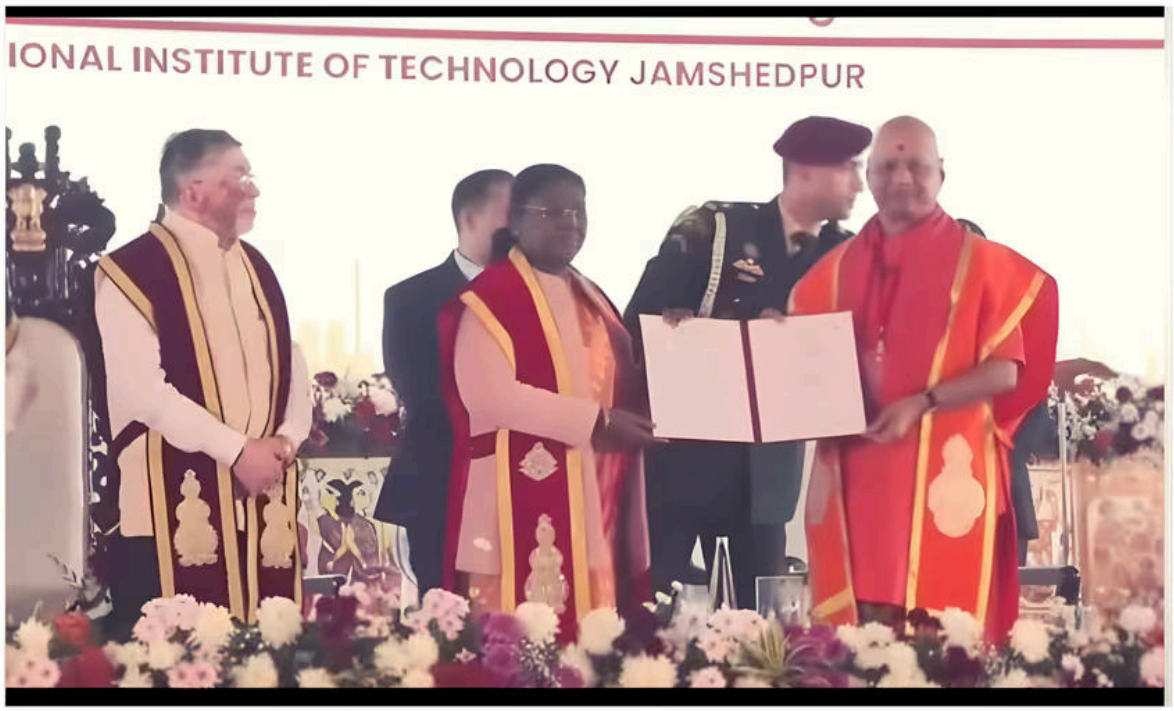
उनकी पूज्य भगिनी शांताक्का ने उनके बाल्यकाल का एक प्रसङ्ग बताया है। रात रात भर बाल किशोर ध्यान मे लीन रहते थे. ये बात ऐसे ध्यान मे आई कि रात को सोने के पूर्व वे मॉ से चाय बनवाकर पिते थे। उनकी माताश्री को बडा आश्चर्य होता था। एक दिन कौतुहलवश मॉ ने मच्छरदानी उपर उठाई और अन्दर झांककर देखा तो क्या आश्चर्य उनका नन्हा बालक ध्यान लगाए बैठा है और सामने श्रीमद् भागवत और गीता रखी हुई है। वे रोज इस तरह घंटों ध्यान में लीन हो जाते। **बाल्यकाल से ही ईश्वर से अपार प्रेम के साथ अनुशासन एवं कठोर नियम पालन ये उनके अंगभूत गुण थे**। **प्रतिदिन व्यायाम, जप और स्वाध्याय** के रूप मे महापुरुषों के वचन पढना ये उनकी दिनचर्या का अविभाज्य अंग था। संत श्रेष्ठ जगद्गुरु गुलाबराव महाराज के उपदेश में जीवन उन्नयन के लिए ये ही तीन बातें आवश्यक बताई है जो बचपन से ही उनके जीवन मे अनुशासित थी।

महाविद्यालयीन शिक्षा के लिए पूज्य स्वामी जी ने ठाणे मे स्वाध्याय प्रणेता पूज्य पांडुरंग शास्त्री आठवले की तत्त्वज्ञान विद्यापीठ में प्रवेश लिया । अत्यंत मेधावी छात्र होने के कारण उन्हे मेडिसिन मे भी प्रवेश मिल रहा था, किन्तु अन्तर्मन की आवाज उन्हे तत्त्वज्ञान विद्यापीठ तक ले गई और वही पर पूज्य पांडुरंग शास्त्री (दादा) के अमोघ तेजस्वी विचारों का गहरा प्रभाव पूज्य स्वामी जी के व्यक्तिमत्व पर हुआ। अब आगे काशी की पुकार उन्हे बेचैन कर रही थी। वहॉ जाकर दर्शनशास्त्र पढने की तीव्र इच्छा उनके मन मे निरंतर होने लगी। उनकी तीव्र इच्छा के फलस्वरूप दादा ने अनुमति के साथ **काशी के श्रेष्ठ विद्वान पूज्य श्री विश्वनाथ वामन देव** के लिए परिचय पत्र भी दिया।

गीता परिवार की स्वरलंकार, गीताव्रती डॉ. सौ विजयाताई गोडबोले श्री विश्वनाथ जी की सुपुत्री है। पू. स्वामी जी का निवास काशी मे पॉच वर्ष उनके ही परिवार में रहा। स्वामी जी के काशी निवास के अनेक प्रसङ्ग विजयाताई ने स्वयं लिखकर बताये है। स्वामी जी की पितृ चरणों में अपार श्रद्धा थी और उनकी मातृभक्ति अतुलनीय थी। **उनकी स्वयं की माता सौ. गुलाबदेवी, सौ विमल देव (विजयाताई की माता) और संगमनेर स्थित मनोरमादेवी गुणे इन तीन मातृशक्ति का आशीर्वाद और स्नेह उन्हें प्राप्त हुआ।**

काशी के वास्तव्य में उन्हे अनेक सन्तों का पावन सान्निध्य, प्रवचन श्रवण का लाभ हुआ। ब्रह्मलीन पूज्य करपात्री जी महाराज, पूज्य संत श्री डोंगरे महाराज, आदि अनेक संत वचनों का गहरा प्रभाव स्वामी जी के अंतःकरण पर हुआ। एक एक क्षण का सदुपयोग, स्वावलंबन, घर के बर्तन मांजने जैसे कार्य में भी सहयोग, स्वच्छता, अनुशासनप्रियता आदि अनेक गुणों को विजयाताई ने अधोरेखित किया है। प्रतिदिन गंगास्नान, श्री काशी विश्वनाथ और अन्नपूर्णा माता के दर्शन किए बिना भोजन नही करना ये उनका कठोर नियम था। विविध धर्मग्रंथ, महानुभवों की जीवनी, पाश्चात्य फिलॉसॉफी, जे. कृष्णमूर्ती का तत्वज्ञान आदि उत्तमोत्तम पुस्तकें वे रात- रात पढते रहते थे। श्रीरामकृष्ण वचनामृत ये उनका परम प्रिय ग्रंथ। महाविद्यालयीन परीक्षा के समय ये सारे ग्रंथ उन्हे छुपा के रखने पडते थे,ताकि परीक्षा के लिए अध्ययन संभव हो।

वाराणसी के संस्कृत विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र की आचार्य उपाधि प्राप्त करने के पश्चात उनके जीवन का वह आध्यात्मिक मोड आया जब उन्हे **कांची कामकोटि पीठ के शङ्कराचार्य ब्रह्मलीन पूज्य स्वामी जयेन्द्र सरस्वती महाराज का अनुग्रह प्राप्त** हुआ।तत्पश्चात कुरवपूर में श्री दत्तात्रय भगवान के दर्शन के लिए जब वे गए, उस समय प्रत्यक्ष श्री दत्त प्रभु का उन्हे दृष्टान्त हुआ और सुवर्णाक्षरों के रूप में ' महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान' ये दिव्य अक्षर उनके चक्षुओं के समक्ष प्रकट हुए। **श्री दत्तप्रभू की वेद- संरक्षण की आज्ञा से अभिभूत होकर स्वामीजी ने सन १९९०में महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान की स्थापना की**।



उस समय यह अत्यंत चुनौती पूर्ण कार्य था। उत्तर भारत से वेद लुप्तप्राय से हुए थे। भगवान वेद ये सृष्टि का संविधान है। संपूर्ण विश्व के कल्याण के अनेक रहस्य वेदमंत्रों में समाहित है। वेदों के रक्षण में ही सनातन धर्म, संस्कृति, राष्ट्र और अंततोगत्त्वा विश्व का कल्याण है। "वेदा: सर्व हितार्थाय" इस भावना से वेद संरक्षण का कठिणतम कार्य आपने समर्थ कंधो पर लेकर के पू. स्वामी जी ने आलंदी मे प्रतिष्ठान के प्रथम वेद विद्यालय (श्री निजानंद वेद विद्यालय) की स्थापना की।श्री ज्ञानेश्वर महाराज की कृपा से देखते देखते ये कार्य संपूर्ण भारत में फैलने लगा। आज प्रतिष्ठान के जम्मू से लेकर के मणिपूर तक **४८ वेद विद्यालय** अत्यंत आकर्षक वास्तुओं में प्रतिष्ठित है, जहॉ से आज तक २००० से उपर वैदिक पंडित भारत माता की सेवा मे समर्पित हुए है। वर्तमान में हजारो वैदिक छात्र गुरुकुल पद्धति से वेदाध्ययन कर रहे है। इन वेद विद्यालयों की विशेषता ये है, कि यहॉ वेदों के साथ लौकिक विषयों का (संगणक, गणित, अंग्रेजी आदि) ज्ञान भी छात्रों को दिया जाता है। **वेदों के उच्च अध्ययन एवं संशोधन के लिए आलंदी में प्रतिष्ठान निर्मित ' वेदश्री तपोवन 'ये मानो इन वेद मंदिरों का सुवर्णकलश है।** वेद संहिता मे पारंगत मेधावी वेदमूर्ति यहॉपर वेदों पर संशोधन(research) का कार्य कर रहे हैं। पूज्य स्वामी जी को प्राप्त संपूर्ण धन दक्षिणा प्रतिष्ठान तथा ज्ञानेश्वर गुरुकुल के इन्ही धर्म सेवा कार्य मे समर्पित होती है।

वेद सेवा के साथ साथ अविश्रांत राम कार्य करने वाले स्वामी जी के व्यक्तित्व पर स्वामी विवेकानंद, रामदास स्वामी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्रद्धेय गोळवलकर गुरुजी, विश्व हिंदु परिषद के श्रद्धेय अशोकजी सिंघल आदि महानुभावों के विचारों का भी विलक्षण प्रभाव है। श्री अशोक जी सिंघल की अनुज्ञा से **वर्ष २००६ में स्वामी जी ने प्रात: स्मरणीय स्वामी सत्यमित्रानंद गिरिजी महाराज से संन्यास दीक्षा ग्रहण की।**

श्रीमद् भगवद्गीता के परम अनुरागी स्वामी जी ने, गीता प्रसार, प्रचार और विशेषत्त्व से बालकों में गीता संक्रमित करने हेतु **सन १९८७ में संगमनेर मे गीता परिवार की स्थापना** की। २०२६ में गीता परिवार चतुर्दश पूर्ति मना रहा है। आज १९८७ में बोए बीज का मानो वटवृक्ष होकर, online **learngeeta.com** के माध्यम से **१८० से उपर देशों के १३ लक्ष गीता साधक गीता के अध्याय शुद्ध उच्चारण के साथ सिख चुके हैं।१० हजार के उपर कार्यकर्ता इस कार्य में अपनी सेवा दे रहे हैं।**

पू. स्वामी जी का गीता चिन्तन अभूतपूर्व है। गीता की परिभाषा करते हुए वे कहते है गीता संपूर्ण जीवन का प्रबंधन शास्त्र है। “गीता याने ज्ञानाधिष्ठित सत्कर्मशील दिव्य भक्तियोग” । ये साक्षात प्रभू की मंत्रमयी वाणी है। उसका चिन्तन भगवान श्रीकृष्ण और नरोत्तम अर्जुन के जीवन के आलोक में, महाभारत की पार्श्वभूमि ध्यान मे रखते हुए ही करना चाहिए। कृष्ण के मन की गीता समझना यही गीतार्थ जानने की सही दिशा है। गीता परिवार के कार्यकर्ताओं को संदेश देते हुए वें कहते है–

मधुर मधुर है गीता गोरस आओ लूटे मिलकर हम

गाए गीता रस भी पीये, जिये गीतामय हो हम।

घरघर गीता हर कर गीता गीता मन में वचनों मे

जागते सोते गीता माता गीता ही हो सपने में।।

आज गीता परिवार के हजारो कार्यकर्ता इस गीता यज्ञ में निस्वार्थ सेवा देकर पूज्य स्वामी जी की इस आज्ञा का पालन कर रहे है।

अनुग्रहित शिष्यों को ज्ञानदान हेतु पू. स्वामीजी ने सन २००० में ज्ञानेश्वर गुरुकुल की स्थापना की। गुरुकुल का अत्यंत सुंदर उपक्रम याने प्रतिवर्ष हृषिकेश में गंगामैया के पावन तट पर गीता साधना शिविर का आयोजन। गत पचीस वर्ष से स्वामी जी के प्रासादिक वाणी से गीता चिंतन का अद्भुत पाथेय प्राप्त कर साधक धन्य हो जाते है। इस वर्ष से स्वामी जी ने युवकों के लिए क्रम बदल कर 'साधना क्रम दीपिका ' के रूप मे गीता का अभूतपूर्व अनोखा चिंतन प्रारंभ किया है, जिससे युवाओं के लिए जीवन उन्नयन के सूत्र प्राप्त हो सके।

समन्वय महर्षि प्रज्ञाचक्षु जगद्गुरु श्री गुलाबराव महाराज, प. पू. वासुदेवानंद सरस्वती महाराज, और ज्ञानेश्वर माऊली के चरणाश्रित स्वामीजी में सभी संप्रदायों में समन्वय करने की अलौकिक दिव्य शक्ति है। इस कारण सन २०२० में उनकी श्रीराम मंदिर तीर्थक्षेत्र आयोध्या न्यास में कोषाध्यक्ष के रूप मे नियुक्ति हुई और उनके जीवन मे अध्यात्मिक कार्य एवं राष्ट्र कार्य का अद्वितीय संगम हुआ।

राम कार्य के लिए अविरत कार्यरत श्रीचरण निधि संकलन के लिए कामगार बस्ती से लेकर के करोडपतियों के प्रसादों तक घूमते रहे। **२२ जानेवारी २०२४ को वह सुवर्णक्षण** आया जब ५०० वर्ष के संघर्ष और ३ लक्ष लोगों के जीवन बलिदान के पश्चात **रामलला उस दिव्य मंदिर के गर्भगृह मे विराजित हुए**। प्राणप्रतिष्ठा के वह दिव्य क्षण सभी के अंतरंग पर अंकित हुए जब स्वामी जी ने **माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी के ११ दिन के उपोषण का समापन उन्हे स्वयं मातृत्व के भाव से तीर्थ पिलाकर किया।**

अपने तेजस्वी वक्तृत्व मे स्वामीजी ने, प्रधानमंत्री मा. मोदीजी को प्रत्यक्ष जगदंबा माता ने हिमालय से सनातन धर्म की रक्षा करने के लिए भेजा है,यह सत्य विश्व व्यासपीठ से निर्भिकता से कहा कथा छत्रपति शिवाजी महाराज के सारे गुण किस प्रकार भारत के इस प्रधानमंत्री मे एकाकार है यह भावपूर्ण शैली में प्रतिपादित करते हुए सारे विश्व को मंत्रमुग्ध किया।

राम मंदिर तो निर्माण हुआ लेकिन राष्ट्र मंदिर के निर्माण तक रुकना नही है इसलिए धार्मिक व्यासपीठ से **छत्रपति शिवाजी महाराज की कथा का आरंभ स्वामी जी ने किया**। राष्ट्र मंदिर का निर्माण शक्तिसंपन्न, सक्रिय, सावध, सज्जनों के संघटन से ही संभव होगा जिसके बीज शिवकथा में निहित है। उनकी अमृतमय वाणी अब प्रखर राष्ट्रभक्ति से तेजोमय हो रही है।

गत दो वर्षों में बर्लिन, इंडोनेशिया, दुबई में आयोजित **जागतिक धर्म परिषदों में भारत का प्रतिनिधित्व** करते हुए उन्होंने सनातन धर्म की ध्वज पताका ऊँची लहराई। उनके ये ओजस्वी भाषण स्वामी विवेकानंद जी के शिकागो के भाषण की याद दिलाते है।

दि. २९ दिसंबर २०२५ को हम सब के लिए अत्यंत गौरवान्वित करनेवाला वह क्षण आया, जब भारत की महामहिम राष्ट्रपति माननीय द्रौपदी मुर्मु दी के कर-कमलों से, राष्ट्रीय प्रौद्योगिक संस्थान जमशेदपुर मे पूज्य स्वामी जी को डी. लिट उपाधि से सन्मानित किया। यह उपाधि केवल विद्या का अलंकरण नही, बल्कि सनातन धर्म की ज्योति है, जो युगों - युगों तक साधना, सेवा और समर्पण का मार्ग प्रकाशित करती रहेगी।

'देश से है प्यार यदि तो हर पल ये कहना चाहिए

मै रहूं या ना रहूं भारत ये रहना चाहिए--

ये उनका आज परम गीत है।

'My nation first, My mission next, Myself never

'ये उनका ब्रीद वाक्य है,

एवं

'Day by day every way I shall become better and better'

ये उनका युवाओं के लिए संदेश है।

राष्ट्रकार्य को दिशा देते हुए, प्रचलित २०२६ वर्ष के आरंभ में, कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन करने हेतु, **परंपरा बोध, पर्यावरण रक्षण, स्वयं की सुरक्षा, समरसता का भाव, इन चार स्तरों पर कार्य करने का आह्वान स्वामीजी ने किया है।** आईए, हम मिलकर इस पर अग्रेसर होने का निश्चय करें।

ज्ञानयोग, भक्ति योग,कर्मयोग और ध्यानयोग का अद्भुत संगम जिनके व्यक्तित्व एवं आचरण मे संपूर्ण प्रतिबिंबित है ऐसे सद्गुरु पू. स्वामी जी के चरणों मे नतमस्तक होते हुए उनके वेदकार्य, राष्ट्र मंदिर निर्माण कार्य, सनातन धर्म प्रसार कार्य की परिपूर्ण सिद्धता के लिए उन्हे दीर्घायुरारोग्य प्राप्त हो यह प्रार्थना श्री ज्ञानेश्वर महाराज के चरणों मे अर्पित हूं तथा इस पावन पर्व पर प. पू. गुरुदेव से हम सब के लिए आशीष मांगती हूं

हे गुरुदेव दो आशीष हमको,शुद्ध हो गीता उच्चारण

गीता मंथन गीता चिन्तन जीवन गीता आराधन

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/apuurv-sdguru-jiivn-drshn/apuurv-sdguru-jiivn-drshn/

03

गीता परिवार : चार दशकों की संस्कार-साधना से विश्वचेतना तक

गीता परिवार : चार दशकों की संस्कार-साधना से विश्वचेतना तक पृष्ठ २२

नागपुर में 52,559 बालकों द्वारा सामूहिक गीता पाठ से विश्व कीर्तिमान! पृष्ठ २७

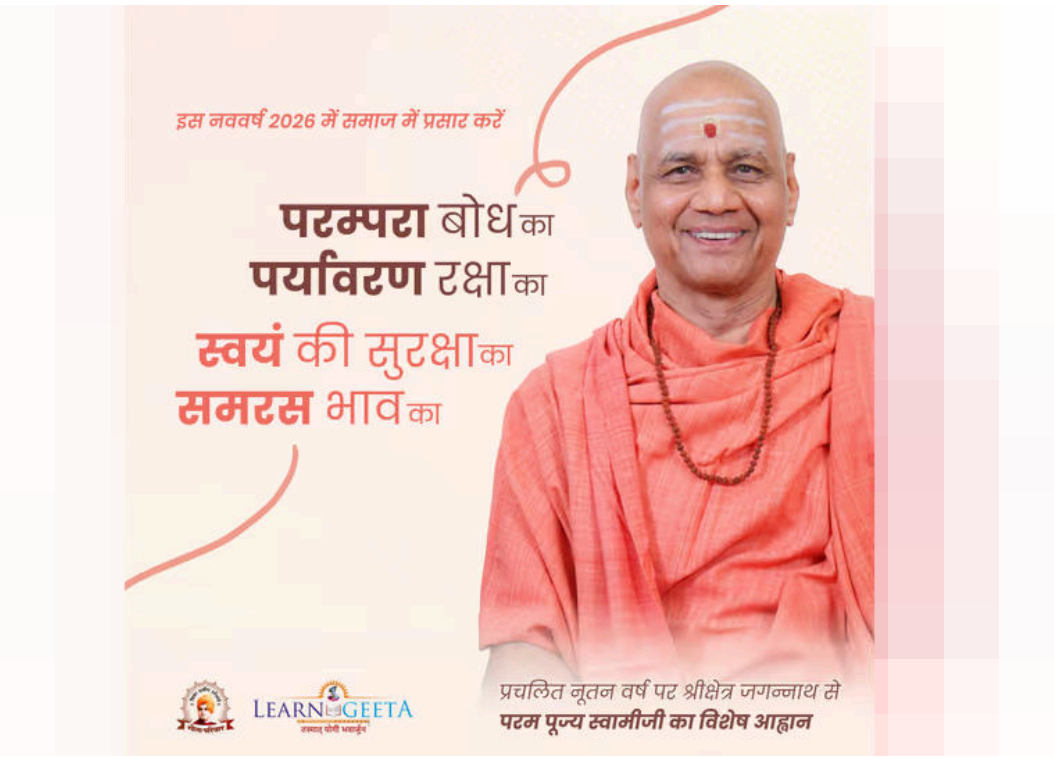
The Gītā and the Corporate World पृष्ठ ३२

स्वामी विवेकानन्द जी - आज के युवाओं के शाश्वत सारथी पृष्ठ ३५

गीता परिवार : चार दशकों की संस्कार-साधना से विश्वचेतना तक

गीता परिवार की यात्रा केवल एक संस्था की यात्रा नहीं, बल्कि संस्कार, साधना और सेवा से गुंथे एक जीवंत परिवार की प्रेरक गाथा है। इसकी जड़ें उस महान संकल्प में हैं, जहाँ बाल संस्कार के माध्यम से राष्ट्र निर्माण का स्वप्न देखा गया—और उसे जीकर दिखाया गया।

९ मिनट पठन · २ चित्र



नववर्ष 2026 पर श्रीक्षेत्र जगन्नाथ से परम पूज्य स्वामीजी का विशेष आह्वान दर्शाता पोस्टर।



गीता परिवार के चतुर्दशकपूर्ति महोत्सव (1986-2025) का आधिकारिक प्रतीक चिह्न।

स्थापना से विस्तार तक

पाण्डव पंचमी—मान्यता है कि इसी दिन पांचों पांडवों ने माता कुंती के साथ व्रत और शिव-पूजन किया था। वनवास, कष्ट, अनिश्चितता—सब कुछ था, पर धर्म नहीं छोड़ा। यह पर्व उसी दृढ़ता की स्मृति है। पांडव पंचमी हमें याद दिलाती है कि जीवन जीतने के लिए ये पाँच शक्तियाँ चाहिए— सत्य, संयम, साहस, सेवा, विवेक —उसी दिन, सन् 1986 में संगमनेर की पुण्यभूमि पर गीता परिवार की स्थापना हुई। पूज्य आचार्य श्री किशोर जी व्यास एवं स्वर्गीय श्री ओंकारनाथ जी मालपाणी द्वारा बोया गया यह बीज, आज पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी महाराज के स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन में एक विश्वव्यापी वटवृक्ष बन चुका है।

प्रारम्भिक वर्षों में संगमनेर और महाराष्ट्र के कुछ नगरों से आरम्भ हुई बाल संस्कार शिविरों की यह धारा शीघ्र ही सम्पूर्ण भारत में प्रवाहित हो गई। सातारा, सोलापुर, पुणे, मुंबई से लेकर कोलकाता, सूरत, कोटा, लखनऊ और हैदराबाद तक संस्कारों का यह प्रकाश निरंतर फैलता गया।

पद नहीं, परंपरा; प्रतिष्ठा नहीं, परिश्रम

गीता परिवार की पहचान सेवा और समर्पण से बनी है। प्रारम्भिक दो दशकों तक यहाँ कोई पद व्यवस्था नहीं थी—केवल कार्य, त्याग और साधना थी। सम्पर्क प्रमुख के रूप में आदरणीय डॉ. सञ्जय मालपाणी ने अनेक नवाचारी प्रयोगों द्वारा कार्य को नई दिशा दी। यह संस्था जड़ों का सिंचन करती है—जहाँ नाम और प्रतिष्ठा का नहीं, बल्कि सेवा भाव का ही मूल्य है।

गाँवों से महानगरों तक, विद्यालयों से खुले मैदानों तक—योग, सूर्य नमस्कार, प्रज्ञा संवर्धन, गीता प्रशिक्षण, साहस संस्कार और नाट्य संस्कार जैसे विविध उपक्रमों के माध्यम से गीता परिवार ने समाज में संस्कारों का प्रकाश फैलाया।

गीता प्रचार के अभिनव आयाम

स्वर्णा काकी जी का मधुर स्वर : श्रीमद्भगवद्गीता के बारहवें एवं पन्द्रहवें अध्यायों का ध्वनिमुद्रण कर महाराष्ट्र के विद्यालयों में लगभग चालीस सहस्र बालकों को गीता का संस्कार प्रदान किया गया।

नाट्य संस्कार प्रकल्प : आदरणीय गिरीश जी डागा, क्षितिज महापात्र एवं सोनाली महापात्र के सहयोग से महानाट्यों की सशक्त परंपरा विकसित हुई। ध्रुव, प्रह्लाद, अभिमन्यु, छत्रपति शिवाजी महाराज और स्वामी विवेकानन्द जैसे आदर्श चरित्रों पर चालीस से अधिक महानाट्यों का मंचन हुआ, जहाँ मंच मनोरंजन नहीं, चरित्र निर्माण का साधन बना।

लर्न गीता उपक्रम : कोरोना काल में, जब संसार ठहर-सा गया था, तब गीता परिवार ने ऑनलाइन माध्यम से गीता का वैश्विक प्रसार किया। आज यह उपक्रम 183 देशों में 14 भाषाओं में लगभग 14 लाख साधकों को गीता से जोड़ चुका है।

राष्ट्रीय और वैश्विक विस्तार : भगवान श्रीजगन्नाथ जी की भूमि उड़ीसा में, भुवनेश्वर के पूर्व जिलाधिकारी आदरणीय श्री प्रमोद भैया के प्रयासों से सरकारी सहयोग द्वारा विद्यालयों में गीता पाठ आरम्भ हुआ। गीता परिवार की पुस्तकों का उड़िया भाषा में अनुवाद कर वहाँ एक सशक्त संगठन की स्थापना की गई। इस प्रकार गीता परिवार का रथ भारत की सीमाओं को पार कर विश्व के कोने-कोने तक पहुँचा।

चालीस वर्षों का उत्सव

सन् 2025 की पाण्डव पंचमी पर गीता परिवार ने अपने चालीसवें वर्ष में प्रवेश किया। पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी महाराज की पावन उपस्थिति में दीप प्रज्वलन एवं प्रार्थना के साथ उत्सव का शुभारम्भ हुआ। वरिष्ठ उपाध्यक्ष आदरणीय हरिनारायण व्यास जी ने स्थापना कालीन सदस्यों, वरिष्ठ साधकों एवं वर्तमान पदाधिकारियों का अभिनंदन किया। यह अवसर केवल स्मरण का नहीं, बल्कि साधना की आगामी यात्रा के संकल्प का था।

आगामी संकल्प : गीता परिवार की साधना यात्रा का नया अध्याय

गीता परिवार अपने चतुर्दशक पूर्ति महोत्सव के पश्चात् अब एक वर्ष के विराट संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। यह संकल्प केवल कार्यक्रमों की सूची नहीं, बल्कि एक महायज्ञ है—जहाँ प्रत्येक उपक्रम एक आहुति है और प्रत्येक साधक उसकी ज्योति।

गीता महाकुम्भ 2026 : 20 दिसम्बर 2026 को कोटा में गीता महाकुम्भ का आयोजन होगा, जिसमें चालीस हजार से अधिक बालकों को जोड़ने का लक्ष्य है। ऐसे चार महाकुम्भ देश के विभिन्न स्थलों पर होंगे, जो गीता परिवार की साधना को जन-जन तक पहुँचाएँगे।

विष्णु कोटि ऐप : महाकुम्भ का शुभारम्भ चार करोड़ विष्णु सहस्रनाम पाठ से होगा। इसके लिए "विष्णु कोटि" नामक विशेष डिजिटल मंच तैयार किया गया है, जिसे हर साधक अपने मोबाइल पर डाउनलोड कर इस महायज्ञ में सहभागी बन सकता है।

टीम 11 पोर्टल : संगठनात्मक विस्तार हेतु Team 11 पोर्टल विकसित किया गया है। इसके माध्यम से चालीस हजार कार्यकर्ताओं का पंजीकरण कर 4000 केन्द्रों की स्थापना की जाएगी। इन केन्द्रों के द्वारा विद्यालयों और सामाजिक संस्थाओं में नियमित संस्कार कार्यक्रम आयोजित होंगे, जिससे गीता परिवार का प्रकाश गाँव-गाँव और नगर-नगर तक पहुँचेगा।

शक्ति–भक्ति संस्कार : आगामी वर्ष में विशेष रूप से शक्ति और भक्ति संस्कार पर बल दिया जाएगा। शक्ति : प्रतिदिन बारह सूर्य नमस्कार। भक्ति : श्रीमद्भगवद्गीता का बारहवाँ अध्याय (भक्तियोग)।इस प्रकार बच्चों और युवाओं में शारीरिक ऊर्जा और आध्यात्मिक श्रद्धा का संतुलित विकास होगा।

संस्कार महोत्सवों की श्रेणियाँ

गीता परिवार ने संस्कार आयोजनों को चार स्तरों में विभाजित किया है—

पाँच हजार बच्चों का आयोजन : संस्कार महोत्सव

पाँच से दस हजार बच्चों का आयोजन : संस्कार महासंगम

दस से बीस हजार बच्चों का आयोजन : संस्कार कुम्भ

बीस से चालीस हजार बच्चों का आयोजन : संस्कार महाकुम्भ

इसी क्रम में पहला संस्कार महाकुम्भ विदर्भ, महाराष्ट्र के नागपुर में आदरणीय गडकरी जी के क्षेत्र में सम्पन्न हुआ।

गीता परिवार की यह यात्रा केवल संगठन की नहीं, बल्कि आत्मा की यात्रा है। यहाँ पद और प्रतिष्ठा से अधिक सेवा, साधना और समर्पण का मूल्य है। चार दशकों की अविराम तपस्या ने गीता परिवार को विश्व पटल पर प्रतिष्ठित किया है। आने वाले वर्षों में यह परिवार करोड़ों बालकों और साधकों तक श्रीमद्भगवद्गीता का प्रकाश पहुँचाने के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है।

भारत माता को विश्वगुरु बनाने की दिशा में गीता परिवार का यह प्रयास; संस्कार, साधना और सेवा की एक अमूल्य धरोहर है।

प्रेरक उद्बोधन

परम्परा, पर्यावरण, सुरक्षा और समरसता : साधना का नया पथ

पाण्डव पञ्चमी के पावन अवसर पर गीता परिवार के संस्थापक एवं मार्गदर्शक, परम पूज्य स्वामी श्री गोविन्द देव गिरि जी महाराज ने चालीस वर्षों की साधना यात्रा के उपलक्ष्य में आगामी शताब्दी की दिशा बताई। उन्होंने कहा कि गीता परिवार की स्थापना करते समय बाल संस्कार कार्य इसका मूल उद्देश्य था और आज भी वही धारणा उनके हृदय में जीवित है। संस्कार प्राप्त करने वाले बालक जब बड़े होकर पालक बनते हैं, तो वही संस्कार उनके जीवन का आधार बन जाते हैं।

भगवद्गीता को आधार बनाकर गीता परिवार ने छोटे-से प्रयास से शुरुआत की थी—बालकों के कण्ठ में गीता के श्लोक विराजमान कराना। आज वही कार्य विश्वव्यापी हो गया है। 183 देशों में गीता की वाणी गुञ्जायमान है और 14 लाख से अधिक साधक आत्मबोध पाकर भगवद्भक्ति के मार्ग पर अग्रसर हैं।

साधना के चार सूत्र

स्वामी जी ने स्पष्ट किया कि ईश्वर भक्ति, भगवद्गीता, भारत माता, विज्ञान दृष्टि और स्वामी विवेकानन्द—ये पाँच सूत्र हमारे मार्गदर्शक हैं। परन्तु इस वर्ष के लिए उन्होंने चार विशेष सूत्र बताए, जो गीता परिवार की साधना यात्रा का नया पथ बनेंगे।

1. परम्परा बोध

बालकों को केवल गीता और योग सिखाना पर्याप्त नहीं है; उन्हें अपने देश की परम्परा और इतिहास का बोध कराना आवश्यक है। शिवाजी महाराज की वीरता और जीजा माता की प्रेरणा इसी परम्परा बोध से उत्पन्न हुई थी। कर्मयोग तभी जागृत होगा जब बालक अपने महापुरुषों की गाथाएँ सुनेंगे और उनसे प्रेरणा लेंगे।

2. पर्यावरण की रक्षा

आज जल, भूमि, वायु और आकाश प्रदूषण से त्रस्त हैं। गीता परिवार का प्रत्येक साधक पर्यावरण संरक्षण को अपनी सेवा का अंग बनाए। वृक्षारोपण, प्लास्टिक का न्यूनतम प्रयोग और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा—ये सब हमारी साधना का हिस्सा हों। विभूतियोग में भगवान ने हिमालय, गंगा और वृक्षों को अपनी विभूति कहा है। सृष्टि की रक्षा करना ही परमात्मा की आराधना है।

3. सुरक्षा की सिद्धता

भगवान श्रीकृष्ण ने सदैव सज्जनों की रक्षा की। उसी भाव से हमें भी समाज की सुरक्षा का संकल्प लेना है। शौर्य संस्कार का विस्तार कर शारीरिक बल और संगठनात्मक शक्ति को बढ़ाना होगा। संख्या बल पर ध्यान देना आवश्यक है, क्योंकि यदि समाज सुरक्षित नहीं रहा तो गीता परिवार भी सुरक्षित नहीं रहेगा। अर्जुन हमारे आदर्श हैं—हमें भी अर्जुन के समान साहसी और सजग बनना होगा।

4. समरसता का भाव

गीता परिवार का उद्देश्य केवल उन परिवारों तक पहुँचना नहीं है जहाँ गीता पहले से पढ़ी जाती है, बल्कि उन घरों तक भी पहुँचना है जहाँ गीता का नाम तक नहीं सुना गया। गोवर्धन लीला की भाँति गीता का महाप्रसाद हर घर तक पहुँचना चाहिए। गीता की पुस्तक, चित्रमय गीता और भगवान के चित्र वंचित परिवारों तक पहुँचाना ही सच्ची समरसता है। जब हम उनके सुख-दुःख में सहभागी बनेंगे, तभी गीता परिवार वास्तव में भगवान श्रीकृष्ण का परिवार कहलाएगा।

परम्परा का बोध, पर्यावरण की रक्षा, सुरक्षा की सिद्धता और समरसता का भाव—ये चार सूत्र गीता परिवार की साधना यात्रा के नए पथ हैं। जब हम इन सूत्रों के साथ आगे बढ़ेंगे, तो समाज हमें हृदय के द्वार खोलकर अपनाएगा और गीता परिवार जन-जन का परिवार बन जाएगा। **चालीस वर्षों की साधना से शताब्दी की ओर बढ़ते हुए गीता परिवार का यह संकल्प केवल संगठन का नहीं, बल्कि राष्ट्र और विश्व की चेतना को संस्कारित करने का है।**

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/giitaa-privaar-caar-dshkon-kii-snskaar-saadhnaa-se-vishvcetn/giitaa-privaar-caar-dshkon-kii-snskaar-saadhnaa-se-vishvcetn/

नागपुर में 52,559 बालकों द्वारा सामूहिक गीता पाठ से विश्व कीर्तिमान!

नागपुर की पावन भूमि पर इतिहास रच गया! "ईश्वर देशमुख शारीरिक शिक्षण महाविद्यालय मैदान", हनुमान नगर में आयोजित सामूहिक श्रीमद्भगवद्गीता पाठ ने ऐसा अध्याय लिखा, जो युगों तक प्रेरणा देगा।

४ मिनट पठन · १० चित्र



नागपुर में सामूहिक गीता पाठ के मंच पर अतिथिगण, पीछे विशाल जनसमूह में बैठे हजारों बालक।





खासदार सांस्कृतिक महोत्सव समिति एवं गीता परिवार के संयुक्त तत्वावधान में हुए इस महाआयोजन में 302 विद्यालयों के 52,559 बालकों ने एक स्वर में भगवद्गीता के 64 श्लोकों का **(३ अध्याय, १२वा, १५वा तथा १६वा),** संस्कृत में **पठण** किया — और इसी के साथ यह आयोजन World Book of Records में दर्ज होकर विश्व कीर्तिमान बन गया।

प्रेरणा, संकल्प और साधना से साकार हुआ गीता महायज्ञ



इस महाभव्य आयोजन की प्रेरणा संस्कार भारती की अध्यक्षा सौ. **कांचनताई गडकरी** एवं केंद्रीय मंत्री माननीय नितिन जी गडकरी के संकल्प से मिली। गीता परिवार नागपुर के अध्यक्ष **आ. श्रीनिवास जी वर्णेकर एवं सौ. वंदनाताई वर्णेकर** के नेतृत्व में सैकड़ों समर्पित कार्यकर्ताओं ने **गत छह माह** विद्यालय-विद्यालय जाकर गीता के तीन अध्यायों का शुद्ध उच्चारण सिखाया। लखनऊ से एक लाख गीता पुस्तकें विद्यार्थियों तक पहुँचाई गईं — हर पुस्तक एक दीपक की तरह **बन गया**, जिसने बालमन में ज्ञान का प्रकाश जगाया।

माननीय नितिन जी गडकरी की गरिमामयी उपस्थिति

भारत सरकार के केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री, माननीय नितिन जी गडकरी ने कहा

> "भगवद्गीता जीवन का मार्गदर्शक ग्रंथ है। विद्यार्थियों द्वारा किया गया यह सामूहिक पाठ केवल एक विश्व रिकॉर्ड नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा में आध्यात्मिक चेतना का संचार है।"

उन्होंने इसे नागपुर का गौरव और भारत की संस्कृति का उत्सव बताया।

दिव्यता, भक्ति और गौरव का संगम

परम पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज (संस्थापक, गीता परिवार; कोषाध्यक्ष — श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास) की दैवीय उपस्थिति से आयोजन अलौकिक बन गया। उन्होंने कहा —

> "हमारे राष्ट्र को ऐसे भव्य सामूहिक आयोजनों की आवश्यकता है, जो हमें एकता के सूत्र में बाँधें। गीता केवल ग्रंथ नहीं, जीवन का विज्ञान है — जिसका अध्ययन मानव जीवन को श्रेष्ठ, संतुलित और सफल बनाता है।"

गीता परिवार की चतुर्दशकपूर्ति का प्रथम भव्य आयोजन



पांडव पंचमी 1986 से आरंभ हुआ गीता परिवार अब अपने 40 वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। इस **चतुर्दशकपूर्ति वर्ष (2025-26) का यह पहला भव्य दिव्य कार्यक्रम आयोजित हुवा है। देश-विदेश में ऐसे अनेक कार्यक्रम आयोजित होने जा रहे है, जिसका समापन** कोटा, राजस्थान में एक और दिव्य महोत्सव के साथ किया जाएगा।

प्रमुख अतिथिगण



आयोजन में गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आ. डॉ. संजय मालपाणी जी, अंतर्राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आ. डॉ. आशू गोयल जी, विधायक प्रवीण **दटके**, ~डॉ. भागवत कराड, चंद्रशेखर बावनकुले, मेयर दयाशंकर तिवारी~ प्रा **. अनिल जी सोले** सहित अनेक गणमान्य अतिथियों ने सहभागिता की।

जब गीता के श्लोक गूंजे...







बालकों के कोमल कंठों से जब गीता के श्लोक एक साथ गुजायमान हुए — तो सम्पूर्ण वायुमंडल रोमांचित हो उठा। वातावरण में भक्ति की ऐसी लहर उठी मानो स्वयं देवगण भी आशीर्वाद देने उतरे हों। श्रद्धा से भरी आँखें, कम्पायमान स्वर और हर दिशा में गूंजती “जय श्रीकृष्ण” की ध्वनि — यह केवल एक आयोजन नहीं, आध्यात्मिक ऊर्जा का महासंगम था।

विश्व रिकॉर्ड के मुख्य बिंदु



आयोजन: “जागर भक्ति का” — खासदार सांस्कृतिक महोत्सव समिति एवं गीता परिवार द्वारा

स्थान: ईश्वर देशमुख कॉलेज ऑफ़ फिजिकल एजुकेशन ग्राउंड, नागपुर

प्रतिभागी: 52,559 छात्र (कक्षा 5 से 12), 302 विद्यालयों से

अध्याय: श्रीमद्भगवद्गीता के 12वें, 15वें और 16वें अध्याय का पाठ

प्रमाणन: World Book of Records, India Book of Records, World Record Book of India

विशेषता: शहर के **7 केंद्रोमे उसी समय तीनो अध्यायोंका पठण ऑनलाइन जुडके;** 3,000 विद्यार्थी **केवल कुही केंद से** ; 1.5 लाख श्रद्धालुओं की साक्षी में आयोजन संपन्न हुआ।

इस कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि इसमें दृष्टिबाधित, विशेष रूप से सक्षम (Differently Abled) बालक-बालिकाओं के साथ-साथ आदिवासी बहुल एवं ग्रामीण क्षेत्रों के अनेक विद्यार्थी उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुए।

इस ऐतिहासिक क्षण ने यह सिद्ध किया कि जब बालमन में गीता का प्रकाश जागता है — तब केवल इतिहास नहीं, विश्व कीर्तिमान जन्म लेते हैं। गीता परिवार का यह प्रयास आने वाली पीढ़ियों के लिए एक जीवंत प्रेरणा है — “गीता से ही जीवन, गीता से ही भारत।”

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/giitaa-privaar-caar-dshkon-kii-snskaar-saadhnaa-se-vishvcetn/naagpur-men-52-559-baalkon-dvaaraa-saamuuhik-giitaa-paatth-s/

03

The Gītā and the Corporate World

4 min read

Ancient Wisdom for Modern Leadership

Leadership breakdowns rarely occur due to lack of intelligence or strategy. More often, they arise from **inner turbulence**—fear of failure, attachment to outcomes, ego-driven reactions, and emotional fatigue. The Bhagavadgītā speaks directly to this inner landscape, offering leaders not managerial techniques, but **inner steadiness**.

In today's corporate environment—defined by relentless competition, performance pressure, technological acceleration, and human complexity—leaders face a quiet yet persistent question: **how to achieve results without compromising ethics, balance, or clarity**. While modern management frameworks offer sophisticated tools, they often overlook the most decisive factor in leadership—the **quality of the mind from** which judgment and action arise.

Set on the battlefield of Kurukṣetra, the Gītā begins with hesitation. Arjuna's paralysis—born of fear, emotional conflict, and uncertainty—mirrors the inner struggles of contemporary leaders navigating volatility, organizational politics, and competing expectations. Krishna's guidance does not encourage withdrawal, but **clarity within action**, making the Gītā a living philosophy for leadership under pressure.

"The Gītā does not teach withdrawal from action, but clarity within action."

One of the Gītā's most transformative insights is Karma Yoga. *"Karmanye vādhikāras te mā phaleṣu kadācana"* (2.47) reframes performance by shifting attention from outcome obsession to **excellence of effort**. In many organizations, excessive fixation on targets and metrics breeds anxiety and fear-driven behaviour. Krishna's counsel is subtler: **act with discipline, ethics, and full commitment—without inner attachment to results**.

The Tata Group offers a powerful illustration of this principle. Under leaders such as Ratan Tata, decisions were shaped by long-term responsibility rather than short-term gain. Even amid criticism or uncertainty, leadership remained anchored in dignity and values, demonstrating how **detachment from ego builds enduring trust and credibility**.

"Detachment from outcomes does not weaken performance; it strengthens credibility."

Krishna further defines Yoga as *"Yogaḥ karmasu kauśalam"*(2.50)—excellence in action. In corporate life, this excellence extends far beyond technical competence. It includes **clarity of judgment, emotional balance, ethical sensitivity, and wise action under pressure**.

A global parallel can be seen in Unilever's leadership under Paul Polman, where long-term value creation was prioritised over short-term profit maximisation. By aligning business strategy with social and environmental responsibility, Unilever demonstrated that **clarity of purpose enhances both performance and reputation**.

EXCELLENCE IN ACTION LEADERSHIP EXCELLENCE IS NOT SPEED OR CONTROL ALONE. IT IS CLARITY, RESTRAINT, AND RESPONSIBILITY IN MOMENTS OF PRESSURE.

The Gītā places deep emphasis on self-leadership: *"Ātmaiva hyātmano bandhuḥ, ātmaiva ripur ātmanaḥ"* (6.5). Many leadership failures stem not from lack of intelligence, but from **unregulated emotion**—anger, fear, insecurity, or ego.

The leadership culture shaped at Infosys under N.R. NarayanaMurthy reflected this wisdom. Humility, restraint, transparency, and self-discipline were embedded as core leadership values, translating into strong governance, trust, and long-term credibility.

"Leadership of others begins with leadership of oneself."

The Gītā's ideal leader is the *sthita-prajña*—one of steady wisdom—balanced in success and failure. Krishna describes such a leader as undisturbed by adversity and uncarried by success (2.56). Modern research mirrors this truth. Google's Project Aristotle identified psychological safety as the strongest predictor of high-performing teams—an outcome directly shaped by emotionally steady leadership.

What contemporary research calls psychological safety, the Gītādescribes as **inner steadiness radiating outward**.

STHITA-PRAJÑA AT WORK EMOTIONAL STEADINESS IN LEADERS CREATES TRUST, OPENNESS, AND STABILITY ACROSS TEAMS.

Krishna's own leadership style offers a final insight. He does not command Arjuna; he guides through dialogue, reasoning, and reassurance—empowering him to act with clarity. This stewardship-based model of leadership, rooted in wisdom rather than control, is deeply relevant for modern organizations.

"True authority in leadership arises from wisdom, not control."

Closing Reflection

The Bhagavadgītā is not a management manual. It is a guide to **inner leadership**. By cultivating clarity, emotional balance, ethical action, and freedom from ego-driven attachment, leaders build organizations that are not only successful, but **humane and resilient**.

The battlefield of Kurukṣetra is not distant.
It is the modern workplace.

KEY TAKEAWAYS FOR LEADERS

- **Disciplined effort matters more than anxiety about outcomes**
- **Excellence includes judgment, balance, and ethical sensitivity**
- **Self-mastery is the foundation of credible leadership**
- **Emotional steadiness creates trust and psychological safety**
- **Leadership is stewardship—enabling people, not controlling them**

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2026-01/giitaa-privaar-caar-dshkon-kii-snskaar-saadhnaa-se-vishvcetn/the-gita-and-the-corporate-world/



स्वामी विवेकानन्द जी - आज के युवाओं के शाश्वत सारथी

इसका उत्तर हमें आज से सवा सौ साल पहले एक ऐसे महापुरुष ने दिया था, जिसके रोम-रोम में भारतमाता बसती थी - स्वामी विवेकानन्द।

९ मिनट पठन · ४ चित्र

उठो! जागो!: 21वीं सदी के भारत का शङ्खनाद

आज के इस 'डिजिटल युग' में, जहाँ सूचनाओं की बाढ़ है, अक्सर हमारा युवा मन भ्रमित हो जाता है कि आखिर जीवन का वास्तविक उद्देश्य क्या है? क्या केवल एक अच्छी नौकरी और सुख-सुविधाएं ही जीवन का लक्ष्य हैं?



राष्ट्रीय युवा दिवस (12 जनवरी) का ग्राफिक, जिसमें भारत के मानचित्र पर स्वामी विवेकानन्द की आकृति अंकित है।

उनके व्यक्तित्व में हिमालय जैसी स्थिरता और हिन्द महासागर जैसी गतिशीलता का अद्भुत सङ्गम था। स्वामी जी केवल एक संन्यासी नहीं, बल्कि राष्ट्र-निर्माण के वह अमर शिल्पकार थे जिन्होंने युवाओं को 'कायरता' छोड़कर 'पौरुष' अपनाने का आह्वान किया था। यह लेख स्वामी विवेकानन्द के जीवन के उन अनछुए पहलुओं और व्यावहारिक सूत्रों की एक यात्रा है, जो आज के युवाओं को न केवल मानसिक फौलाद बनाना सिखाते हैं, बल्कि उन्हें अपनी व्यक्तिगत सफलता को राष्ट्र के गौरव से जोड़ने की प्रेरणा भी देते हैं। आइए, अपनी सोई हुई शक्तियों को जगाने के उस महा-अनुष्ठान का हिस्सा बनें, जिसे स्वामी जी ने 'मनुष्य निर्माण' (Man-Making) का नाम दिया था।"

1. **बन्दरों से डरें नहीं, सामना करें: जीवन की चुनौतियों को मात देने का गुप्त सूत्र**

विवेकानन्द जी के जीवन की एक छोटी सी घटना हमें जीवन का सबसे बड़ा पाठ सिखाती है। एक बार वे वाराणसी के एक मन्दिर से लौट रहे थे, तभी बन्दरों के एक झुण्ड ने उन्हें घेर लिया। स्वामी जी बन्दरों के उस झुण्ड से दूर भागने लगे। वे जितना तेज भागते, बन्दर उतना ही उनके पीछे पड़ते। तभी एक वृद्ध संन्यासी ने चिल्लाकर कहा, "रुको! भागो मत, इनका सामना करो!"

स्वामी जी तुरन्त रुके और पलटकर बन्दरों की आँखों में आँखें डालकर खड़े हो गए। परिणाम क्या हुआ? सारे बन्दर भाग गए।

आज की चुनौतियां - चाहे वो पढ़ाई का तनाव हो, असफलता का डर हो या सामाजिक दबाव ये इन बन्दरों की तरह हैं। यदि तुम डरकर भागोगे, तो वे तुम्हें और डराएंगी। यदि तुम दृढ़ता से खड़े होकर उनका सामना करोगे, तो वे स्वतः विलीन हो जाएंगी। अपनी प्रगति और राष्ट्र की सेवा के मार्ग में आने वाली बाधाओं से हमें कभी विचलित नहीं होना है।

1. **सुपर-कंप्यूटर से भी तेज़ मस्तिष्क: एकाग्रता बढ़ाने का विवेकानन्द मॉडल**

एक बार अमेरिका में स्वामी जी ने देखा कि कुछ लड़के नदी में तैरते हुए अण्डे के छिलकों पर निशाना लगाने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन बार-बार चूक रहे थे। स्वामी जी ने बन्दूक ली और एक के बाद एक 12 निशाने बिल्कुल सटीक लगाए। लड़के हैरान रह गए! उन्होंने पूछा, "स्वामी जी, आपने यह कैसे किया?"

स्वामी जी ने मुस्कुराते हुए कहा, "जो भी काम करो, अपना पूरा मन उसी में लगा दो। यदि तुम निशाना लगा रहे हो, तो तुम्हारा मन केवल लक्ष्य पर होना चाहिए। यदि तुम पढ़ रहे हो, तो तुम्हारा मन केवल उस पाठ पर होना चाहिए।"

आज के युग में 'Multi-tasking' का बड़ा शोर है, लेकिन एकाग्रता (Concentration) ही वह शक्ति है जिससे भारत का युवा विज्ञान, खेल और कला के क्षेत्र में विश्व का नेतृत्व कर सकता है। जब हम अपने कार्य को 'भारत माता की पूजा' मानकर एकाग्र मन से करेंगे, तभी हम सही मायने में सफल होंगे और सच्चे राष्ट्रभक्त बनेंगे।

1. **चरित्र की धार: चाकू की उस घटना ने कैसे बदला नरेंद्र का जीवन**

स्वामी जी विदेश जा रहे थे, तब उनकी माँ, भुवनेश्वरी देवी ने उनकी परीक्षा लेनी चाही। उन्होंने नरेन्द्र (विवेकानन्द जी का बचपन का नाम) से कहा, "बेटा, जरा वह चाकू देना।" नरेन्द्र ने चाकू उठाया और माँ को पकड़ा दिया। माँ ने तुरन्त कहा, "बेटा, तुम देश की सेवा और धर्म के प्रचार के योग्य हो।"

नरेन्द्र चकित थे। माँ ने समझाया, "बेटा, तुमने चाकू को इस तरह पकड़ा कि उसकी तेज धार तुम्हारी मुट्ठी में थी और लकड़ी वाला हिस्सा मेरी तरफ। तुमने यह सुनिश्चित किया कि मुझे चोट न लगे। जिसने दूसरों के हित के लिए स्वयं कष्ट सहना सीख लिया, वही समाज का नेतृत्व कर सकता है।"

सच्चा देशभक्त वह नहीं है जो केवल नारे लगाता है, बल्कि वह है जिसका चरित्र शुद्ध है और जो दूसरों के दुःख को अपना समझता है।

1. **IISc और जमशेदजी टाटा: जब एक संन्यासी ने रखी आधुनिक भारतीय विज्ञान की नींव**

कन्याकुमारी के उस अन्तिम शिला पर, जहाँ तीन समुद्रों का सङ्गम होता है, वहाँ बैठकर स्वामी जी ने घण्टों ध्यान किया था। उन्होंने हिमालय से कन्याकुमारी तक के भारत को देखा था, उसकी गरीबी, उसकी जड़ता और उसकी गौरवशाली विरासत को। वहीं उन्होंने सङ्कल्प लिया था, "जब तक मेरे देश का एक भी व्यक्ति भूखा या अज्ञानी है, मैं उस प्रत्येक व्यक्ति को देशद्रोही मानता हूँ जो उनके खर्च पर शिक्षा पाकर उनकी परवाह नहीं करता।"

जब स्वामी जी जहाज से अमेरिका जा रहे थे, तब उनके साथ सुप्रसिद्ध उद्योगपति जमशेदजी टाटा भी थे। विवेकानन्द जी ने ही उन्हें प्रेरित किया था कि भारत में अपनी फैक्टरी के साथ-साथ एक रिसर्च इंस्टिट्यूट (जो आज IISc बेंगलुरु है) भी खोलें ताकि भारत विज्ञान में आत्मनिर्भर बने। आज के युवाओं के लिए यही सीख है: डॉक्टर बनो, इंजीनियर बनो, वैज्ञानिक बनो या कलाकार लेकिन अपने ज्ञान और कौशल का एक हिस्सा इस मातृभूमि के उत्थान के लिए समर्पित करो।

1. **अमृत काल का संकल्प पत्र: खुद को ट्रैक करें, राष्ट्र को आगे बढ़ाएं**

स्वामी जी कहते थे, "मुझे १०० ऐसे युवा दे दो जो तेजस्वी हों और जिनका चरित्र फौलाद जैसा हो, मैं इस देश का नक्शा बदल दूँगा।"

आज भारत 'अमृत काल' में है। हमें ऐसे युवाओं की आवश्यकता है जो:

- **आत्मविश्वासी हों:** "मैं सब कुछ कर सकता हूँ" का भाव रखें।
- **वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखें:** अंधविश्वासों से दूर रहें और 'Geeta' के साथ 'Science' को भी अपनाएँ।
- **सेवाभावी हों:** अपने आसपास के निर्धन और वञ्चित बच्चों को पढ़ाने या उनकी सहायता करने का सङ्कल्प लें।

गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं - 'क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ' (हे अर्जुन, कायरता को प्राप्त मत हो)। स्वामी विवेकानन्द इसी सन्देश के आधुनिक अवतार थे।

उठो! जागो! और तब तक मत रुको जब तक भारत को पुनः 'विश्वगुरु' के पद पर प्रतिष्ठित न कर दो।

॥ भारत माता की जय॥

आदर्श दिनचर्या

आज के समय में विद्यालय और कोचिंग की व्यस्तता के बीच स्वयं के लिए और अपनी आध्यात्मिक शक्ति के लिए समय निकालना चुनौतीपूर्ण है। विवेकानन्द जी कहते थे कि समय का प्रबन्धन ही सफलता की पहली सीढ़ी है। वर्तमान समय की कठिन दिनचर्या को ध्यान में रखते हुए आज के युवाओं के लिए आदर्श दिनचर्या-

समय	गतिविधि	उद्देश्य
4:00-4:30am	जागरण (ब्रह्म मुहूर्त)	दिन की शुरुआत सात्विक ऊर्जा और संकल्प के साथ करना।
4:30-5:15am	शौच, स्नान और प्राणायाम	शरीर को ऊर्जावान और मन को एकाग्र बनाना।
5:15-5:45am	ध्यान (Meditation)	इष्ट देव या भारत माता का स्मरण और मानसिक शक्ति का संचय।
5:45-6:15am	अल्पाहार और विद्यालय/कॉलेज /कार्यस्थल प्रस्थान	दिन भर की ऊर्जा के लिए पौष्टिक आहार लेना।
6:30-4:00pm	विद्यालय/कॉलेज/कार्यस्थल	'कर्म योग'-पूरी एकाग्रता के साथ ज्ञान प्राप्त करना।
4:00-4:45pm	विश्राम और स्वल्पाहार	थकान दूर करना और ऊर्जा प्राप्त करना।
5:00-7:00pm	अतिरिक्त तैयारी	कठिन विषयों पर अपनी पकड़ मजबूत करना।
7:00-7:45pm	खेलकूद या व्यायाम	शरीर को फौलादी बनाना। विवेकानन्द जी कहते थे, "बल ही जीवन है।"
7:45-8:45pm	स्वाध्याय और पुनरावृत्ति	दिन भर सीखी गई बातों का चिन्तन और अध्ययन।
8:45-9:30pm	परिवार के साथ रात्रि भोज	रिश्तों में मधुरता और सांस्कृतिक मूल्यों का आदान-प्रदान।
9:30-9:45pm	आत्म-विश्लेषण (Diary Writing)	आज के दिन की प्रगति और कल के सुधार का आकलन।
10:00pm	शयन (Deep Sleep)	मन और शरीर को पूर्ण विश्राम देना।

विवेकानन्द युवा विजय चेकलिस्ट

"मनुष्य बनो और मनुष्य बनाओ" — स्वामी विवेकानन्द

यह चेकलिस्ट आपके भीतर के सोए हुए सिंह को जगाने और आपको राष्ट्र-निर्माण के योग्य बनाने के लिए है।

5 महा-मन्त्र (नित्य मनन हेतु)

1. **निर्भयता:** परिस्थितियों के **झुण्ड** से डरो नहीं, पलटकर उनका सामना करो।
2. **एकाग्रता:** एकाग्र मन ही विश्व की सबसे शक्तिशाली शक्ति है।
3. **पवित्रता:** मन, वाणी और कर्म में शुद्धता ही सफलता का आधार है।
4. **चरित्र:** तेज धार वाले चाकू की तरह स्वयं कष्ट सहकर भी दूसरों की रक्षा करो।
5. **सङ्गम:** ज्ञान, भक्ति और कर्म का अपने जीवन में समन्वय करो।

अनुशासन का सूर्योदय (दैनिक संक्षिप्त दिनचर्या)

- **4:00 AM:** जागरण एवं संकल्प।
- **5:15 AM:** ध्यान एवं प्राणायाम (मानसिक पोषण)।
- **6:30 AM - 4:00 PM:** विद्यालय/कॉलेज (पूर्ण तन्मयता से पठन)।
- **5:00 PM - 7:00 PM:** गहन अभ्यास।
- **7:00 PM - 7:45 PM:** शारीरिक खेल (जैसे फुटबॉल)।
- **9:30 PM:** आत्म-विश्लेषण (डायरी लेखन)।

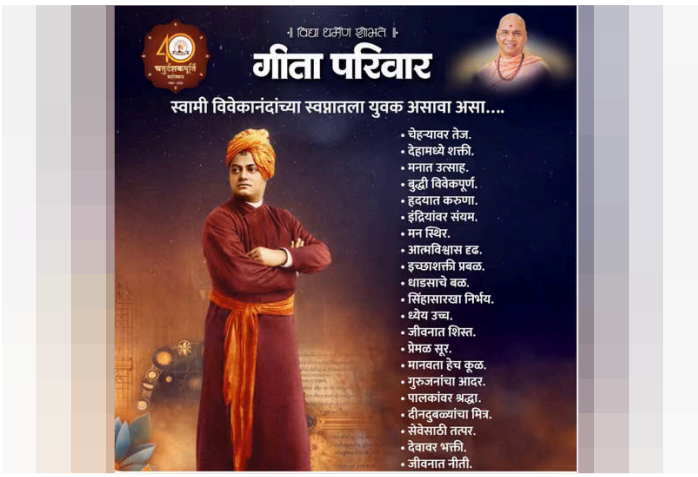
मेरी प्रगति (Weekly Check)

- **क्या मैंने आज स्वयं को 'बहादुर' महसूस किया?** [ ]
- **क्या मैंने आज किसी की निःस्वार्थ सहायता की?** [ ]
- **क्या मैंने आज एकाग्रता के साथ अध्ययन किया?** [ ]

युवाओं के लिए गीता सन्देश

'क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ' - कायरता को प्राप्त मत हो, पौरुष का परिचय दो!

॥ गीता परिवार - संस्कार से राष्ट्र सेवा॥





विवेकानन्द युवा राष्ट्र-प्रतिज्ञा

"मैं भारत माता का पुत्र/पुत्री, आज स्वामी विवेकानन्द जी की पावन स्मृति में यह प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि:

1. **मैं अपने जीवन के प्रत्येक क्षण का उपयोग चरित्र निर्माण और ज्ञान अर्जन के लिए करूँगा/करूँगी।**
2. **मैं चुनौतियों और कठिनाइयों के झुण्ड को देखकर भागूँगा/भागूँगी नहीं, बल्कि बन्दरों वाली घटना से प्रेरणा लेकर उनका निडरता से सामना करूँगा/करूँगी।**
3. **मैं अपने मन को एकाग्र करूँगा/करूँगी, क्योंकि एकाग्रता ही समस्त शक्तियों की कुञ्जी है।**
4. **मैं अपनी शिक्षा का उपयोग केवल स्वयं के सुख के लिए नहीं, बल्कि अपने देश के निर्धन और वंचित भाई-बहनों की सेवा के लिए करूँगा/करूँगी।**
5. **मैं अपनी संस्कृति और आध्यात्मिक मूल्यों के सङ्गम से आधुनिक विज्ञान को जोड़कर भारत को पुनः 'विश्वगुरु' के पद पर प्रतिष्ठित करने के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करूँगा/करूँगी।**

उठो! जागो! और लक्ष्य प्राप्ति तक मत रुको!

॥ वन्दे मातरम्॥

संदर्भ: स्वामी विवेकानन्द के सम्पूर्ण वाङ्मय एवम् प्रामाणिक जीवनियों पर आधारित।

Ref:https://reflections.live/articles/10403/swami-vivekanandas-vision-for-youth-empowerment-and-self-reliance-in-modern-india-article-by-asmita-ghosh-21664-m9tnpyre.html#:~:text=Vivekananda's%20focus%20on%20youth%20empowerment,as%20a%20means%20of%20empowerment.

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/giitaa-privaar-caar-dshkon-kii-snskaar-saadhnaa-se-vishvcetn/svaamii-vivekaannd-jii-aaj-ke-yuvaaon-ke-shaashvt-saarthii/

04

गीता जयंती महोत्सव

गीता जयंती महोत्सव पृष्ठ ४१

गीता जयंती: चेतना का पर्व पृष्ठ ४२

ऑफलाइन की तैयारी , तकनीकी सहयोग और भव्य उपलब्धियाँ पृष्ठ ४३

ऑनलाइन विशेष आयोजन; गीता साधना का अभिनव आयाम पृष्ठ ५३

गीता ओलंपियाड – एक दिव्य यात्रा पृष्ठ ५६

आज का कुरुक्षेत्र, आज का युद्ध पृष्ठ ५९

संगीतमय सस्वर पारायण - गीता जयन्ती महोत्सव लखनऊ पृष्ठ ६१

गीता जयंती महोत्सव

१ मिनट पठन · १ चित्र



गीता ओलम्पियाड और संगीतमय पारायण को प्रस्तुत करती लर्नगीता की स्लाइड।

5162वीं गीता जयन्ती का भव्य आयोजन!

(उत्पन्ना एकादशी 15 नवंबर से पुत्रदा एकादशी 31 दिसम्बर 2025 तक)

गीता परिवार द्वारा आयोजित **"गीता जयंती महोत्सव 2025"** एक साधारण आयोजन नहीं, बल्कि आध्यात्मिक चेतना का विराट उत्सव बनकर उभरा। 15 नवम्बर से 31 दिसम्बर तक निरंतर **47 दिनों** तक चले इस महोत्सव ने ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों माध्यमों से विश्वभर के साधकों, युवाओं, परिवारों और जिज्ञासुओं को एक साझा आध्यात्मिक सूत्र में बाँध दिया। आधुनिक जीवन की जटिलताओं, मानसिक दबावों और मूल्य-संकट के बीच यह आयोजन श्रीमद्भगवद्गीता के शाश्वत संदेश को जीवनोपयोगी स्वरूप में प्रस्तुत करता हुआ मानवता के लिए आत्मबल, दिशा और आशा का प्रकाशस्तंभ सिद्ध हुआ।

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/giitaa-jyntii-mhotsv/giitaa-jyntii-mhotsv/

गीता जयंती: चेतना का पर्व

२ मिनट पठन

"जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥"

श्लोक सुनें
४.९

गीता जयंती केवल एक तिथि नहीं, बल्कि वह दिव्य क्षण है जब कुरुक्षेत्र की रणभूमि में मोह और विषाद से ग्रस्त अर्जुन को भगवान श्रीकृष्ण ने आत्मबोध का अमृत पिलाया। यह वह क्षण था जब जीवन के रणक्षेत्र में भ्रमित मनुष्य को धर्म, विवेक और कर्तव्य का शाश्वत मार्ग प्राप्त हुआ। गीता जयंती हमें स्मरण कराती है कि गीता केवल एक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन का शाश्वत मार्गदर्शक है, जो मनुष्य को मोह से निकालकर धर्ममय आचरण की ओर अग्रसर करती है।

गीता जयंती महोत्सव का उद्देश्य

इस महोत्सव का मूल उद्देश्य गीता के शाश्वत संदेश को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाना रहा। गीता को केवल पूज्य ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन के व्यवहारिक मार्गदर्शक के रूप में स्थापित करना इसका प्रमुख ध्येय था। युवाओं और बच्चों में चरित्र निर्माण, आत्मसंयम और कर्तव्यनिष्ठा के संस्कार विकसित करना तथा समाज में धर्म, सत्य, सेवा और करुणा की चेतना को सुदृढ़ करना इस आयोजन की आत्मा रही।

यह महोत्सव गीता परिवार के **चतुर्दशकपूर्ति वर्ष** के आयोजन का हिस्सा था। जिसमें गीता परिवार ने 40 लाख साधकों तक गीता पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है।

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2026-01/giitaa-jyntii-mhotsv/giitaa-jyntii-cetnaa-kaa-prv/

ऑफलाइन की तैयारी , तकनीकी सहयोग और भव्य उपलब्धियाँ

२ मिनट पठन • १९ चित्र



गीता परिवार दक्षिणांचल के आयोजन में पंजीकरण मंच के सामने एकत्र सेविकाओं का समूह चित्र।




गीता
जयन्ती














गीता जयन्ती
महोत्सव
शिवपुর ও হাওড়া মহিলা সমিতির সমন্বয়ে
শনিবার (29/11/2025) বৈকাল 4:00 ঘটিকায়
অনুষ্ঠিত হবে।
गीता शिशुन



शिवपुर एवं हावड़ा गीता परिवार समिति के सामूहिक गीता पारायण में महिलाएँ पाठ करती हुईं और बच्चे श्रवण करते हुए।




LEARN GEETA
バガヴァッド・ギーターとその現代的意義
東大寺文化センター、2025年12月13日
Gita in Daily Life
ギーターと日常生活
Radhu Madhyastha
Co-ordinator
Geeta Parivar Japan













गीता जयन्ती महोत्सव के ऑफलाइन पोर्टल का बैनर, जिसमें मोक्षदा एकादशी और 15 नवंबर 2025 से 31 जनवरी 2026 तक की अवधि अंकित है।

इस विराट आयोजन की सफलता के पीछे **Geetajayanti.com** ऑनलाइन पोर्टल और आईटी टीम का सतत एवं समर्पित परिश्रम रहा। गीता जयंती आयोजन समिति द्वारा विकसित तकनीकी मंच ने ऑनलाइन पंजीकरण, लाइव पारायण, प्रतियोगिताएँ और गीता ओलंपियाड को सहज, सुलभ और सुव्यवस्थित बनाया। तकनीक और अध्यात्म का यह सुंदर समन्वय इस महोत्सव की सुदृढ़ आधारशिला सिद्ध हुआ।

Geetajayanti.com पोर्टल ने साधकों को इस उत्सव को मनाने हेतु अनेक सुविधा उपलब्ध कराई। पंजीयन, पारायण से संबंधित आवश्यक सामग्री, अपने आसपास होने वाले कार्यक्रमों की सूचना तथा आयोजकों हेतु भी विशेष प्रशस्ति पत्रक भी इस पोर्टल पर उपलब्ध थे। जिसने इस आयोजन को और भी सरल बनाकर दिव्य गति प्रदान की।

गीता जयंती महोत्सव 2025 ने अपनी व्यापकता और सहभागिता के माध्यम से उल्लेखनीय कीर्तिमान स्थापित किए।1335 पंजीकृत कार्यक्रमों का आयोजन 472 शहरों और 33 देशों में हुआ।

शोभा यात्राएँ, गीता पारायण, समूह कार्यक्रम, संगीतमयगीता पारायण, विभिन्न मनोरंजनात्मक सामूहिक गतिविधियाँ - क्विज: गीता ज्ञानपति, drawing, गीता अंत्याक्षरी, बुक स्टॉल एवं गीता प्रचार स्टॉल आदि विभिन्न कार्यक्रम

—प्रत्येक आयोजन ने गीता को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया।

गीता शोभायात्रा, संगीतमय पारायण, गीताचिंतन उद्बोधन एवं बच्चों की विशेष प्रतियोगितायें इस बार के महोत्सव के विशेष आकर्षण थे।

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2026-01/giitaa-jyntii-mhotsv/onphlaain-kii-taiyaarii-tkniikii-shyog-aur-bhvy-uplbdhiyaan/

ऑनलाइन विशेष आयोजन; गीता साधना का अभिनव आयाम

२ मिनट पठन • ५ चित्र

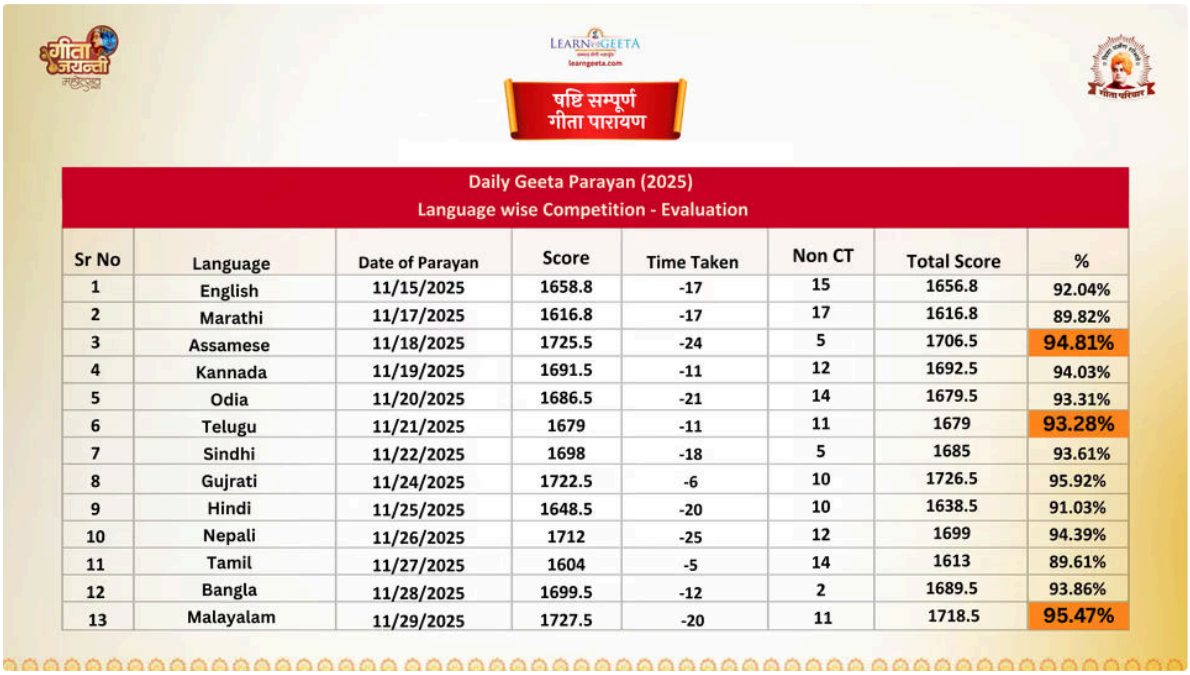




ऑनलाइन षष्टि सम्पूर्ण गीता पारायण की तिथियों और पंजीकरण की जानकारी देता गीता जयन्ती महोत्सव 2025 का बैनर।



ऑनलाइन षष्टि सम्पूर्ण गीता पारायण का हिन्दी पोस्टर, जिसमें वीणा बजाते श्रीकृष्ण के चित्र के साथ 15 नवम्बर से 31 दिसम्बर तक के प्रतिदिन के पारायण समय और मोक्षदा एकादशी के अखंड पारायण की सूचना है।



Daily Geeta Parayan (2025)
Language wise Competition - Evaluation

Sr No	Language	Date of Parayan	Score	Time Taken	Non CT	Total Score	%
1	English	11/15/2025	1658.8	-17	15	1656.8	92.04%
2	Marathi	11/17/2025	1616.8	-17	17	1616.8	89.82%
3	Assamese	11/18/2025	1725.5	-24	5	1706.5	94.81%
4	Kannada	11/19/2025	1691.5	-11	12	1692.5	94.03%
5	Odia	11/20/2025	1686.5	-21	14	1679.5	93.31%
6	Telugu	11/21/2025	1679	-11	11	1679	93.28%
7	Sindhi	11/22/2025	1698	-18	5	1685	93.61%
8	Gujrati	11/24/2025	1722.5	-6	10	1726.5	95.92%
9	Hindi	11/25/2025	1648.5	-20	10	1638.5	91.03%
10	Nepali	11/26/2025	1712	-25	12	1699	94.39%
11	Tamil	11/27/2025	1604	-5	14	1613	89.61%
12	Bangla	11/28/2025	1699.5	-12	2	1689.5	93.86%
13	Malayalam	11/29/2025	1727.5	-20	11	1718.5	95.47%

भाषावार दैनिक गीता पारायण प्रतियोगिता की मूल्यांकन तालिका, जिसमें तेरह भाषाओं के अंक, तिथि और प्रतिशत दर्ज हैं।

- महोत्सव के अंतर्गत **60 पारायणों** द्वारा षष्ठि संपूर्ति का पुण्य अवसर प्राप्त हुआ। जिसमें **1080 सेवक और साधक**, समाज की **35 विभिन्न श्रेणियों** से आकर इस यज्ञ में सहभागी बने।


GEETA JAYANTI 2025

Geeta Jayanti Mahotsav Online Parayan Schedule 2025

Date				Time	Language/Department	Colour Code	Slots
Nov 15	SAT	6.30AM	Sampoorna Parayana	7.30 PM	English	Red	Slot 1 & 2
Nov 16	SUN	6.30AM	Sampoorna Parayana		Sr.citizen Sewa	Green	Slot 3
Nov 17	MON	6.30AM	1st Adhyaya	7.30 PM	Marathi	Golden	Slot 5
Nov 18	TUE	6.30AM	2nd Adhyaya	7.30 PM	Assamese	Royal Blue	Slot 6
Nov 19	WED	6.30AM	3rd Adhyaya	7.30 PM	Kannada	Maroon	Slot 7
Nov 20	THU	6.30AM	4th Adhyaya	7.30 PM	Odia	Purple	Slot 8
Nov 21	FRI	6.30AM	5th Adhyaya	7.30 PM	Telugu	Sky Blue	Slot 9
Nov 22	SAT	6.30AM	6th Adhyaya	7.30 PM	Sindhi	Yellow	Slot 10
Nov 23	SUN	6.30AM	Sampoorna Parayana		Group Schools		Slot 11
Nov 24	MON	6.30AM	7th Adhyaya	7.30 PM	Gujratti	Pink	Slot 12
Nov 25	TUE	6.30AM	8th Adhyaya	7.30 PM	Hindi	Brown	Slot 13
Nov 26	WED	6.30AM	9th Adhyaya	7.30 PM	Nepali	Orange	Slot 14
Nov 27	THU	6.30AM	10th Adhyaya	7.30 PM	Tamil	Bottle Green	Slot 15
Nov 28	FRI	6.30AM	11th Adhyaya	7.30 PM	Bangla	Parrot Green	Slot 16
Nov 29	SAT	6.30AM	12th Adhyaya	7.30 PM	Malayalam	Grey	Slot 17
Nov 30	SUN	6.30AM	Sampoorna Parayana		NRI	Yellow	Slot 18
Dec 1	MON	6.30AM	Akhanda	10.00 PM	Akhanda	V I B G O R	Slot 19 -25
Dec 2	TUE	6.30AM	13th Adhyaya	7.30 PM	Msg Forwarding Team	Red	Slot 26
Dec 3	WED	6.30AM	14th Adhyaya	7.30 PM	IT team	Maroon	Slot 27
Dec 4	THU	6.30AM	15th Adhyaya	7.30 PM	Admission team	Purple	Slot 28
Dec 5	FRI	6.30AM	16th Adhyaya	7.30 PM	Bc	Royal Blue	Slot 29
Dec 6	SAT	6.30AM	17th Adhyaya	7.30 PM	Pracharak	Orange	Slot 30
Dec 7	SUN	6.30AM	Sampoorna Parayana		GenZ	White	Slot 32
Dec 8	MON	6.30AM	18th Adhyaya	7.30 PM	Gc	Parrot Green	Slot 32
Dec 9	TUE	6.30AM	1st Adhyaya+Chintan	7.30 PM	Literature team	Bottle Green	Slot 34
Dec 10	WED	6.30AM	2nd Adhyaya+Chintan	7.30 PM	Tech	Sky Blue	Slot 35
Dec 11	THU	6.30AM	3rd Adhyaya+Chintan	7.30 PM	Anchor	Blue	Slot 36
Dec 12	FRI	6.30AM	4th Adhyaya+Chintan	7.30 PM	Vichakshana	Navy Blue	Slot 37
Dec 13	SAT	6.30AM	5th Adhyaya+Chintan	7.30 PM	KK	White with boarder	Slot 38
Dec 14	SUN	6.30AM	Sampoorna Parayana		GV Sadhak	Golden	Slot 39
Dec 15	MON	6.30AM	Sampoorna Parayana	7.30 PM	Exkm	Golden	Slot 40
Dec 16	TUE	6.30AM	6th Adhyaya+Chintan	7.30 PM	Monitor	Brown	Slot 42
Dec 17	WED	6.30AM	7th Adhyaya+Chintan	7.30 PM	Shringeri	Gray	Slot 43
Dec 18	THU	6.30AM	8th Adhyaya+Chintan	7.30 PM	Mentor	Red	Slot 44
Dec 19	FRI	6.30AM	9th Adhyaya+Chintan	7.30 PM	Store MGMT	Orange	Slot 45
Dec 20	SAT	6.30AM	10th Adhyaya+Chintan	7.30 PM	Event Management	Yellow	Slot 47
Dec 21	SUN	6.30AM	Sampoorna Parayana		GV Kids	White	Slot 46
Dec 22	MON	6.30AM	11th Adhyaya+Chintan	7.30 PM	Bala sakha	Parrot Green	Slot 48
Dec 23	TUE	6.30AM	12th Adhyaya+Chintan	7.30 PM	Group Class	Sky Blue	Slot 49
Dec 24	WED	6.30AM	13th Adhyaya+Chintan	7.30 PM	Grammar & Extra Class	Green	Slot 50
Dec 25	THU	6.30AM	14th Adhyaya+Chintan	7.30 PM	Graphics	Navy Blue	Slot 51
Dec 26	FRI	6.30AM	15th Adhyaya+Chintan	7.30 PM	Calling	Royal Blue	Slot 52
Dec 27	SAT	6.30AM	16th Adhyaya+Chintan	7.30 PM	Trainer	Maroon	Slot 53
Dec 28	SUN	6.30AM	Sampoorna Parayana		Offline Sewa	Red	Slot 54
Dec 29	MON	6.30AM	17th Adhyaya+Chintan	7.30 PM	Vrochan & Writing Team	Grey	Slot 55
Dec 30	TUE	6.30AM	18th Adhyaya+Chintan	7.30 PM	NRI	Bottle Green	Slot 56
Dec 31	WED	6.30AM	Akhanda	10.00 PM	Poornahuti	G B P P	Slot 57 - 60

- 13 भाषाओं में पारायण प्रतियोगिता ने गीता की सार्वभौमिकता को सजीव रूप में प्रस्तुत किया।
- दैनिक प्रातः 6.30 बजे एक अध्याय पारायण एवं सायंकाल 7.30 बजे संपूर्ण पारायण रखे गए, रविवार विशेष पाठ तथा
- **18 दिनों में 18 अध्याय चिंतन** इस ऑनलाइन प्रयोजन का अप्रतिम हिस्सा था।

यह विशेष ऑनलाइन आयोजन गीता परिवार के अंतर्राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष **आदरणीय डॉ. आशु जी गोयल** के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। उनकी गहन, रोचक और प्रभावशाली शैली ने इस चिंतन को साधकों के लिए अत्यंत उपयोगी एवं स्मरणीय बना दिया। 18 दिनों में सम्पूर्ण गीता के मर्म को समझने के लिए यह 18 विवेचनो की श्रृंखला गीता प्रेमी साधकों के लिए गीता ज्ञान के अथाह सागर का एक दैवीय जहाज प्रतीत होता है।

- विशेष एकादशी तिथियों पर आयोजित संपूर्ण एवं बहु-चक्र पारायणों ने सामूहिक साधना को नई ऊँचाई प्रदान की। 1 दिसंबर को मोक्षदा एकादशी के अवसर पर प्रातः 6:30 से मध्यरात्रि तक निरंतर **'अखंड गीता पारायण'** संपन्न हुआ, जो इस आयोजन का मुख्य आकर्षण रहा। इस सम्पूर्ण ऑनलाइन गीता जयन्ती महोत्सव में लगभग 4 लाख ऑनलाइन गीताप्रेमी सम्मिलित हुए।
- 31 दिसम्बर का पूर्णाहुति पारायण इस महोत्सव का आध्यात्मिक शिखर सिद्ध हुआ।
- डिजिटल माध्यम learngeeta.com द्वारा सभी प्रस्तुतियों का Live प्रसारण किया गया। जिससे इस कार्यक्रम ने गीता के जयघोष को वैश्विक स्तर पर पहुँचाने में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है।

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/giitaa-jyntii-mhotsv/onnlaain-vishess-aayojn-giitaa-saadhnaa-kaa-abhinv-aayaam/

04

०४ गीता जयंती महोत्सव

गीता ओलंपियाड – एक दिव्य यात्रा

४ मिनट पठन • ३ चित्र



गीता जयन्ती ओलम्पियाड का नेपाली भाषा का पोस्टर, जिसमें 1 दिसम्बर 2025 से 31 जनवरी 2026 तक निःशुल्क पंजीकरण की घोषणा है।



गीता जयंती ओलंपियाड का आधिकारिक लोगो।



गीता जयन्ती महोत्सव 2025 का अंग्रेज़ी प्रचार पोस्टर, जिसमें 15 नवम्बर से 31 दिसम्बर तक शोभायात्रा, सामूहिक गतिविधि, गीता पारायण और पुस्तक स्टॉल की जानकारी और ऑफलाइन आयोजन के लिए QR कोड दिया गया है।

“गीता पढ़ें, पढ़ाएँ, जीवन में लाएँ” इस पावन ध्येय-वाक्य को हृदय में धारण किए **LearnGeeta महाभियान** का दिव्य रथ आज अपनी यात्रा के ऐसे स्वर्णिम क्षितिज पर आ पहुँचा है, जहाँ श्रीमद्भगवद्गीता केवल ग्रंथ नहीं, बल्कि **जीवन का जीवंत मार्गदर्शन** बनकर अवतरित हो रही है। गीता को व्यवहार में उतारना—यही इस महाअभियान का मूल संकल्प है।

इसी संकल्प की पुष्पित-पल्लवित वाटिका में **गीता ओलंपियाड** एक ऐसे **कुमुद-सरोवर** के रूप में शोभायमान हुआ है, जिसकी मनोहारी आभा ने जन-मानस को आकृष्ट ही नहीं किया, बल्कि उसे ज्ञान और आनंद की अविरल धारा में स्नान करा दिया। इस उपक्रम ने श्रीमद्भगवद्गीता के दिव्य आध्यात्मिक ज्ञान को अनुष्ठानों की सीमाओं से बाहर निकालकर **सरल, सुबोध और सर्वसुलभ** रूप में समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया है।

खेल, कौशल और संस्कार—एक अद्भुत संगम

25 से अधिक गतिविधियों और सृजनात्मक खेलों के माध्यम से गीता के सूक्ष्म सूत्रों को जीवन में उतारने का एक सहज राजमार्ग निर्मित किया गया। इनमें—

‘अर्जुन के बाण’ (Archery): लक्ष्य-सिद्धि हेतु एकाग्रता, अभ्यास और साधना का महत्व सिखाया

‘अमृत कलश’:जीवन के पाथेय का चयन और मूल्यबोध कराया

स्नेक गेम’:सुख-दुःख की परिस्थितियों में समता और संतुलन का अभ्यास सिखाया

डिवाइन कलरिंग’:द्वारा सबने गीता-सूत्रों में स्थिरता और ध्यान का विकास सीखा

गौ-सेवा एवं संस्कार-सृजन: से सर्वभूत हिते रता:के भाव का प्रस्फुटन सभी के हृदय में हुआ

इन सभी नवाचारों ने मोबाइल गेमिंग की आकर्षक किंतु दिशाहीन प्रवृत्ति को **रोचक, लाभदायक, ज्ञानवर्धक और जीवन-परिवर्तनकारी** अनुभव में रूपांतरित कर दिया। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि बच्चों और युवाओं को खेल-खेल में अध्यात्म से जोड़ने हेतु गीता के सूत्रों को **Gamified** किया गया।

एक वैश्विक महायज्ञ | सहभागिता और विस्तार

यह आयोजन केवल भारत तक सीमित न रहकर एक **वैश्विक आध्यात्मिक महायज्ञ** के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

कुल सहभागिता: 43,155 सक्रिय प्रतिभागी

महिला शक्ति की प्रभावशाली उपस्थिति: 43% महिलाएँ (18,443), 20% पुरुष (8,607), तथा अन्य सहभागी—सभी ने अतिउत्साह से भाग लिया

वैश्विक विस्तार: भारत के 5,723 शहरों से 38,915 प्रतिभागियों के साथ अमेरिका (443), यूके (184), कनाडा (159) और ऑस्ट्रेलिया (86) सहित सहित विश्व के अन्य देशों से भी लोग इस आध्यात्मिक

प्रवाह में सम्मिलित हुए।

निष्ठा, पुरुषार्थ और तकनीकी सुदृढ़ता

इस विराट आयोजन के पीछे असंख्य निष्ठावान सेवियों का अथक और समर्पित पुरुषार्थ निहित है।

10 भाषाओं में आयोजन: इसे हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, गुजराती, बंगाली, ओडिया और नेपाली में उपलब्ध कराया गया।

5,000+ प्रश्नों का विशाल प्रश्न-बैंक: ओलम्पिआड की सेवी टीम ने 5,000 से अधिक अनूठे प्रश्नों का बैंक तैयार किया, जो सनातन धर्म और गीता के ज्ञान के साथ साथ गीता परिवार के पञ्चसूत्रीय सिद्धांत पर आधारित थे।

सुदृढ़ तकनीकी सुरक्षा: लोकप्रियता के साथ आए साइबर-आक्रमणों को आईटी टीम द्वारा विकसित अभेद्य सुरक्षा प्रणाली ने हर बार निष्फल कर दिया।

तीन आयु-वर्ग, एक साध्य

सुव्यवस्थित संचालन और व्यापक सहभागिता हेतु ओलंपियाड को तीन आयु-वर्गों में विभाजित किया गया है

1. **अभिमन्यु वर्ग:** 20 वर्ष से कम

2. **अर्जुन वर्ग:** 20 से 40 वर्ष

3. **भीष्म वर्ग:**40 वर्ष से अधिक

प्रत्येक वर्ग से सेमीफाइनल प्रतियोगिताओं द्वारा शीर्ष 3–3 प्रतिभागियों का चयन किया जाएगा, जो **1 मार्च** को होने वाले **मेगा फाइनल** में आमने-सामने होंगे।

सम्मान और प्रेरणा

विजेताओं के लिए सम्मान राशि भी उतनी ही भव्य एवं प्रेरक राखी गई है

प्रथम पुरस्कार: ₹1,00,000 + ट्रॉफी

द्वितीय पुरस्कार: ₹51,000 + ट्रॉफी

तृतीय पुरस्कार: ₹21,000 + ट्रॉफी

गीता ओलंपियाडने प्रतिस्पर्धा की पारंपरिक परिभाषा को परिवर्तित कर उसे **ईश्वर-भक्ति, आत्म-विकास और लोकमंगल** के रंग में रंग दिया है। आधुनिक तकनीक और विज्ञान के इस युग में यह एक **दिव्य शंखनाद** है—एक ऐसा आह्वान, जो घर-घर, विद्यालयों, महाविद्यालयों, कॉर्पोरेट जगत, ग्रामों-नगरों और विश्व-पटल पर गूँज रहा है। **"हर घर गीता, हर कर गीता"** इस दैवीय अभियान का यह दिव्य रथ प्रत्येक व्यक्ति के सामान्य जीवन का अभिन्न अंग बनकर **सनातन भारतीय ज्ञान-परंपरा** का पोषण और संवर्धन करता रहेगा।

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2026-01/giitaa-jyntii-mhotsv/giitaa-olnpiyaadd-ek-divy-yaatraa/

04

०४ गीता जयंती महोत्सव

आज का कुरुक्षेत्र, आज का युद्ध

आज का कुरुक्षेत्र कोई भौगोलिक भूमि नहीं, बल्कि प्रत्येक मनुष्य का अंतःकरण है। आज का युद्ध शस्त्रों से नहीं, बल्कि विचारों, मूल्यों और विवेक के बीच लड़ा जा रहा है। लोभ, अहंकार और स्वार्थ आधुनिक कौरव हैं, जबकि सत्य, करुणा, कर्तव्य और आत्मसंयम हमारे पांडव हैं।

३ मिनट पठन · १ चित्र

आज का अर्जुन बाह्य युद्ध नहीं, बल्कि आंतरिक द्वंद्व से जूझ रहा है—और इस युद्ध में आज भी श्रीकृष्ण रूपी गीता ही सच्ची सारथी है।

"नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव॥"

श्लोक सुनें
१८७३

जैसे अर्जुन ने श्रीकृष्ण के उपदेश से मोह का नाश कर कर्तव्य का मार्ग अपनाया, वैसे ही आज का साधक भी गीता से जीवन की दिशा, आत्मविश्वास और धर्ममय आचरण का संबल प्राप्त करता है। इस महोत्सव ने गीता को अध्ययन से आगे बढ़ाकर जन-आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया।

यह गीता जयंती महोत्सव 2025 सदैव स्मरणीय रहेगा। इसने साधकों के हृदय में भक्ति और अध्यात्म की ज्योति प्रज्वलित की, सेवा और संगठन की भावना को सुदृढ़ किया तथा गीता को जीवन का व्यवहारिक मार्गदर्शक बनाकर प्रतिष्ठित किया।

अब से ही साधक आगामी गीता जयंती महोत्सव की प्रतीक्षा में उत्सुक हैं।

हर घर गीता, हर कर गीता

https://jayanti.learngeeta.com

महत्वपूर्ण आँकड़े

आयोजन अवधि : 15 नवम्बर 2025 से 31 दिसम्बर 2025

कुल अवधि: 47 दिन

माध्यम: ऑनलाइन एवं ऑफलाइन

सहभागिता विस्तार

कुल पंजीकृत कार्यक्रम: 1335

शहरों की संख्या: 472

देशों की संख्या: 33

कार्यक्रम प्रकार

शोभा यात्रा: 56

पारायण: 1113

समूह कार्यक्रम: 207

मनोरंजनात्मक (Fun): 112

गीता प्रचार / पुस्तक स्टॉल: 30

संगीतमय पारायण: 52



गीता जयन्ती महोत्सव 2025 का आधिकारिक लोगो, जिसमें शंख बजाते श्रीकृष्ण और अर्जुन का चित्र अंकित है।

विशेष ऑनलाइन साधना आयोजन

षष्ठि संपूर्ति पारायण: 60

कुल सेवक व साधक: 1080

सहभागिता श्रेणियाँ: 35

पारायण भाषाएँ: 13

नियमित कार्यक्रम

प्रातः 6:30 – एक अध्याय पारायण (2 राउंड पूर्ण)

सायं 7:30 – संपूर्ण पारायण

रविवार – संपूर्ण पारायण

18 दिन – 18 अध्याय चिंतन

एकादशी विशेष पारायण

15 नवम्बर – संपूर्ण पारायण

1 दिसम्बर – 7 राउंड

15 दिसम्बर – 5 राउंड

31 दिसम्बर – पूर्णाहुति पारायण

गीता ओलंपियाड

विभिन्न आयु वर्ग

25+ गतिविधियाँ

5+ खेल

बहुभाषी, बहुदेशीय सहभागिता

अनेक आकर्षक पुरस्कार एवं सम्मान वितरण

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/giitaa-jyntii-mhotsv/aaj-kaa-kurukssetr-aaj-kaa-yuddh/

संगीतमय सस्वर पारायण - गीता जयन्ती महोत्सव लखनऊ

२ मिनट पठन • ९ चित्र • १ वीडियो



लखनऊ में गीता जयन्ती महोत्सव के संगीतमय सस्वर पारायण में मंच पर पाठ करती पाँच सस्वर पाठिकाएँ।



Youtube:





परमात्मा के पावन आशीर्वाद से सम्पन्न गीता जयन्ती महोत्सव लखनऊ में हुए संगीतमय गीता पारायण के स्वर जिसने भी उसे सुना उसके हृदय में अभी तक गूंज रहे हैं। 5162वीं गीता जयन्ती का भव्य आयोजन **30 नवम्बर 2025** के शुभ अवसर लखनऊ में सम्पन्न हुआ। वैदिक मंत्रोच्चारयुक्त **भव्य गीता पोथीयात्रा** से आरम्भ इस कार्यक्रम में लगभग **1000 गीता साधक सेवियों ने श्रीमद्भगवद्गीता के सम्पूर्ण 18 अध्यायों का संगीतमय पारायण** 20 धुनों में किया, जो अद्वितीय अनुभव था।

परम पूज्य स्वामीजी के संदेश भी सभी ने ऑनलाइन सुनकर उनके शुभाशीर्वाद प्राप्त किये। मुख्य अतिथि के रूप में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय के डीन आ.श्री राजाराम शुक्ल जी पधारे। उन्होंने भी सभी कि अत्यंत सराहना की एवं किस प्रकार गीता परिवार सभी में भक्ति भावना का वर्धन कर रहा है इस बिन्दु पर जोर दिया।





गीता पारायणियों **ज्योति दीदी, रूपल दीदी, कविता दीदी, पूजा भाभी, मनीषा दीदी** द्वारा संगीत वाद्यों के साथ ऐसी दिव्य सम्पूर्ण 18 अध्यायों की प्रस्तुति दी गयी जिसे देख ऑनलाइन व ऑफ़लाइन सभी लोग रोमांचित हो उठे। पूरे समय **LED स्क्रीन पर गीता श्लोकों की स्लाइड** भी चलती रहीं। सम्पूर्ण गीता पारायण का एक आदर्श स्वरूप हमें देखने को मिला।




लर्नगीता के कार्यक्रम निदेशक व गीता परिवार के अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष हमारे **आ.आशू भैया** ने अपने गीतासन्देश से उपस्थित सभी जनों को एक नये उत्साह उमंग से भर दिया। उनके शब्द गीता के भावों से ओतप्रोत व आनंद से परिपूर्ण थे।

गीता परिवार उत्तर प्रदेश के संरक्षक आ. राजेंद्र गोयल जी ने हर घर गीता हर कर गीता के विषय को आधार बनाकर सभी को अधिक से अधिक प्रचार करने को कहा।

वैदिक गुरुकुलों से पधारे सभी बटुक, आचार्य, प्राचार्य, महंत, पुजारी एवं सभी सनातन रक्षकों को तिलककर, पटका पहनाकर, दक्षिणा देकर उनका सम्मान किया गया।

विलक्षण गीता प्रात्यक्षिक के सभी ने दर्शन किए जिसमे मुख्य अतिथि ने खड़े होकर उसकी सराहना की।

निष्काम भाव से 200 से अधिक कार्यकर्ताओं ने दिन रात लगकर इस कार्यक्रम को सम्पन्न किया। सभी के हृदय में यह अलौकिक अनुभव चिरस्थायी हो गया!



वीडियो देखने के लिए स्कैन करें

YouTube ↗

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/giitaa-jyntii-mhotsv/sngiitmy-ssvr-paaraaynn-giitaa-jyntii-mhotsv-lkhnuu/

05

When the Gītā Found New Homes Gītā Jayanti Across the World — A LearnGeeta & GeetaPariwar Journey

When the Gītā Found New Homes Gītā Jayanti Across the World — A LearnGeeta & GeetaPariwar Journey पृष्ठ ६५

When the Gītā Found New Homes Gītā Jayanti Across the World — A LearnGeeta & GeetaPariwar Journey

Some journeys are not measured in distance, but in depth.

4 min read · १४ चित्र



A certificate is presented at the Gita programme held at the Swami Vivekananda Cultural Centre, Embassy of India, Bangkok.

Gītā Jayanti Across the World — A LearnGeeta & GeetaPariwar Journey





This Gītā Jayanti, a quiet yet historic transformation unfolded across the world. In cities where the Bhagavad Gītā had long remained a private companion, its verses were recited aloud. In places where such a celebration had never been imagined, people gathered—not as observers, but as participants in living wisdom.

What emerged was not merely a global series of events, but a shared spiritual experience—guided by Geeta Pariwar and nurtured through LearnGeeta—where the Gītā was not just remembered, but lived.

From Indian Roots to Global Resonance

For generations, Gītā Jayanti has been deeply rooted in India's spiritual life. This year, that rootedness travelled across Asia, the Middle East, Europe, Australia, and North America—carried forward by volunteers who, though geographically distant from Bharat, remain deeply connected to its timeless wisdom.

With no fixed templates or precedents, volunteers transformed homes, halls, and community spaces into centres of recitation, reflection, and quiet joy. What guided them was not scale, but sincerity—an unwavering intent to offer the Gītā with dignity and respect.

A Global Presence, a Shared Spirit

From Qatar and Bahrain to Japan, from Europe to Australia and North America, Gītā Jayanti took form in ways that honoured local cultures while preserving spiritual sanctity.In the Middle East, celebrations were marked by restraint and reverence, offering families moments of reconnection with ethical and inner values.









In Japan, shloka recitation and reflective silence resonated deeply with cultural ideals of mindfulness and discipline—introducing many to the Gītā as a philosophy of conscious action rather than a distant scripture.







Across Europe, elders and youth gathered together, bridging generations through recitation and discussion.
In Australia and North America, community participation flourished through Adhyāya recitations, music, children-led presentations, and reflective dialogue—often planting the seeds for ongoing study circles.

Each region expressed the Gītā in its own voice—yet the essence remained unmistakably one.

Moments That Spoke Beyond Words

Some moments quietly affirm the universality of wisdom.

In Thailand, Geeta Pariwar received a Community Leadership Award—recognition that seva, when offered with humility, earns trust even beyond spiritual circles.



/view?usp=drive_link



/view?usp=drive_link

In Japan, the invitation to present the Bhagavad Gītā at the historic Tōdai-ji Temple in Nara marked a profound moment of cultural acceptance. Academic interest and diplomatic engagement followed naturally—affirming that when the Gītā is shared with clarity and sensitivity, it speaks across institutions and cultures.

Not outreach, but acceptance.
Not expansion, but resonance.

A Vision That Enabled Global Ownership

Such global participation is not accidental. It is the outcome of years of quiet preparation and a deeply thoughtful vision.

Under the guidance of **Dr. Ashu Goyal**, International Working President of Geeta Pariwar and Program Director of LearnGeeta, the focus has remained clear: the Gītā can truly travel the world only when it is locally owned, contextually understood, and authentically lived.

Rather than centralised direction, volunteers were empowered through structured learning, continuous mentoring, and cultural sensitivity without dilution. Guided yet independent, aligned yet self-reliant, teams across the world were prepared not merely to host an event—but to carry the Gītā forward sustainably.

Beyond a Celebration

Gītā Jayanti 2025 did more than mark a sacred day.
In many places, it marked a beginning.





Study circles are emerging. Families are seeking deeper engagement. Volunteers are stepping forward with renewed confidence. What began as a celebration has quietly become a movement—one rooted in reflection, discipline, and shared responsibility.

“The Gītā travelled not through instruction, but through authenticity.”

“Across continents, forms differed—but the essence remained one.”

“Not outreach, but acceptance. Not expansion, but resonance.”

“When wisdom is shared with respect, it naturally finds a home.”

GĪTĀ JAYANTI 2025: AT A GLANCE

- 33+ countries
- 78+ cities
- 3000+ participants
- 50+ volunteer teams
- 100+ programmes across time zones

A global footprint shaped by devotion, discipline, and quiet leadership.

WHAT MADE THIS POSSIBLE

- Local ownership over central control
- Cultural sensitivity without dilution
- Structured preparation of volunteers
- Trust, independence, and alignment
- Focus on living the Gītā, not showcasing it

KEY TAKEAWAYS FOR OTHERS

- **Authenticity builds acceptance**
- **Discipline creates dignity**
- **Empowered volunteers sustain movements**
- **Spiritual wisdom thrives when adapted with respect**
- **One scripture can speak through many cultures**

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/when-the-gita-found-new-homes-gita-jayanti-across-the-world/when-the-gita-found-new-homes-gita-jayanti-across-the-world/

06

LearnGeeta के माध्यम से गीता अध्ययन का विकास

LearnGeeta के माध्यम से गीता अध्ययन का विकास	पृष्ठ ७३
L1 उद्घाटन समारोह	पृष्ठ ७५
विभिन्न L2, L3 ,L4 वर्गों के शुभारम्भ समारोह	पृष्ठ ८३
गीता मैत्री मिलन	पृष्ठ ८७
चिंतनिका सत्र	पृष्ठ ९४
“आओ, गीता सेवी बनें” — सेवा का सहज, स्वाभाविक और जीवन्त मार्ग	पृष्ठ ९७

LearnGeeta के माध्यम से गीता अध्ययन का विकास

१ मिनट पठन • ६ चित्र



“घर-घर गीता, हर कर गीता—अब उद्घोष नहीं, जीवन-दिशा बन चुका है।”

SIDEBAR | क्यों जुड़ें?

- गीता केवल अध्ययन नहीं, **जीवन-संस्कार** है
- अनुशासन, संतुलन और स्पष्टता का अभ्यास
- वैश्विक साधकों के साथ **सामूहिक साधना**

“गीता-पथ पर पहला कदम, जीवन की दिशा बदल देता है।”

SIDEBAR | साधना का प्रवाह

पाठ मनन स्मरण आत्मसात

(स्तर एक से स्तर चार तक क्रमिक विकास)

“यह यात्रा सबके लिए खुली है—जो अपने जीवन में उद्देश्य चाहते हैं।”





मंच पर अतिथि को स्मृति-चिह्न भेंट कर सम्मानित किया जा रहा है।







गीता जयंती के वैश्विक आयोजनों और 'प्ले विद गीता' डिजिटल अनुभव को दर्शाता न्यूज़लेटर स्लाइड।

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/learngeeta-ke-maadhym-se-giitaa-adhyyn-kaa-vikaas/learngeeta-ke-maadhym-se-giitaa-adhyyn-kaa-vikaas/



L1 उद्घाटन समारोह

१२ मिनट पठन · ८ चित्र

घर-घर गीता : एक वैश्विक संकल्प की साकार यात्रा

परम पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरी जी महाराज का दिव्य उद्घोष—

"घर-घर गीता, हर कर गीता"—

आज विश्व के अनेक देशों में **जीवंत अनुभूति** बनकर प्रकट हो रहा है। स्तर एक से जुड़ते साधकों की निरंतर बढ़ती संख्या इस तथ्य की साक्षी है कि गीता अब केवल ग्रंथ नहीं, **जीवन-मार्गदर्शक** बन चुकी है।

पिछले छह महीनों में स्तर एक के चार वर्गों का शुभारम्भ हुआ। साधकों ने प्रथम चरण पूर्ण कर स्तर दो, फिर क्रमशः स्तर तीन और चार तक प्रगति की—श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोकों का **पाठ, मनन, स्मरण और आत्मसात** करते हुए। जुलाई से दिसंबर तक सभी स्तरों की तीन-तीन टुकड़ियों के शुभारम्भ समारोह श्रद्धा और सामूहिक संकल्प के साथ सम्पन्न हुए।

परम पूज्य स्वामी जी के मार्गदर्शन में गीता परिवार का उद्देश्य केवल आरम्भ कराना नहीं, बल्कि साधकों की साधना को **स्थायी और सुदृढ़** बनाना है। इसी भाव से भारत के प्रतिष्ठित सनातन मठों से **ईश्वर-समर्पित, ओजस्वी साधु-संतों** का सान्निध्य साधकों को प्राप्त होता है—जो इस यात्रा को परंपरा, प्रेरणा और आशीर्वाद से समृद्ध करता है।

यह केवल एक कार्यक्रम नहीं, जीवन की दिशा है।

जो भी अपने जीवन में स्पष्टता, संतुलन और उद्देश्य की खोज में हैं, उनके लिए गीता-पथ का द्वार खुला है।

आह्वान:

आइए—इस वैश्विक साधना का अंग बनें।



लगभग 16,000 प्रशिक्षार्थियों के स्तर-2 के 40वें बैच का शुभारम्भ समारोह, 11 जुलाई 2025 को ज़ूम पर।

इक्तालीसवाँ शुभारम्भ समारोह

गीता-पथ पर वैश्विक सहभागिता का एक और सशक्त चरण

18 जुलाई को सम्पन्न इक्तालीसवाँ शुभारम्भ समारोह गीता-पथ की यात्रा में एक **ऐतिहासिक और प्रेरणादायी अध्याय** के रूप में अंकित हुआ। इस पावन अवसर पर पूज्य स्वामी अनंतदास जी महाराज (इस्क्कोन, मुंबई) का विशेष अतिथि के रूप में सान्निध्य प्राप्त होना साधकों के लिए अत्यंत सौभाग्य का विषय रहा। इस वर्ग में **पचहत्तर देशों से लगभग चालीस हज़ार गीताप्रेमी साधकों** का जुड़ना, इस तथ्य का सशक्त प्रमाण है कि गीता आज वैश्विक चेतना का केंद्र बन रही है।

> मुख्य झलक
>
> गीता अध्ययन अब सीमाओं में बँधा अभ्यास नहीं, विश्वव्यापी साधना बन चुका है।

पूज्य स्वामी अनंतदास जी महाराज का जीवन स्वयं गीता के कर्मयोग का सजीव उदाहरण है। अल्पायु से ही ईश्वर-चिंतन में रत स्वामीजी को परम पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरी जी महाराज के प्रति अपार श्रद्धा प्राप्त है। कंप्यूटर विज्ञान में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त कर उन्होंने माइक्रोसॉफ्ट और वेरिटास जैसे प्रतिष्ठित संगठनों में कार्य किया, किंतु राष्ट्र और समाज के प्रति गहन उत्तरदायित्व-बोध ने उन्हें सांसारिक उपलब्धियों से विरक्त कर **मानवता-सेवा के पथ** पर अग्रसर कर दिया।

> प्रेरक बिंदु
>
> गीता का पथ केवल अध्ययन नहीं, सेवा और उत्तरदायित्व का जीवन-दर्शन है।

स्वामी अनंतदास जी महाराज के विचार

अपने उद्बोधन में स्वामीजी ने साधकों का ध्यान एक गहन दार्शनिक सत्य की ओर आकृष्ट किया। उन्होंने बताया कि आज अंतरराष्ट्रीय मंचों पर *Mindfulness*, कर्तृत्व-बोध और कर्ता कौन है जैसे विषयों पर व्यापक विमर्श हो रहा है। हाल ही में सिंगापुर में आयोजित एक गोष्ठी में चीनी दर्शन की तुलना भारतीय गीता-विज्ञान से की गई।



स्वामीजी ने स्पष्ट किया कि चाहे वह लाओत्से हों, बौद्ध दर्शन हो अथवा कोई अन्य बौद्धिक परंपरा—जिन प्रश्नों पर आधुनिक विश्व आज मंथन कर रहा है, उनके **सुस्पष्ट उत्तर श्रीभगवान ने सहस्रों वर्ष पूर्व श्रीमद्भगवद्गीता में प्रदान कर दिए हैं**। उन्होंने साधकों को हृदयपूर्वक बधाई दी कि वे अपनी क्षमता और सुविधा के अनुसार गीता को कंठस्थ कर रहे हैं, परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर रहे हैं और साधनामार्ग पर दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ रहे हैं।

“आज जिन सत्यों को विश्व खोज रहा है, वे गीता में पहले से ही प्रकाशित हैं।”

स्वामीजी ने वर्तमान समाज में विकसित हो रही हाइप-संस्कृति पर भी विचार प्रकट किए, जिसमें गीता के शाश्वत तत्त्वों को नए नाम देकर पश्चिमी उद्गम का बताया जाता है। कोई उन्हें बौद्ध दर्शन से जोड़ता है, कोई ईसाई परंपरा से—जबकि इन सभी का मूल स्रोत **गीता और वैदिक शास्त्र** ही हैं।

पाश्चात्य जगत में इस प्रवृत्ति को आज की भाषा में डाइजेशन कहा जा रहा है—

हमारे ही तत्त्व लेकर, उन्हें नए नामों से हमें ही प्रस्तुत किया जा रहा है।

“अपने शास्त्रों को जानना ही बौद्धिक आत्मसम्मान की पहली शर्त है।”

स्वामी अनंतदास जी महाराज के ये विवेकपूर्ण, मार्गदर्शक और समयसापेक्ष विचार सभी साधकों के हृदय को गहराई से स्पर्श कर गए। यह समारोह केवल एक औपचारिक शुभारम्भ नहीं रहा, बल्कि साधकों के भीतर **गीता-पथ पर और अधिक दृढ़ता, गर्व और संकल्प** को जाग्रत करने वाला अनुभव बन गया।

आह्वान

गीता का यह वैश्विक प्रवाह उन सभी को आमंत्रित करता है, जो जीवन में **स्पष्टता, स्थिरता और सार्थकता** की खोज में हैं।

आइए—इस चेतना-यात्रा का अंग बनें।

बयालीसवाँ शुभारम्भ समारोह

गीता-पथ का विश्वव्यापी विस्तार : एक ऐतिहासिक कीर्तिमान

पाँच सितम्बर को सम्पन्न बयालीसवाँ शुभारम्भ समारोह गीता-पथ की यात्रा में **एक ऐतिहासिक उपलब्धि** के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। इस नवीन वर्ग ने वैश्विक स्तर पर **एक अभूतपूर्व कीर्तिमान** स्थापित किया।

बानवे देशों से लगभग सत्तर हज़ार गीताप्रेमी साधकों का इस वर्ग से जुड़ना इसे विश्व की अब तक की **सबसे बड़ी गीता कक्षा** के रूप में स्थापित करता है।





> मुख्य झलक
> गीता अध्ययन अब व्यक्तिगत साधना नहीं, वैश्विक चेतना का उत्सव बन चुका है।

इस सौभाग्यपूर्ण अवसर पर पूज्य श्री श्री सुगुणेन्द्र तीर्थ स्वामी जी महाराज,
मध्वपीठाधिपति — श्री पुतिगे मठ, उडुपि,
का पावन सान्निध्य साधकों के लिए विशेष प्रेरणा का स्रोत बना।

स्वागत-वक्तव्य में परम पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरी जी महाराज ने कहा कि जब भी आदर्श महापुरुषों की चर्चा होती है, तो **पूज्य सुगुणेन्द्र तीर्थ स्वामी जी महाराज का नाम स्वतः स्मरण में आता है**। वे भगवान उडुपी श्रीकृष्ण की अखण्ड सेवा के साथ-साथ **कोटि श्रीमद्भगवद्गीता लेखन महायज्ञ** के माध्यम से भावी पीढ़ियों को गीता से जोड़ने का विराट कार्य कर रहे हैं।

“सेवा और साधना जब एक हो जाएँ, तब परंपरा भविष्य का मार्ग बनाती है।”

पूज्य स्वामी जी का जीवन स्वयं एक **जीवंत प्रेरणास्रोत** है। बारह वर्ष की अल्पायु में संन्यास-दीक्षा प्राप्त कर उन्होंने वर्षों तक गहन शास्त्राध्ययन किया और शिक्षा, संस्कार, सेवा तथा संस्कृति के क्षेत्र में अद्भुत योगदान दिया।
कोटि गीता लेखन महायज्ञ के अंतर्गत लाखों हाथों से लिखी गई गीता-प्रतियाँ उडुपी श्रीकृष्ण के चरणों में अर्पित होकर पुनः **प्रसाद और प्रशस्ति-पत्र** सहित घर-घर पहुँच रही हैं—जिससे प्रत्येक गृह **मंदिर का स्वरूप** ग्रहण कर रहा है।

> प्रेरक बिंदु
> जब गीता घर में प्रवेश करती है, तब जीवन में संस्कार स्वतः प्रतिष्ठित होते हैं।

पूज्य श्री श्री सुगुणेन्द्र तीर्थ स्वामी जी महाराज के विचार

अपने आशीर्वचनों में पूज्य सुगुणेन्द्र तीर्थ स्वामी जी महाराज ने गीता परिवार द्वारा की जा रही **मानवता-सेवा** की मुक्तकंठ से प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि जैसे श्रीकृष्ण ने गोवर्धन धारण कर ग्रामवासियों की रक्षा की, वैसे ही परम पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरी जी महाराज परिवारों और समाज की रक्षा का दायित्व निभा रहे हैं।

स्वामी जी ने यह भी कहा कि वे सनातन के कल्याण हेतु **उत्तर और दक्षिण को जोड़ने वाले सेतु** का निर्माण कर रहे हैं। सनातन परंपरा की यह मान्यता रही है कि उत्तर भारत में भगवान विराजते हैं और दक्षिण भारत में उनकी सेवा करने वाले आचार्य। इस आध्यात्मिक संतुलन को सुदृढ़ करना आज के समय की आवश्यकता है।

“गीता का प्रचार स्वयं श्रीभगवान को अत्यंत प्रिय है।”



स्वामी जी ने यह भावपूर्ण उद्घोष किया कि जो गीता का प्रचार करता है, वह श्रीभगवान को अत्यंत प्रिय होता है, और इसी कारण **पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरी जी महाराज को स्वयं भगवान ने अपने मंदिर का कोषाध्यक्ष चुना**। यह कथन न केवल गीता परिवार के लिए, बल्कि समस्त साधकों के लिए **गौरव और प्रेरणा** का विषय बना।

> मुख्य संदेश
>
> गीता का कार्य केवल सेवा नहीं, ईश्वरीय उत्तरदायित्व है।

आह्वान

यह ऐतिहासिक उपलब्धि प्रत्येक साधक को आमंत्रित करती है—
कि वह गीता को केवल पढ़े नहीं,
जीए, बाँटे और आगे बढ़ाए।

आइए—इस वैश्विक गीता-यात्रा का अंग बनें।

तैंतालीसवाँ शुभारम्भ समारोह

गीता-पथ का विस्तार : भाषा, भूमि और भावनाओं से परे

इकतीस अक्टूबर को सम्पन्न तैंतालीसवाँ शुभारम्भ समारोह गीता परिवार की यात्रा में **एक विशेष और ऐतिहासिक पड़ाव** सिद्ध हुआ। इस वर्ग में **अस्सी देशों से चालीस हज़ार से अधिक गीताप्रेमी साधकों** का जुड़ना, गीता-ज्ञान के वैश्विक विस्तार का सशक्त प्रमाण बना।

इस अवसर को और भी विशिष्ट बनाते हुए गीता परिवार ने **मणिपुरी भाषा में गीता-ज्ञान के प्रवाह का शुभारम्भ** कर एक नवीन कीर्तिमान स्थापित किया। साथ ही, इसी सत्र में **गीता जयंती पोर्टल** का भी विधिवत उद्घाटन सम्पन्न हुआ—जो गीता-पथ को डिजिटल माध्यम से नई गति प्रदान करने वाला महत्वपूर्ण चरण है।

> मुख्य झलक
>
> गीता अब न केवल विश्वव्यापी है, अपितु भाषायी समावेशन के साथ सर्वसुलभ बन रही है।

इस दिव्य अवसर पर साधकों को आशीर्वाद प्रदान करने हेतु
परम पूज्य श्री श्री विश्वप्रसन्न तीर्थ स्वामीजी महाराज
(पेजावर मठ, उडुपि) का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। स्वामीजी श्रीराम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट, अयोध्या के ट्रस्टी होने के साथ-साथ **प्रह्लाद गुरुकुल**की स्थापना द्वारा भावी पीढ़ियों में सनातन संस्कारों के सुदृढ़ प्रतिष्ठापन हेतु सतत कार्यरत हैं। जनता शिक्षण समिति के अध्यक्ष के रूप में उनके नेतृत्व में **लाखों बच्चों तक शिक्षा और संस्कार** का प्रकाश पहुँचा है। उनकी विद्वत्ता, दूरदर्शिता और सेवा-भाव के प्रति समाज का नमन स्वाभाविक है।



प्रेरक बिंदु

संस्कारयुक्त शिक्षा ही राष्ट्र का दीर्घकालिक भविष्य गढ़ती है।

परम पूज्य श्री श्री विश्वप्रसन्न तीर्थ स्वामीजी महाराज के विचार

अपने ओजस्वी और प्रेरणादायी उद्बोधन में स्वामीजी ने साधकों से **आध्यात्मिक साधना को जीवन की प्राथमिकता** बनाने का आह्वान किया। गीता परिवार तथा परम पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरी जी महाराज के अथक प्रयासों की सराहना करते हुए उन्होंने इस श्लोक के माध्यम से समस्त साधकों को आशीर्वाद प्रदान किया—

यत्र योगेश्वरः कृष्णो, यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥

श्लोक सुनें
१८.७८

“जहाँ गीता है, वहाँ श्री, विजय और नीति का वास सुनिश्चित है।”

परम पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरी जी महाराज के आशीर्वचन

अपने प्रेरक उद्बोधन में परम पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरी जी महाराज ने श्रीमद्भगवद्गीता को **सम्पूर्ण राष्ट्र-संस्कृति को एक सूत्र में बाँधने वाला अमर ग्रंथ** बताया। उन्होंने कहा कि भारत के ईशान कोने में गीता-ज्ञान का प्रवाह आरम्भ होना अत्यंत शुभ संकेत है, क्योंकि ऐसे पुण्य कार्य का फल अनेक गुणा होकर समाज को प्राप्त होता है।

मणिपुरी भाषा में गीता-ज्ञान के शुभारम्भ पर उन्होंने गीता परिवार एवं समस्त साधकों को हार्दिक बधाई दी और सभी को गीता परिवार के **नवनिर्मित संकल्पों में सक्रिय सहभागिता** हेतु प्रेरित किया।

“गीता का ज्ञान जब स्थानीय भाषा में उतरता है, तब वह जन-जीवन का संस्कार बन जाता है।”

आह्वान



भाषा, क्षेत्र और सीमाओं से परे
गीता का यह प्रवाह
प्रत्येक जिज्ञासु, साधक और सेवाभावी हृदय को आमंत्रित करता है—

आइए—इस वैश्विक, सर्वसमावेशी गीता-यात्रा का सक्रिय अंग बनें।

चौवालीसवें शुभारम्भ समारोह की प्रेरक गाथा

चौवालीसवें वर्ग का शुभारम्भ उन्नीस दिसम्बर को अत्यन्त पावन वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस वैश्विक साधना–यात्रा से **पंचानबे देशों के पचास हज़ार से अधिक गीताप्रेमी** जुड़े—यह स्वयं में गीता के सार्वकालिक और सार्वभौमिक प्रभाव का सजीव प्रमाण है।

इस वर्ग में सम्मिलित **नव–साधकों** का यह परम सौभाग्य रहा कि उन्हें आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु **तेजस्वी संत, परम पूज्य स्वामी श्री गिरिशानन्द सरस्वती जी महाराज** (साकेत धाम आश्रम, जबलपुर) का सान्निध्य प्राप्त हुआ। स्वामीजी ने मात्र **चौदह वर्ष** की आयु में संन्यास ग्रहण कर आध्यात्मिक जीवन का वरण किया और पूज्य **स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती जी महाराज** के प्रिय शिष्य बने। देश–विदेश में उनकी **भागवत कथाएँ** श्रद्धालुओं को गहन आध्यात्मिक अनुभूति से ओतप्रोत करती रही हैं। आपने **बिहार स्कूल ऑफ योग** से भी निकटता से जुड़कर साधना–परम्परा को समृद्ध किया।

नर्मदा–सेवा के क्षेत्र में स्वामीजी का योगदान अतुलनीय है। उच्च न्यायालय में सतत संघर्ष कर आपने नर्मदा जी की स्वच्छता सुनिश्चित करवाई, तट–परिसर में धर्मशालाओं का निर्माण कराया और इस दैविक नदी की **गरिमा, पवित्रता एवं शोभा** को पुनः प्रतिष्ठित किया—यह सेवा केवल पर्यावरण–संरक्षण नहीं, अपितु सांस्कृतिक पुनर्जागरण का भी श्लाघ्य उदाहरण है।

साधकों को संबोधित करते हुए स्वामीजी ने कहा कि उन्होंने **गीता–विलक्षणों** के मुख से गीता–गायन का **आरोही–अवरोही क्रम** तथा **श्लोकांक सहित श्लोक–स्मरण** जैसी अद्भुत साधना प्रत्यक्ष देखी। इस अनुशासित, समर्पित और सामूहिक साधना को देखकर उनका विश्वास और दृढ़ हुआ कि **भारत विश्वगुरु था, है और रहेगा**।

स्वामीजी ने **अर्जुन–कृष्ण** के अद्वितीय संबंध की मार्मिक व्याख्या करते हुए कहा—जब अर्जुन ने अपने विषाद में भगवान को जोड़ लिया, तो उसका विषाद भी **योग** बन गया। अर्थात, जब हम भगवान से जुड़ते हैं, तो हमारे दोष भी **गुण** में परिवर्तित हो जाते हैं। भगवान की असीम कृपा प्राप्त करने के लिए उनसे **संबंध** जोड़ना अनिवार्य है—हमें **अर्जुन बनना होगा**।

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/learngeeta-ke-maadhym-se-giitaa-adhyyn-kaa-vikaas/11-udghaattn-smaaroh/

विभिन्न L2, L3 ,L4 वर्गों के शुभारम्भ समारोह

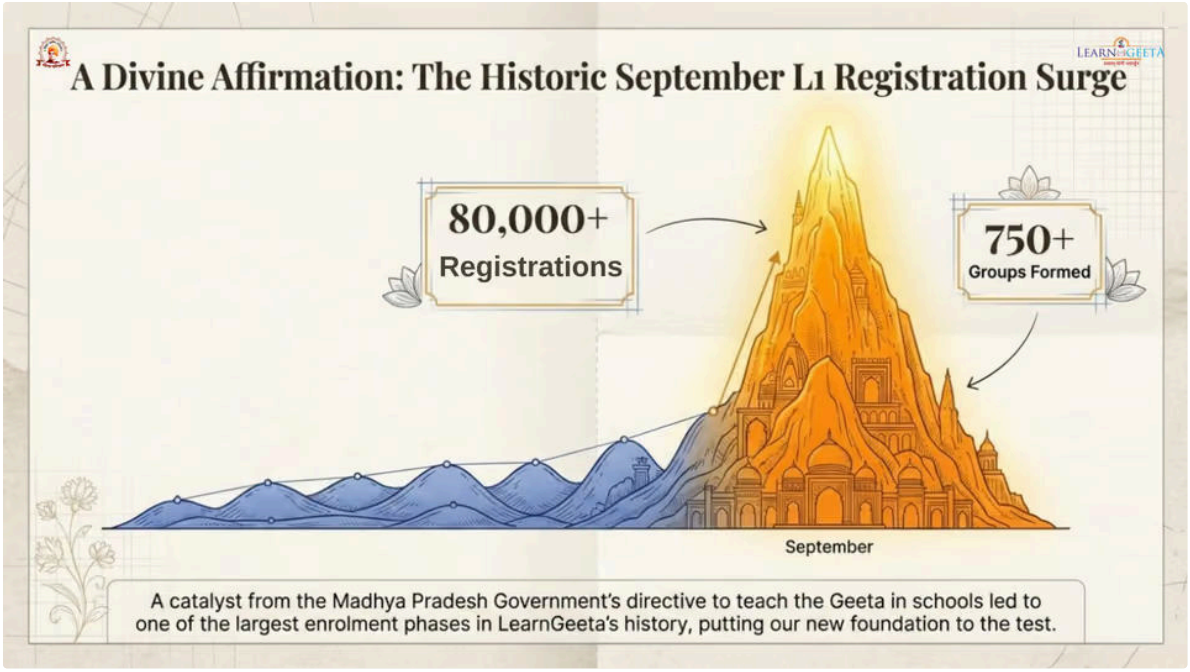
४ मिनट पठन • ६ चित्र



चेन्नई के चिन्मय हेरिटेज सेंटर में गीता पाठ करती हुई प्रतिभागी, साथ में बाँसुरी वादन।







सितम्बर में L1 पंजीकरण का ऐतिहासिक उछाल — 80,000+ पंजीकरण और 750+ समूह।

भा

रतीय संस्कृति में **चार** का अंक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना गया है—
चार धाम, चार वेद, चार पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष)
तथा चार आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास)।
इसी सांस्कृतिक परम्परा का सजीव प्रतिबिम्ब **गीता परिवार** में दृष्टिगोचर होता है,
जहाँ गीता–
पठन को **चार स्तरों (Levels)** में सुव्यवस्थित किया गया है।
प्रत्येक स्तर का शुभारम्भ विधिवत **शुभारम्भ समारोह** के माध्यम से किया जाता है,
जिससे साधना–यात्रा मंगलमय आधार पर आगे बढ़े।

शुभारम्भ का तात्पर्य है—शुभ, पावन और कल्याणकारी आरम्भ।
प्रत्येक लेवल का शुभारम्भ प्रभु–
चरणों में विनम्र प्रार्थना अर्पित करते हुए **दीप–**
प्रज्ज्वलन के साथ सम्पन्न होता है। दीप–ज्योति मात्र एक परम्परा नहीं,
अपितु **ज्ञान, सकारात्मकता और ईश्वरीय चेतना** का प्रतीक है।
यह अज्ञान के अन्धकार को दूर कर आशा,
प्रकाश और आत्मशक्ति को जाग्रत करती है।

इस पावन अवसर पर **गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आदरणीय डॉ**
संजय मालपाणी जी एवं **अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आदरणीय डॉ.**
आशू गोयल जी अपने ओजस्वी आशीर्वचनों से साधकों को भावविभोर व

आदरणीय **आशू भैया जी** गुरु–तत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं—
“गुरु वही है, जो शंकाओं का समाधान करे और शिष्य को प्रभु–
चरणों से जोड़ दे।”
गुरु–कृपा से जीवन में तेजस्विता आती है।
भक्त के लक्षण बताते हुए वे कहते हैं कि जो **ममता और अहंकार से रहि**
सुख–दुःख में **समभावी** और **क्षमाशील** है, वही सच्चा भक्त है। गीता–
पाठ से शारीरिक एवं मानसिक विकृतियों का क्षय होता है।
वे पूज्य **स्वामी गोविन्द देव गिरि जी महाराज** के इस संदेश को विशेष स
—
“सदैव गीता पढ़ें, पढ़ाएँ और जीवन में उतारें।”



मैसूर के विशाल सभागृह में उपस्थित श्रोतागण कार्यक्रम को ध्यानपूर्वक सुनते हुए।

आदरणीय **संजय मालपाणी भैया जी** साधकों को गीता के गूढ़ तत्त्व से परिचित **गीता परिवार** के **बहुमूल्य मार्गदर्शन** के

—कभी मन विजयी होता है, तो कभी बुद्धि।

भगवान श्रीकृष्ण स्पष्ट करते हैं कि जो **मन और बुद्धि दोनों उन्हें अर्पित करता है,** वही उन्हें प्राप्त करता है। अर्जुन को गीता का उपदेश तब मिला, जब उसने पूर्ण **समर्पण** किया। भगवान का संदेश है— हर परिस्थिति में **समत्व** बनाए रखें; बिना समत्व के योग सम्भव नहीं।

गीता, हरि–मुख से निःसृत पावन वाणी है।

इसे गाते हुए साधक स्वाभाविक रूप से योग–पथ की ओर अग्रसर होता है। गीता–पाठ में हम भगवान से शत्रु–विनाश की नहीं, बल्कि शत्रु–बुद्धि–विनाश की प्रार्थना करते हैं। दुःख, अशान्ति, क्रोध और नकारात्मकता से मुक्ति के लिए गीता को पढ़ना और जीवन में उतारना अत्यावश्यक है।

की भावना से निरन्तर कार्यरत है। वरिष्ठ **गीता–साधकों** द्वारा दी जाने वाली प्रत्यक्षिक प्रस्तुतियाँ नव–साधकों का मनोबल ऊँचा करती हैं। साधक–मनोगत के माध्यम से साधक अपने हृदय के भाव प्रकट करते हैं और अप

अनेक साधक, जो शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों से जूझ रहे थे, अपने अनुभव साझा करते हैं कि किस प्रकार गीता परिवार से जुड़कर उन्हें शान्ति और जीवन–संतुलन पुनः प्राप्त किया।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से ओतप्रोत यह परिवार साधकों को एक

समारोह का समापन **आभार–ज्ञापन** एवं **हनुमान चालीसा पाठ** के साथ होता है। हनुमान चालीसा का पाठ भय, तनाव और नकारात्मकता को दूर कर **मानसिक शक्ति, एकाग्रता और आत्मविश्वास** को सुदृढ़ करता है तथा साधक को आन्तरि



मुख्य बिंदु / Takeaways

- गीता परिवार में चार लेवल—
  भारतीय सांस्कृतिक परम्परा का सशक्त प्रतिबिम्ब।
- दीप–प्रज्ज्वलन: ज्ञान, सकारात्मकता और ईश्वरीय चेतना का प्रतीक।
- गुरु–तत्त्व, समर्पण और समत्व—गीता साधना के मूल आधार।
- गीता–पाठ से मानसिक–शारीरिक विकृतियों का शमन।
- 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय'
  के भाव से प्रेरित एक वैश्विक साधना–यज्ञ।

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/learngeeta-ke-maadhym-se-giitaa-adhyyn-kaa-vikaas/vibhinn-l2-l3-l4-vrgon-ke-shubhaarmbh-smaaroh/



०६ LearnGeeta के माध्यम से गीता अध्ययन का विकास

गीता मैत्री मिलन

१० मिनट पठन • ५ चित्र • ३ वीडियो

संकट से संस्कार तक: एक परिवार की जीवंत अनुभूति

लर्न गीता कक्षाओं का प्रारम्भ उस समय हुआ, जब समूचा विश्व कोरोना जैसी विकट परिस्थितियों से जूझ रहा था। उस कठिन कालखंड में, व्यक्तिगत संघर्षों और अनिश्चितताओं के बीच, हमें एक ऐसा परिवार प्राप्त हुआ—जो प्रारम्भ में किसी कल्पना से कम प्रतीत नहीं होता था।

गीता मैत्री उसी भाव का साकार रूप है, जिसके माध्यम से हम उन दीदी-भैयाओं से प्रत्यक्ष मिल सके, जो हमारे कठिन समय में हमारे साथ खड़े रहे। यह मिलन केवल पुनःभेंट नहीं, बल्कि **कृतज्ञता, आत्मीयता और साझा साधना का उत्सव** था।

> मुख्य झलक
>
> गीता मैत्री—जहाँ साधना ने संबंध बनाए और संबंधों ने परिवार का रूप लिया।

गीता मैत्री मिलन, चेन्नई: एक अविस्मरणीय अध्याय

Link:



वीडियो देखने के लिए स्कैन करें

YouTube ↗









गीतासेवी बनने का आमंत्रण — तेलुगु, ओड़िया, अंग्रेज़ी और हिन्दी सत्रों के साथ स्वयंसेवक अभियान।

27 जुलाई 2025 को चेन्नई में आयोजित गीता मैत्री मिलन एक **आध्यात्मिक रूप से उत्थानकारी और स्मरणीय अनुभव** बन गया। इस अवसर पर **एक हज़ार से अधिक तमिल गीता साधकों** का एक साथ एकत्रित होना, स्वयं में एक ऐतिहासिक क्षण था।

इस पावन संगम में श्रीमद्भगवद्गीता के **समस्त अठारह अध्यायों का महामहिम पाठ**, क्षमा-याचना सहित सम्पन्न हुआ। यह वातावरण साधकों के लिए न केवल उत्साहवर्धक, अपितु अंतःकरण को स्पर्श करने वाला और स्फूर्तिदायक सिद्ध हुआ।

“जब एक साथ गीता का पाठ होता है, तब साधना सामूहिक चेतना बन जाती है।”

गीता प्रत्याशिक के अंतर्गत आयोजित विविध प्रतियोगिताओं ने सभा में उल्लास और सहभागिता का रंग भर दिया, जिनका दर्शकों ने भरपूर आनंद लिया। मंदिर परिसर और पवित्र ग्रंथ की दिव्य ऊर्जा ने सभी उपस्थित साधकों को **अपार शांति और आनंद** का अनुभव कराया। सभी भक्तों का उत्साह और ऊर्जा अनुकरणीय थी; साथ ही, सुहावने मौसम ने इस मिलन को और भी सौम्य बना दिया।

> प्रेरक बिंदु
> जहाँ श्रद्धा, अनुशासन और आनंद एक साथ हों—वहीं सच्चा उत्सव जन्म लेता है।

प्रेरक विचार और दिशा

आदरणीय आशु भैया के गहन और विचारोत्तेजक **“बूँद से सागर”** विषयक उद्बोधन ने सभा को एक स्पष्ट दिशा प्रदान की। उनका यह कथन विशेष रूप से साधकों के हृदय में उतर गया—
“हम तमिल, हिंदी, गुजराती, बांग्ला या तेलुगु नहीं हैं; हम सर्वप्रथम सनातनी हिन्दू हैं, और हमें इसी भाव के आधार पर एकजुट होना है।”
इस विचार पर व्यापक चर्चा हुई और साधकों ने इसका हृदय से समर्थन किया।

“पहचान भाषा से नहीं, सनातन संस्कार से बनती है।”

आदरणीय हरि काकाजी के भावपूर्ण और प्रेरणादायी शब्दों ने भी सभा को गहराई से स्पर्श किया। उन्होंने **केंद्रीय टीम–11** के गठन की घोषणा की तथा तमिलनाडु भर में गीता परिवार की ऑफ़लाइन गतिविधियों के विस्तार हेतु **नौ ज़िलों में टीम–11** के गठन की महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। यह घोषणा गीता परिवार के संगठनात्मक विस्तार की दिशा में एक सशक्त कदम सिद्ध हुई।

> मुख्य संदेश
> संगठन तभी सशक्त होता है, जब साधना के साथ संरचना भी सुदृढ़ हो।

संगीत, साधना और सौहार्द

हमारी प्रिय तीन दीदियाँ—**ज्योति दीदी, रूपल दीदी और कविता दीदी**—के संगीतमय गीता पारायण ने समस्त वातावरण को भाव-विभोर कर दिया। यह अनुभव केवल श्रवण का नहीं, बल्कि अंतःकरण को स्पर्श करने वाला एक **दिव्य क्षण** बन गया। उनके इस अनुपम योगदान के लिए समस्त साधकों की ओर से हृदय से कृतज्ञता व्यक्त की गई।

गुरुजी का आशीर्वाद प्राप्त कर उपस्थित सभी साधक स्वयं को अत्यंत धन्य अनुभव कर रहे थे। इस मिलन के समापन पर यह सामूहिक संकल्प लिया गया कि इस गति को बनाए रखते हुए, मिलकर **गीता परिवार की गतिविधियों को तमिलनाडु के प्रत्येक कोने तक** पहुँचाया जाएगा।

आह्वान

गीता मैत्री केवल एक आयोजन नहीं—
यह **संबंधों की साधना** है।
यह उन सभी के लिए आमंत्रण है,
जो गीता को पढ़ना ही नहीं,
जीना और आगे बढ़ाना चाहते हैं।

आइए—इस परिवार का हिस्सा बनें।

ऐतिहासिक गीता मैत्री मिलन कर्नाटक 2.0

Link -



वीडियो देखने के लिए स्कैन करें

YouTube ↗

आश्चर्य से अनुभूति तक : साधना, संगठन और संकल्प का विराट संगम *(14 दिसम्बर 2025)*

आश्चर्यवत् पश्यति कश्चिदेनम्,
आश्चर्यवद् वदति तथैव चान्यः।
आश्चर्यवच् चैनमन्यः शृणोति,
श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित्॥

श्लोक सुनें
२.२९

14 दिसम्बर 2025 का दिन भगवान् श्रीकृष्ण के इस वचन का सजीव साक्षी बना। मैसूर, कर्नाटक स्थित **गणपति सच्चिदानंद आश्रम** में सम्पन्न गीता मैत्री मिलन कर्नाटक 2.0 ने साधना, संगठन और संकल्प—तीनों के अद्भुत समन्वय को साकार रूप में प्रस्तुत किया।

लगभग **दो सौ पचास कन्नड़ कार्यकर्ताओं** के सतत, निष्ठापूर्ण परिश्रम से आयोजित इस महायोजन में **तीन हज़ार से अधिक गीता साधकों** तथा **एक सौ गीताव्रती विचक्षणों** की सहभागिता ने सभी को विस्मय-विमुग्ध कर दिया। कार्यकर्ताओं के इस **प्रचण्ड पुरुषार्थ** को देखकर परम पूज्य **गणपति सच्चिदानंद स्वामीजी** अत्यंत भावविभोर एवं प्रसन्न हुए।

मुख्य झलक

> जहाँ साधना में संगठन जुड़ता है, वहाँ इतिहास रचता है।

संगीत के प्रति विशेष अनुराग के कारण, कार्यक्रम में **पूजा भाभी, ज्योति दीदी तथा रूपल दीदी** द्वारा प्रस्तुत गीता का संगीतमय पारायण स्वामीजी के लिए विशेष आनंद और आश्चर्य का विषय बना। इस अनुपम साधना को देखकर उन्होंने सहर्ष उद्घोष किया—
“यह आपका अपना ही आश्रम है। आप यहाँ भविष्य के सभी प्रकल्प सम्पन्न कर सकते हैं।”
यह वचन गीता परिवार के लिए आशीर्वाद और उत्तरदायित्व—दोनों का प्रतीक बन गया।

हमारे प्रेरणास्रोत **परम पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरी जी महाराज** के आशीर्वचनों से सभी कार्यकर्ताओं के मुखमण्डल आनंद और कृतज्ञता से दीप्त हो उठे।

“जब गुरु की कृपा और साधकों का पुरुषार्थ एक हो जाए, तब असंभव भी संभव बन जाता है।”

गीता परिवार के अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष **डॉ. आशु गोयल जी** का प्रबोधन सीधे अंतर्मन को स्पर्श करता प्रतीत हुआ, मानो वे प्रत्येक जिज्ञासु को उसके आध्यात्मिक पथ का बोध करा रहे हों। उन्होंने गीता के वैश्विक विस्तार के सूत्रों को इतनी आत्मीयता से पिरोया कि प्रत्येक साधक का हृदय आलोकित हो उठा।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री हरिनारायण व्यास जी** ने अपने वात्सल्यपूर्ण और सारगर्भित शब्दों में गीता परिवार की यात्रा, बाल संस्कार केंद्रों की निरंतर बढ़ती व्याप्ति तथा कर्नाटक टीम के असाधारण पुरुषार्थ का प्रभावी चित्रण किया।

> प्रेरक बिंदु
> साधना जब संस्कार से जुड़ती है, तब पीढ़ियाँ दिशा पाती हैं।

इस अवसर पर गीता को **“मथने”** की प्रक्रिया का एक विलक्षण प्रत्यक्षिक भी सभी साधकों ने देखा। श्लोकांक, श्लोकार्थ, समान शब्द, स्वराक्षरी, समान चरण, गीता अंत्याक्षरी तथा विविध उपक्रमों का ऐसा समन्वित प्रदर्शन गीता-प्रेमियों के लिए विस्मयकारी अनुभव बन गया।

कर्नाटक गीता परिवार की अध्यक्षा **श्रीमती संतोष सोमानी जी** के मार्गदर्शन और सहयोग से इस भव्य आयोजन की सफलता का श्रेय समस्त निष्ठावान, कर्मठ कार्यकर्ताओं को जाता है। विशेष रूप से **श्रीनाथ जी**, जिन्होंने अहर्निश परिश्रम कर समर्पण का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया।
उनके साथ-साथ **सुरेश जी, सीमा जी, वेंकट जी, राधा जी, पूजा जी, तेजस भैया, राधाकृष्णन जी, वीणा जी, सुधा जी, सरस्वती जी, ऊषा जी, जयकुमार जी, गायत्री जी** तथा प्रत्येक स्वयंसेवक—सभी की सतत सेवा ने इस मिलन को वास्तव में ऐतिहासिक बना दिया।

> मुख्य संदेश
> गीता मैत्री मिलन केवल आयोजन नहीं, साधकों के संकल्पों की माला है।

गीता मैत्री मिलन की श्रृंखला में यह कार्यक्रम **एक अनमोल मणि** के समान सुशोभित होगा। पूज्य स्वामीजी की कृपा से अब तक चल रहा ऑफ़लाइन कार्य शीघ्र ही और भी व्यापक स्तर पर प्रारम्भ होगा—ऐसा दृढ़ विश्वास इस आयोजन ने सभी के हृदय में स्थापित कर दिया है।

समस्त बन्धु-भगिनी कार्यकर्ताओं को उत्तम नियोजन, समर्पण और सेवाभाव हेतु **अनेकानेक साधुवाद और हार्दिक शुभकामनाएँ**।

झारखण्ड गीता मैत्री मिलन

Link:



वीडियो देखने के लिए स्कैन करें

YouTube ↗

एक दिव्य, सुवासित आध्यात्मिक पर्व

राँची | 7 दिसम्बर 2025

राँची विश्वविद्यालय के **आर्यभट्ट सभागार** में उस दिन एक अद्भुत और दुर्लभ दृश्य उपस्थित था। मानो अध्यात्म की अजस्र धारा स्वयं मूर्त रूप धारण कर प्रवाहित हो रही हो। झारखण्ड के विविध जिलों से पधारे साधकों का विशाल समुदाय किसी तीर्थ की श्रद्धा-लहरियों की भाँति उमड़ पड़ा था। सम्पूर्ण वातावरण श्रीमद्भगवद्गीता के शाश्वत संदेश से सुवासित हो उठा।

यह गीता मैत्री मिलन केवल एक आयोजन नहीं था, अपितु मनोजगत में प्रज्वलित होने वाला वह दीपक था, जिसे देखते ही आत्मा में सौम्य जिज्ञासा, श्रद्धा और साधना का आलोक जाग्रत हो जाता है।

इस दिव्य अवसर की शोभा बढ़ाने हेतु गीता परिवार के **राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. संजय मालपाणी भैया** तथा **पूर्वांचल उपाध्यक्ष आशा साबू दीदी** की मंगल उपस्थिति रही। उनकी उपस्थिति सभा के लिए मानो तेजस्वी सूर्य और शांत चन्द्रमा का सौम्य संयोग बन गई।

अपने प्रेरक संदेश में संजय भैया ने कहा—
“श्रीमद्भगवद्गीता जीवन को नई दृष्टि देती है—चुनौतियों में स्थिरता, संबंधों में समत्व और कर्म में दक्षता।”
उनके शब्द श्रोताओं के हृदय में इस प्रकार उतरे, जैसे किसी पथिक को उसके जीवन-मार्ग की दिशा पुनः स्मरण हो आई हो।

आशा दीदी ने Learn Geeta की वैश्विक गतिविधियों, बाल संस्कार अभियान, युवा मार्गदर्शन तथा झारखण्ड टीम के अथक पुरुषार्थ का भावपूर्ण वर्णन किया। उनके शब्दों में ऐसी स्नेहिल उष्मा थी, मानो कोई माँ अपने संस्कारों से पुष्ट होते परिवार को गर्वपूर्वक निहार रही हो।

मुख्य अतिथि के रूप में बंगाल से पधारे **संदीप सोमानी भैया** एवं **अशोक साबू भैया** की गरिमामयी उपस्थिति ने इस आयोजन को एक नया आयाम प्रदान किया।

इस समागम का सर्वाधिक मधुर और हृदयस्पर्शी क्षण था **संगीतमय गीता पारायण**।
ज्योति शुक्ला दीदी एवं **कविता वर्मा दीदी** द्वारा प्रस्तुत पारायण ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो स्वयं वेदगान की दिव्य ध्वनियाँ सभा-मंडप में अवतरित हो गई हों।

योग प्रस्तुति, गीता प्रात्यक्षिक, बालकों की सांस्कृतिक झलकियाँ, गीता ग्रंथ स्टॉल, सुरम्य रंगोली एवं पुष्पवर्षा—इन सभी उपक्रमों ने पूरे परिसर को एक जीवंत आध्यात्मिक उत्सव में परिवर्तित कर दिया।

इस भव्य आयोजन की सफलता का आधार बना झारखण्ड गीता परिवार की टीम का लगभग **डेढ़ महीने तक चला अथक पुरुषार्थ**। सौ से अधिक स्वयंसेवकों की श्रम-ज्योति ने इस पर्व को अपनी उज्ज्वल लौ प्रदान की।

प्रमुख सहयोगियों में **ऊषा दीदी, प्रीति दीदी, वेंकटरमण भैया, रीता दीदी, भरत भैया, संदीप भैया, रिचा दीदी, रेणु दीदी, वीणा दीदी, मंजू दीदी, अभय मिश्रा भैया, शामसुंदर भैया, अल्पना दीदी, शेफाली दीदी, विमलेंद्र भैया, अपर्णा दीदी, डी. एन. भैया, अमरनाथ भैया** सहित अनगिनत कार्यकर्ताओं का निष्ठापूर्ण परिश्रम उस नींव-पत्थर के समान रहा, जो दिखाई भले न दे, पर सम्पूर्ण संरचना को दृढ़ता प्रदान करता है।

यह गीता मैत्री मिलन झारखण्ड में गीता परिवार के प्रत्यक्ष कार्यारम्भ का **ऐतिहासिक दीप-जागरण** बन गया। समस्त साधकों ने एक स्वर में यह संकल्प लिया—
“गीता पढ़ें, पढ़ाएँ और जीवन में लाएँ।”

पूज्य **स्वामी गोविन्ददेव गिरी जी महाराज** की अनुकम्पा, पूर्वांचल प्रमुख आशा दीदी, अशोक भैया तथा गीता परिवार के वरिष्ठ मार्गदर्शकों का संकल्प इस आयोजन की सिद्धि का सेतु बना।

हम सभी के आदरणीय **आशु भैया** का सूक्ष्म मार्गदर्शन तथा **रूपल दीदी** का सुयोजित नियोजन इस सम्पूर्ण कार्यक्रम के लिए दीपस्तम्भ सिद्ध हुआ।

समस्त साधकों और कार्यकर्ताओं को श्रद्धापूर्वक नमन।

■

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2026-01/learngeeta-ke-maadhym-se-giitaa-adhyyn-kaa-vikaas/giitaa-maitrii-miln/

चिंतनिका सत्र

गीता परिवार के माध्यम से आध्यात्मिक चिंतन और निष्काम भक्ति का अनुभव

३ मिनट पठन · २ चित्र



शुभ मोक्षदा एकादशी का पोस्टर – सोमवार, 1 दिसम्बर 2025, मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी।



शुभ इन्दिरा एकादशी का पोस्टर – बुधवार, 17 सितम्बर 2025, आश्विन कृष्ण एकादशी।

मुख्य संदेश:

गीता परिवार द्वारा संचालित **चिंतनिका सत्र** साधकों को **श्रीमद्भगवद्गीता के शुद्ध पठन, गहन चिंतन और निष्काम भक्ति** में निर्देशित करता है।

परम पूज्य **स्वामी श्री गुरु गोविंद देवगिरी जी महाराज** के प्रेरक मार्गदर्शन में, **गीता परिवार** ने गीता जी के **७०० श्लोकों** का शुद्ध उच्चारण सीखने हेतु **ऑनलाइन कक्षाओं** की व्यवस्था की है।

साधक जब समस्त अध्यायों का अध्ययन पूर्ण कर लेते हैं और गीता जी को कंठस्थ कर लेते हैं, तो उन्हें यह प्रश्न आता है—

“अब इसे कैसे समझें और अपने जीवन में कैसे उतारें?”

इसी भाव को जीवन में लाने हेतु आयोजित किया जाता है **चिंतनिका सत्र**, जो साधक के हृदय में **आध्यात्मिक जागृति** और **गीता की निष्काम भक्ति**का संचार करता है।

सत्र का उद्देश्य

चिंतनिका सत्र का प्रमुख लक्ष्य है **समस्त विश्व में आध्यात्मिक जागृति का प्रसार**।
यह दिव्य प्रयास **गीता परिवार** द्वारा जगाई गई **अलौकिक अलख** है, जो साधकों को **चिंतन और भक्ति के मार्ग पर अग्रसर करता है।**

“चिंतनिका सत्र साधक के हृदय में गीता के शिक्षापथ को जीवंत कर देता है।”

चिंतनिका सत्र कैसे संचालित होता है?

- सत्र **प्रत्येक एकादशी** के पावन अवसर पर **रात्रि ९ बजे से १० बजे** तक **झूम** प्लेटफ़ॉर्म पर आयोजित किया जाता है।
- पूरे १८ अध्यायों का **पठन एवं चिंतन ६ भागों में विभाजित** किया जाता है।

o प्रत्येक एकादशी में **तीन अध्यायों का पठन** और **तीन अध्यायों का चिंतन** होता है।

o **छः सत्रों** के माध्यम से पूरा पारायण सम्पन्न होता है।

- **गीताव्रती साधक** पठन और चिंतन के माध्यम से **श्रीमद्भगवद्गीता के समस्त अध्यायों में निष्काम भक्ति** का अनुभव करते हैं।
- प्रत्येक अध्याय का चिंतन **केवल ५ मिनट** में समेटना कठिन कार्य है; फिर भी साधकों द्वारा किया गया यह कार्य **अत्यंत सराहनीय** है।

“साधक पठन और चिंतन में तल्लीन होते ही गीता का सार उनके हृदय में अंकित हो जाता है।”

- प्रत्येक तीन अध्याय में से **एक अध्याय का चिंतन क्षेत्रीय भाषा में** किया जाता है, जिससे सभी साधक सहजता से जोड़ सकें।
- **झूम सदन में १०००+ गीता प्रेमी साधक** उपस्थित रहते हैं।
- सोशल मीडिया और **यू ट्यूब** के माध्यम से हज़ारों साधक भी इस दिव्य आयोजन का लाभ उठाते हैं।
- जुलाई से दिसंबर तक के ६ महीनों में, १२ सत्रों में, **३६ साधकों द्वारा पठन** और **३६ साधकों द्वारा चिंतन** किया गया।
- १२ सत्रों में से **८ सत्रों में एक अध्याय का चिंतन क्षेत्रीय भाषा में** सम्पन्न हुआ।

“चिंतनिका सत्र केवल ज्ञान नहीं, बल्कि अनुभव और भक्ति की यात्रा है।”

सूक्ष्म आह्वान

इस दिव्य सत्र में भाग लेकर आप:

- **गीता के संदेश को जीवन में उतार सकते हैं।**
- **आध्यात्मिक जागृति का अनुभव कर सकते हैं।**
- **निष्काम भक्ति के मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं।**

आप भी इस पुण्य सत्र से जुड़ें और अपने जीवन को सार्थक बनाएं।

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2026-01/learngeeta-ke-maadhym-se-giitaa-adhyyn-kaa-vikaas/cintnikaa-str/

“आओ, गीता सेवी बनें” — सेवा का सहज, स्वाभाविक और जीवन्त मार्ग

३ मिनट पठन · ६ चित्र



जीवन में कभी-कभी ऐसे क्षण आते हैं, जब यह अनुभूति गहराने लगती है कि केवल अपने लिए जीना भीतर कहीं एक सूक्ष्म रिक्तता छोड़ देता है। तब मन स्वाभाविक रूप से कुछ देने की आकांक्षा करता है—बिना किसी अपेक्षा, बिना किसी प्रतिफल के।

“आओ, गीता सेवी बनें” इसी मौन पुकार का सहज और सार्थक उत्तर है।

गीता मात्र पढ़ने या सुनने का ग्रंथ नहीं, बल्कि **जीवन को जीने की कला** है। जब उसके उपदेश हमारे आचरण और व्यवहार में उतरने लगते हैं, तो सेवा कोई प्रयत्न नहीं रह जाती—वह स्वतः प्रवाहित होने लगती है। यह पहल उसी आन्तरिक जागरण को एक सुंदर, संगठित और प्रेरक दिशा प्रदान करती है।

इस प्रयास की विशेषता यह है कि यहाँ सेवा को कोई दुरूह या असाधारण आदर्श नहीं बताया गया, बल्कि जीवन का **स्वाभाविक अंग** माना गया है। कोई समय अर्पित कर सेवा करता है, कोई तकनीकी सहयोग देता है, कोई लेखन, अनुवाद या रचनात्मकता के माध्यम से योगदान करता है, तो कोई समन्वय, प्रशिक्षण अथवा पर्दे के पीछे रहकर निःस्वार्थ भाव से कार्य करता है। यही विविध प्रयास मिलकर **गीता परिवार** की सुदृढ़ और जीवंत नींव बनते हैं।

इस पहल का **बहुभाषी स्वरूप** इसे और अधिक व्यापक बनाता है। हिंदी, अंग्रेज़ी, तेलुगु, कन्नड़, बंगाली और ओड़िया भाषाओं में संचालित यह कार्यक्रम गीता के संदेश को हर क्षेत्र, हर वर्ग और हर हृदय तक पहुँचाने का कार्य कर रहा है। निकट भविष्य में मराठी सहित अन्य भाषाओं को जोड़ने के प्रयास इस सेवा-प्रवाह को और विस्तार देंगे।

जब विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े गीता-सेवी अपने अनुभव साझा करते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि सेवा केवल समाज का ही नहीं, **सेवक का भी रूपान्तरण** करती है। अनेक सेवकों ने अनुभव किया है कि सेवा के माध्यम से उनके जीवन में अधिक शांति, धैर्य और संतुलन आया है। यही गीता का जीवंत स्वरूप है—**कर्म के माध्यम से आत्मिक उन्नयन**।



समय-स्लॉट 21 से बढ़कर 33 और भाषाएँ बढ़कर 14 — मणिपुरी नई भाषा के रूप में जुड़ी।

"आओ, गीता सेवी बनें" यह सशक्त संदेश भी देता है कि **हर व्यक्ति महत्त्वपूर्ण है**। कोई कम समय दे सकता है, कोई अधिक; कोई सामने रहकर सेवा करता है, तो कोई मौन भाव से—पर प्रत्येक योगदान समान रूप से मूल्यवान है। यहाँ न तुलना है, न प्रतिस्पर्धा; केवल **सहयोग, समर्पण और सौहार्द** है।

यह केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक **द्वार** है—
गीता से जुड़ने का,
सेवा को अपनाने का,
और समाज के लिए अपने सामर्थ्य के अनुसार कुछ अर्पित करते हुए आगे बढ़ने का।



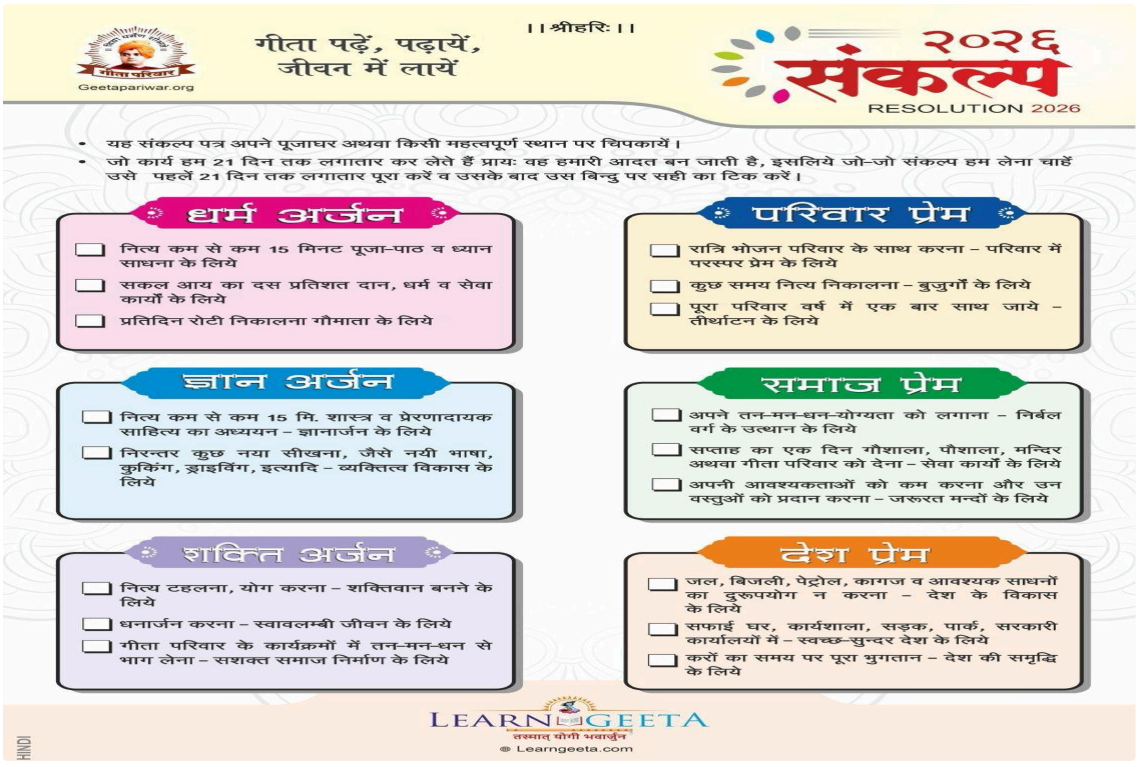
अंततः यह पहल हमें स्मरण कराती है कि सेवा कोई अतिरिक्त कर्तव्य नहीं, बल्कि **गीता को जीने का स्वाभाविक परिणाम** है।

यदि गीता ने हमें जीवन में दिशा, शांति और दृष्टि दी है, तो सेवा के माध्यम से लौटाना केवल हमारा दायित्व ही नहीं—**हमारा सौभाग्य** भी है।

आइए, सेवा की इस पावन यात्रा का शुभारम्भ करें—

sewa.learngeeta.com के माध्यम से।













यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/learngeeta-ke-maadhym-se-giitaa-adhyyn-kaa-vikaas/aao-giitaa-sevii-bnen-sevaa-kaa-shj-svaabhaavik-aur-jiivnt-m/

07

गीता परिवार की उपलब्धियाँ

All Jails in Maharashtra to start Geeta Santha Varga पृष्ठ १०२

Two expressions by an inmate Shri Ganesh S ji before and after Geeta Classes पृष्ठ १०३

श्रीमद्भगवद्गीता : स्कूली पाठ्यक्रम का हिस्सा पृष्ठ १०५

अनहोनी से होनी: वैशाली दीदी की गीता कहानी पृष्ठ १०७

रायपुर के कैदी को 700 गीता श्लोक कंठस्थ: वासुदेव देश के पहले बंदी गीता-व्रती पृष्ठ १०९

मेगा स्वास्थ्य शिविर में गीता परिवार छत्तीसगढ़ का विशेष प्रदर्शनी पृष्ठ ११२

All Jails in Maharashtra to start Geeta Santha Varga

Maharashtra Chief Minister Devendra Fadnavis has launched an initiative to teach the Bhagavad Gita in all jails across the state, aiming to boost moral values, sense of duty, and self-improvement among inmates.

1 min read

The Geeta Pariwar is fully energized and equipped to support and execute this noble cause.

Already Geeta classes have begun in more than 25 Central and District jails all over Maharashtra.This move has shown remarkable results bringing about positive changes in the lives of inmates. This will in turn contribute to social upliftment and welfare.

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/giitaa-privaar-kii-uplbdhiyaan/all-jails-in-maharashtra-to-start-geeta-santha-varga/

Two expressions by an inmate Shri Ganesh S ji before and after Geeta Classes

किती‌ही चांगली असली तरी यायची येथे नाही कोणाची इच्छा येथूनच प्रारंभ करू नव्या आयुष्याचा

२ मिनट पठन • १ चित्र



Schoolchildren hold up their coloured drawings of Bal Krishna after a Geeta class session.

BEFORE

बंदी शाळा

शाळा भरली बंद्यांची इच्छा त्यांची नसताना

कोणी असतील अपराधी कोणी काही नसताना ||धृ||

येथे कोणी गरीब कोणी धनवान आहे

या येथे प्रत्येक जन बंदी हे प्रमाण आहे..

जपतात येथे सर्व आपापल्या भावना

कोणी करितो नमाज कोणी करे प्रार्थना ||१||

आहेत प्रत्येकांच्या ओठी आयुष्याच्या आठवणी

सांगतात एकमेकांना त्यांच्या नितळ आश्रूंनी

अश्रू येतात सर्वांनाच आठवण करत प्रत्येक क्षण

समजवतात ही एकमेकांना करून आपले मोठे मन||२||

आठवण येते प्रत्येकाला आपल्या कुटुंबाची

म्हणूनच पाहतात वाट -पत्र मुलाखतीची

येथे प्रत्येकाला वाटे यावा माझा जामीन

यावर कोणी म्हणे तथास्तु कोणी म्हणे आमीन ||३||

येथेच शिकतील सारे विचार आणि आचरण

या सत्य संकल्पाचा दाता तूची नारायण

म्हणे ही जागा आहे सुधारणा आणि पुनर्वसनाची

येथूनच सुरुवात होईल वाल्याच्या वाल्मिकीची ||४||

हीच माझी इच्छा, हीच माझी इच्छा.....

AFTER

गीतेची संथा

संसाराच्या दाहाने जेव्हा ठणकू लागेल माथा

आपल्याच कर्माने जेव्हा जीव होईल हा भीता

वाटेवर आयुष्याच्या कर्म वाटू लागेल हे वृथा

असेल गरज घेण्याची तेव्हा गीतेची ही संथा ||१||

अर्जुनापरि विषाद मनी होऊ लागेल हा जिता

कर्म अकर्म यांचाही मनी न उमजे गुंथा

योगी असावे की कर्मी यात गुंतू लागे माथा

असेल गरज घेण्याची तेव्हा गीतेची ही संथा ||२||

असे येथे जो तो कोणी जाणता वा नेणता

इच्छा असेल जाण्याची थोर मोक्षाचीया पंथा

भक्ती- ज्ञान- वैराग्य यांच्या धरूनिया हाता

त्याने गावी सुरातही गीतेची ही सुरेल संथा ||३||

जेव्हा उमजू लागली पुरुषोत्तमाची ही गीता

तेव्हा हरली संसाराची भव, भय आणि व्यथा

मोक्ष संन्यासाची ओढ लागली ये चित्ता

जेव्हा दिली गुरूंनीही आम्हा गीतेची ही संथा ||४||

सोसवेना जेव्हा आम्हा बंदीवासाची ही व्यथा

तेव्हा झाला भाग्योदया आम्हा हाती आली गीता

थोर उपकार तुमचे तुम्ही गुरू माता पिता

तुमच्या मुखातून लाभली आम्हा गीतेची ही संथा ||५||

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/giitaa-privaar-kii-uplbdhiyaan/two-expressions-by-an-inmate-shri-ganesh-s-ji-before-and-aft/

श्रीमद्भगवद्गीता : स्कूली पाठ्यक्रम का हिस्सा

२ मिनट पठन · १ चित्र



स्कूल प्रांगण में तुलसी पूजन दिवस पर शिक्षिकाएँ पूजा करती हुई और लाल दरी पर बैठे विद्यार्थी हाथ जोड़े प्रार्थना में।

मध्यप्रदेश में छात्रों के लिए ऑनलाइन गीता कक्षाओं का शुभारंभ!

भोपाल। उच्च शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश शासन ने राज्य के विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों को छात्रों को **गीता परिवार** द्वारा संचालित ऑनलाइन गीता कक्षाओं में पंजीकरण के लिए प्रोत्साहित करने का अनुरोध किया है। यह पहल अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के अंतर्गत चलाई जा रही है और इसे **"श्रीकृष्ण पाथेय योजना"** से जोड़ा गया है।

सभी सार्वजनिक एवं निजी विश्वविद्यालयों के साथ-साथ सरकारी, अनुदान प्राप्त और निजी महाविद्यालयों से अपेक्षा की गई कि वे छात्रों को अधिक से अधिक संख्या में इन कक्षाओं में जोड़ें।

श्रीमद्भगवद्गीता के 18 अध्यायों को चार स्तरों में और 13 भाषाओं में ओपढ़ाया जाएगा।

इस पहल का उद्देश्य युवाओं को भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और जीवन मूल्यों से जोड़ते हुए गीता के ज्ञान को आधुनिक शिक्षा पद्धति के साथ सहज रूप में उपलब्ध कराना

भारत के कई राज्यों में श्रीमद्भगवद्गीता को स्कूली पाठ्यक्रम का हिस्सा बना लिया गया है।

मुख्य उद्देश्य

चरित्र निर्माण: किताबी ज्ञान के साथ-साथ नैतिक मूल्यों और अनुशासन को मजबूत करना।

तनाव प्रबंधन: परीक्षा और जीवन के तनाव से निपटने के लिए छात्रों को मानसिक संबल प्रदान करना।

सांस्कृतिक जुड़ाव: आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ छात्रों को भारत की प्राचीन विरासत और दर्शन से जोड़ना।

यह रचना वेब पर पढ़ें

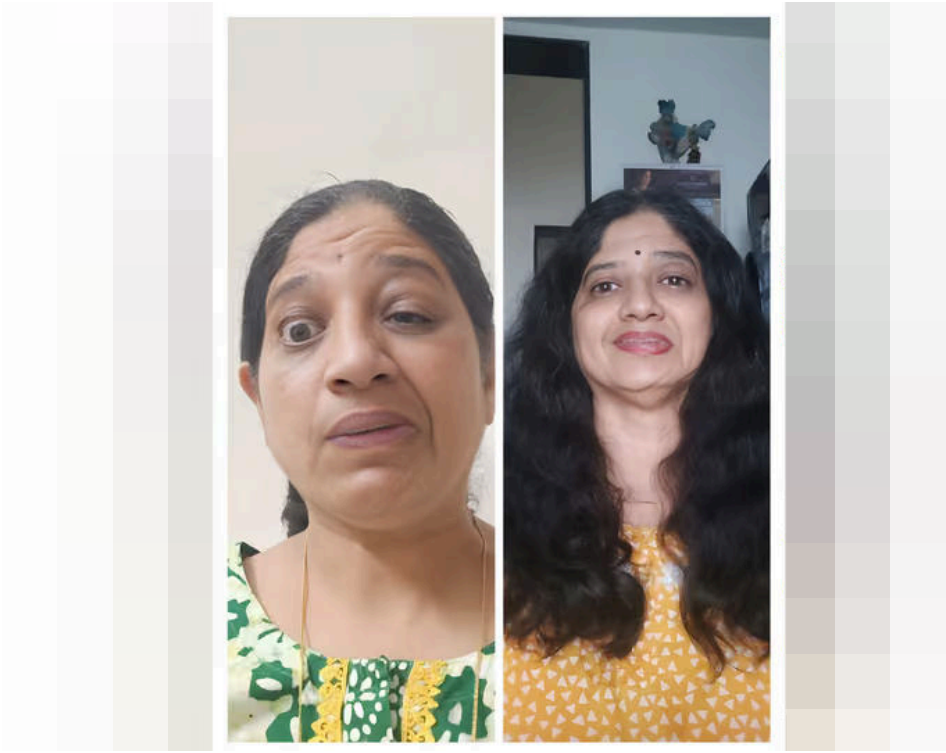
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/giitaa-privaar-kii-uplbdhiyaan/shriimdbhgvdgiitaa-skuulii-paatthykrm-kaa-hissaa/

अनहोनी से होनी: वैशाली दीदी की गीता कहानी

वैशाली दीदी गीता परिवार में सम्मिलित हुई व सारे अठारह अध्यायों को कंठस्थ कर, ग्यारह जनवरी को श्रृंगेरी मठ की परीक्षा केलिये सिद्ध होकर मॉक टेस्ट दी।

१ मिनट पठन · १ चित्र



वैशाली दीदी और एक अन्य महिला वीडियो कॉल पर अपनी गीता-अनुभव कथा साझा करती हुई।

मूकं(ङ्) करोति वाचालं(म्), पंगु (लँ) लंघयते गिरिम्।

यत्कृपा तमहं(वँ) वन्दे, परमानन्द माधवम्॥

हे कृष्ण भगवान् आप प्रत्यक्ष सगुण साकार रूप में वैशाली दीदी के साथ रहे। अट्ठाईस वर्षों से फेशियल पाल्सी से ग्रस्त वैशाली दीदी के मुख कमल को आपके मुखारविन्द से प्रवाहित गीता मॉं के श्लोंकों के उच्चारण ने जो रूप प्रदान किया है वह हम सभी को दाँतों तले अंगुली दबाने पर विवश करता है। हे भगवान आप पुराणपुरुष व सबके आश्रय स्थान हो।

दीदी के मुख पर आया परिवर्तन मंत्रों की शक्ति का जीता जागता उदाहरण है।

श्रद्धेय स्वामीजी श्री गोविन्ददेव गिरिजी ने एक वक्तव्य में कहा था .....

“ chanting of pure and correct pronunciations changes the vibrations of brain cells programming “

वैशाली दीदी के लिये यह यथार्थ है।

■

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/giitaa-privaar-kii-uplbdhiyaan/anhonii-se-honii-vaishaalii-diidii-kii-giitaa-khaanii/

रायपुर के कैदी को 700 गीता श्लोक कंठस्थ: वासुदेव देश के पहले बंदी गीता-व्रती

वासुदेव ने श्रीमद्भगवतगीता के सभी 18 अध्यायों के 700 श्लोक कंठस्थ कर लिए हैं। कठिन परीक्षा पास करने के बाद उन्हें गीता-व्रती की उपाधि दी गई है।

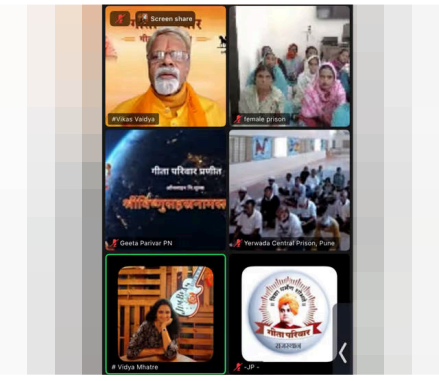
२ मिनट पठन • १० चित्र



गीता पाठ्यक्रम पूर्ण करने वाली महिलाएँ प्रमाणपत्र और 'आगे गीता सीखें' पोस्टर के साथ संस्थान परिसर में।

https://dainik.bhaskar.com/eLvTD08zWZb





बंदी नंबर **8115/38, रायपुर सेंट्रल जेल** में सजा काट रहे 25 साल के **वासुदेव चौहान** की पहचान कुछ दिनों पहले तक इन्हीं अंकों तक सीमित रह गई थी। लेकिन अब जेल एडमिनिस्ट्रेशन के लोग और बाकी बंदी उन्हें **गीता-व्रती** कहकर पुकारते हैं। सजा काट रहे अपने बाकी साथियों के लिए वासुदेव बानगी हैं।

Pull quote **अंधेरे और अकेलेपन के बीच गीता बनी सहारा**

20 साल की कैद हुई, परिवार-दोस्त दूर हो गए

वासुदेव बताते हैं कि वो खुद के साथ दूसरों के लिए भी हीन हो चुके थे। जिंदगी समाप्त करने के बारे में सोचने लगे थे। लेकिन तभी एक दिन जेल प्रशासन ने बताया कि गीता की क्लास शुरू कर रहे हैं।

रोज खुद के भीतर उठ रहे विचारों के मंथन को शांत करने उन्होंने गीता क्लास ज्वाइन कर ली।



धीरे-धीरे चीजें बदलने लगी। जिस अकेलेपन और अंधेरे के चलते वो जिंदगी छोड़ना चाहते थे। वही जिंदगी अब उन्हें मीनिंगफुल लगने लगी।

गीता परिवार इन कैदियों के लिए ऑनलाइन क्लास चलाती हैं।गीता परिवार के सेवा संकल्प से ही कारावास के भीतर सकारात्मकता की यह पावन ज्योति प्रज्ज्वलित हो सकी है।

Learn Geeta Group Classes के माध्यम से आज भारत राष्ट्र की अनेक जेलों में गीता ज्ञान का संचार हो रहा है। बंदी भाई अब केवल दंड का भागी नहीं, बल्कि 'जिज्ञासु' भाव धारण कर पाठक, पथिक और गीताव्रती के रूप में स्वयं को रूपांतरित कर रहे हैं। वासुदेव भैया ने इस गौरवपूर्ण उपलब्धि से न केवल अपने नाम को सार्थक किया है, बल्कि समाज के समक्ष सुधार का एक नया मार्ग प्रशस्त किया है।

यह उपलब्धि संपूर्ण विश्व को संदेश देती है कि यदि संकल्प अडिग और भक्ति अनन्य हो, तो कारावास भी तपोभूमि में परिवर्तित हो सकता है।













वासुदेव चौहान को गीता के अठारह अध्याय कंठस्थ करने पर प्रदान किया गया 'गीताव्रती' प्रमाणपत्र।

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/giitaa-privaar-kii-uplbdhiyaan/raaypur-ke-kaidii-ko-700-giitaa-shlok-kntthsth-vaasudev-desh/

मेगा स्वास्थ्य शिविर में गीता परिवार छत्तीसगढ़ का विशेष प्रदर्शनी

इस श्लोक के आलोक में स्वास्थ्य का वास्तविक अर्थ केवल रोग-मुक्ति नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक संतुलन है। गीता परिवार ने इस शिविर में इसी समग्र दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया।

४ मिनट पठन • १ चित्र



विद्यालय के सभागार में सैकड़ों विद्यार्थी हाथ जोड़े श्लोक दोहराते हुए, सामने माइक लिए गीता परिवार की प्रशिक्षिका।

ईश्वर एवं पूज्य स्वामी जी की विशेष अनुकम्पा तथा वरिष्ठ सेवियों के मार्गदर्शन से छत्तीसगढ़ शासन द्वारा आयोजित पंचदिवसीय मेगा स्वास्थ्य शिविर में **गीता परिवार छत्तीसगढ़ का स्टाल** न केवल चिकित्सकीय सेवा का एक व्यापक मंच बना, बल्कि “गीता और स्वास्थ्य” के समन्वित दृष्टिकोण का एक सशक्त उदाहरण भी प्रस्तुत हुआ।

गीता का स्वास्थ्य दर्शन

भगवद्गीता (अध्याय 6, श्लोक 17) में कहा गया है:

“युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥”

श्लोक सुनें
६.१७

अर्थात—जो व्यक्ति आहार-विहार में संयमित है, कर्मों में संतुलित है, और निद्रा-जागरण में मर्यादित है, वही योगी दुःखों से मुक्त होकर स्वास्थ्य और शांति का अनुभव करता है।

चिकित्सक समुदाय की सक्रिय सहभागिता

आधुनिक चिकित्सा, आयुर्वेद और होम्योपैथी के विशेषज्ञ चिकित्सकों ने गीता कक्षा के उद्देश्य और दीर्घकालीन प्रभाव को समझा। उन्होंने अनुभव किया कि गीता का अध्ययन केवल ज्ञान नहीं देता, बल्कि रोगी और चिकित्सक दोनों को मानसिक संतुलन और आत्मबल प्रदान करता है।

विशेष रूप से आयुर्वेदिक महाविद्यालय के अधिष्ठाता ने संस्कृत पठन और शुद्ध उच्चारण को आयुर्वेद अध्ययन में सहायक बताते हुए विद्यार्थियों को गीता कक्षा से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

शिविर में उपस्थित निजी अस्पतालों एवं शासकीय अस्पतालों के विशेषज्ञ चिकित्सकों—विशेषकर शिशु रोग विशेषज्ञ और स्त्री-प्रसूति रोग विशेषज्ञों ने समूह पंजीकरण की पहल की। उनका मानना था कि गीता कक्षा से रोगियों को केवल औषधीय उपचार ही नहीं, बल्कि मानसिक शांति, आत्मबल और सकारात्मक जीवन दृष्टि भी प्राप्त होगी।

सामान्य जन में गीता के औषधीय प्रभाव की अनुभूति

सामान्य नागरिकों ने गीता के औषधीय और मानसिक स्वास्थ्यवर्धक स्वरूप को प्रत्यक्ष अनुभव किया। स्थल पर ही बड़ी संख्या में पंजीकरण हुए और प्रतिभागियों को "पॉकेट गीता" भेंट की गई। लोगों ने इसे श्रद्धा और उत्साह से स्वीकार किया, मानो उन्हें जीवन का अमृत प्राप्त हुआ हो। अनेक साधक जो पूर्व में पंजीकृत थे किंतु सक्रिय सेवा में नहीं जुड़ पाए थे, इस शिविर में पुनः गीता परिवार से जुड़े। उन्होंने अनुभव किया कि गीता परिवार केवल संगठन नहीं, बल्कि जीवन को दिशा देने वाला परिवार है।

"छत्तीसगढ़ के हर घर में गीता हो, हर कर में गीता हो"—इस संकल्प के साथ गीता परिवार स्वास्थ्य और साधना की इस मशाल को आगे बढ़ाता रहेगा।

गीता की दृष्टि से स्वास्थ्य के आयाम

शारीरिक स्वास्थ्य: गीता संयमित आहार और नियमित साधना पर बल देती है। उचित आहार, योगाभ्यास और आयुर्वेदिक जीवनशैली शरीर को रोग-मुक्त और ऊर्जावान बनाते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य: ध्यान, प्रार्थना और गीता का अध्ययन मन को स्थिरता और शांति प्रदान करते हैं। गीता कहती है कि **"अशांतस्य कुतः सुखम्"** — अशांत मन में सुख नहीं हो सकता। अतः मानसिक संतुलन ही वास्तविक स्वास्थ्य का आधार है।

सामाजिक स्वास्थ्य: सेवा, सहयोग और संगठनात्मक कार्य व्यक्ति को समाज से जोड़ते हैं। गीता का संदेश है कि **"ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः"** — दूसरों के हित में कार्य करना ही सर्वोच्च धर्म है। यह सामाजिक स्वास्थ्य का मूल है।

आध्यात्मिक स्वास्थ्य: आत्मबल, ईश्वर-स्मरण और धर्मपालन से जीवन में गहन संतोष और आंतरिक शक्ति का संचार होता है। गीता में कहा गया है कि **"मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु"** — मन को भगवान में स्थिर करने से जीवन में परम शांति और स्वास्थ्य प्राप्त होता है।

"स्वास्थ्य केवल शरीर की स्थिति नहीं, बल्कि आत्मा की प्रसन्नता और जीवन का संतुलन है।"_

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2026-01/giitaa-privaar-kii-uplbdhiyaan/megaa-svaasthy-shivir-men-giitaa-privaar-chttiisgddh-kaa-vis/

08

कार्यकर्ता शिविर

गीता परिवार 'तेजस' दक्षिणांचल कार्यकर्ता शिविर पृष्ठ ११५

मध्य प्रदेश गीता परिवार की ऐतिहासिक पहल – "तेजोहम" आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर पृष्ठ ११७

08

०८ कार्यकर्ता शिविर

गीता परिवार 'तेजस' दक्षिणांचल कार्यकर्ता शिविर

३ मिनट पठन

समाज और संगठन की नींव कार्यकर्ताओं पर टिकी होती है। कार्यकर्ता ही वह जीवंत शक्ति है जो विचारों को कर्म में परिणत करती है। गीता परिवार के लिए कार्यकर्ता शिविर केवल प्रशिक्षण का माध्यम नहीं, बल्कि आत्मिक जागरण और संगठनात्मक ऊर्जा का स्रोत है। ऐसे शिविरों में साधक अपने जीवन को गीता के आदर्शों से जोड़ते हैं, सेवा और साधना का संकल्प लेते हैं, तथा संगठन के कार्यों को नई दिशा देने हेतु प्रेरित होते हैं।

भाग्यनगर (हैदराबाद) में 19, 20 एवं 21 दिसम्बर को आयोजित 'तेजस' दक्षिणांचल कार्यकर्ता शिविर इस दृष्टि से अद्वितीय रहा। दक्षिण भारत के पाँच राज्यों से आए 18 से 75 वर्ष आयु वर्ग के लगभग 150 साधकों ने इस शिविर में भाग लेकर गीता परिवार की कार्यपद्धति, साधना और सेवा की गहन अनुभूति प्राप्त की। यह शिविर केवल एक आयोजन नहीं था, बल्कि दक्षिणांचल में गीता परिवार के offline कार्य की सशक्त नींव रखने वाला ऐतिहासिक क्षण था।

नेतृत्व और मार्गदर्शन

शिविर की विशेषता यह रही कि साधकों को गीता परिवार के तीनों आंचल प्रमुखों के मार्गदर्शन का सौभाग्य मिला। राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. संजय मालपाणी जी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष (दक्षिणांचल) श्री हरिनारायण व्यास जी, अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष एवं LearnGeeta के प्रोग्राम डायरेक्टर डॉ. आशु गोयल जी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष (मध्यांचल) श्रीमती प्रमिला माहेश्वरी जी तथा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष (उत्तरांचल) श्रीमती मीनाक्षी गुप्ता जी के सान्निध्य ने शिविरार्थियों को अद्भुत वैचारिक समृद्धि प्रदान की। विशेष रूप से चिलकुर बालाजी मंदिर के महंत श्री सी. इस. रंगराजन जी के आशीर्वचन साधकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बने।

विविध सत्र और अनुभव

योग एवं आत्मिक साधना के सत्र श्री गिरीश जी डागा, श्री दत्ता जी भांदुर्गे तथा श्री सौरभ जी म्हाळस के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुए। साथ ही अन्य प्रशिक्षकों के निर्देशन में प्रज्ञा-संवर्धन, संस्कृत-संथा, हस्तकला एवं रंगोली, नाट्यकला, कथा-कथन तथा प्रात्यक्षिक प्रबोधन की कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन विविध सत्रों ने साधकों को आत्मिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक समृद्धि प्रदान की। अंतिम दिन डॉ. संजय मालपाणी जी के हृदय ब्रह्म ध्यान के दैवी अनुभव ने साधकों को आत्मिक कृतार्थता का भान कराया।

संगठनात्मक उपलब्धि

इस शिविर ने दक्षिणांचल में गीता परिवार के कार्य को नई ऊर्जा और दृढ़ता प्रदान की। गीता परिवार, भाग्यनगर की अध्यक्षा सौ. श्रद्धा रावदेव जी एवं मंत्री गौरव हेडा जी के नेतृत्व में कार्यरत 45–50 कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम और दृढ़ सेवाभाव ने इस आयोजन को अत्यंत यशस्वी और आनंददायी बना दिया। शिविरार्थियों ने संकल्प लिया कि वे गीता परिवार के कार्यों को और अधिक व्यापकता और गहराई से आगे बढ़ाएँगे।

'तेजस' दक्षिणांचल कार्यकर्ता शिविर' ने यह सिद्ध कर दिया कि कार्यकर्ता ही संगठन की आत्मा हैं। जब वे गीता के आदर्शों से प्रेरित होकर सेवा और साधना का संकल्प लेते हैं, तब संगठन केवल बढ़ता ही नहीं, बल्कि समाज में परिवर्तन का वाहक बनता है। गीता परिवार का यह शिविर दक्षिण भारत में एक नवीन अध्याय का आरम्भ है—जहाँ गीता का प्रकाश कार्यकर्ताओं के माध्यम से जन-जन तक पहुँचेगा।

"संगठन ही शक्ति है; जब साधना और सेवा से जुड़कर संगठन आगे बढ़ता है, तब समाज में परिवर्तन की नई किरण प्रस्फुटित होती है।"

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/kaarykrtaa-shivir/giitaa-privaar-tejs-dkssinnaancl-kaarykrtaa-shivir/

मध्य प्रदेश गीता परिवार की ऐतिहासिक पहल – “तेजोहम” आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

सद्गुरुदेव स्वामी श्री गोविंददेव गिरी जी महाराज के आशीर्वाद एवं श्रीकृष्ण कृपा से मध्य प्रदेश गीता परिवार द्वारा सिरोंज और रतलाम में पहली बार “तेजोहम” आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविरों का भव्य आयोजन किया गया। यह आयोजन मध्य प्रदेश गीता परिवार के इतिहास में एक गौरवपूर्ण और प्रेरणादायी क्षण रहा।

४ मिनट पठन · ६ चित्र



भारतीय संस्कृति में स्त्री का सर्वोच्च स्थान

भारतीय संस्कृति में स्त्री को सदैव आदर और सम्मान का प्रतीक माना गया है। हमारे शास्त्रों और पुराणों में स्त्री को केवल गृहस्थ जीवन की धुरी नहीं, बल्कि संपूर्ण समाज और राष्ट्र की आत्मा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है।

महाभारत में स्पष्ट कहा गया है: **“यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता”** — अर्थात जहाँ स्त्रियों का सम्मान होता है, वहाँ देवताओं का वास होता है। यह वचन केवल एक आदर्श नहीं, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन का मूल आधार है।

देवी दुर्गा के रूप में स्त्री शक्ति की अधिष्ठात्री है, जो अन्याय और अधर्म का संहार करती है। देवी लक्ष्मी के रूप में वह समृद्धि और सौभाग्य की दात्री है, जो परिवार और समाज को स्थिरता प्रदान करती है। देवी सरस्वती के रूप में वह ज्ञान और विद्या की अधिष्ठात्री है, जो मानव जीवन को प्रकाशमान करती है। इस प्रकार स्त्री को शक्ति, समृद्धि और ज्ञान की त्रिवेणी के रूप में देखा गया है।

स्त्री केवल परिवार की धुरी नहीं, बल्कि संस्कृति की वाहक और राष्ट्र की प्रेरणा है। उसकी करुणा, त्याग और मातृत्व समाज को संवेदनशील बनाते हैं, वहीं उसका साहस और आत्मबल समाज को दृढ़ता प्रदान करते हैं।

आत्मरक्षा और आत्मबल की आवश्यकता

आज के समय में जब हिन्दू समाज अनेक चुनौतियों से जूझ रहा है, बालिकाओं के लिए आत्मरक्षा और आत्मबल अत्यंत आवश्यक है। यह प्रशिक्षण केवल शारीरिक सुरक्षा का साधन नहीं, बल्कि आत्मविश्वास

और साहस का आधार है। इन शिविरों ने बेटियों को यह अनुभव कराया कि वे केवल रक्षक की प्रतीक्षा न करें, बल्कि स्वयं अपनी रक्षा और जीवन की दिशा तय करने में सक्षम बनें।

आयोजन का स्वरूप

मध्य प्रदेश के प्रभारी श्री कैलाश भैया सोनी एवं सचिवा निशा दीदी शर्मा के सहयोग से दो शिविर सम्पन्न हुए।

1. सिरोंज शिविर



गीता परिवार मध्यप्रदेश और शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय रतलाम द्वारा आयोजित 'तेजोऽहम्' आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर का बैनर।

22 दिसम्बर से 27 दिसम्बर 2025



KBDM महाविद्यालय एवं विद्यालय, सिरोंज

लगभग 300 बालिकाएँ एवं किशोरियाँ

समय: प्रातः 8:00 बजे से सायं 5:30 बजे तक

श्वेता दीदी त्यागी एवं जयसिंगपुर की युवा टीम के सहयोग से यह षड्दिवसीय शिविर सम्पन्न हुआ।

2. रतलाम शिविर



29 दिसम्बर 2025 से 2 जनवरी 2026

स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, रतलाम



लगभग 200 बालिकाएँ, जिनमें अधिकांश आदिवासी बहनें

समय: प्रातः 10:30 बजे से दोपहर 4:00 बजे तक

डॉ. अर्चना शर्मा जी के सहयोग से यह पाँच दिवसीय शिविर सम्पन्न हुआ।

दोनों शिविरों में परम पूज्य गुरुदेव श्रद्धेय स्वामी श्री गोविंददेव गिरी जी महाराज का दिव्य आशीर्वाद एवं गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. संजय मालपाणी जी का संदेश बालिकाओं को प्राप्त हुआ। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष (मध्यांचल) श्रीमती प्रमिला माहेश्वरी जी के अनुभवी मार्गदर्शन में बेटियों के जीवन में आत्मबल, धन्यता और सम्यक दृष्टि का संचार हुआ।

छात्राओं के अनुभव

शिविर में भाग लेने वाली छात्राओं ने अपने अनुभव साझा किए—

सुमन ओरा (खिमाखेड़ी): योग, ज्ञानेन्द्रिय संवर्धन, लाठी चलाना, गीत, श्लोक और प्रार्थनाएँ सीखीं। आनंद और आत्मविश्वास प्राप्त हुआ।



सिरोंज (विदिशा) में युवतियों और किशोरियों के लिए आयोजित 'तेजोऽहम्' आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर का पोस्टर।

निशा गुर्जर (BA प्रथम वर्ष): धर्म की परंपराओं का महत्व जाना—बिंदी, चूड़ी, बिछिया आदि। ध्यान के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का अद्भुत अनुभव हुआ। लाठी प्रशिक्षण से आत्मरक्षा का आत्मविश्वास बढ़ा।

विनीता कुशवाह (BA द्वितीय वर्ष, सिरोंज): आत्मरक्षा के साथ-साथ जीवन जीने की राह समझी। त्योहारों के महत्व को जाना।

अनुशिखा राठौर (B.Sc द्वितीय वर्ष): आत्मरक्षा, योग और जीवन कौशल से आत्मविश्वास बढ़ा। ज्ञानेन्द्रिय संवर्धन से मानसिक विकास हुआ।

कृतिका नागर (B.Sc प्रथम वर्ष): पाँच दिवसीय शिविर ने जीवन को देखने का नया दृष्टिकोण दिया। आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच का संचार हुआ।

इन अनुभवों से स्पष्ट है कि शिविर ने बालिकाओं के जीवन में गहरा परिवर्तन किया। उन्हें लगा कि गीता परिवार उनके लिए अपना ही परिवार है।

"नारी केवल परिवार की धुरी नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा है। जब वह अपनी शक्ति पहचानती है, तो समाज में परिवर्तन की नई किरण प्रस्फुटित होती है।"

■

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2026-01/kaarykrtaa-shivir/mdhy-prdesh-giitaa-privaar-kii-aitihaasik-phl-tejohm-aatmrks/

09

Bharat ka itihas The sole living legacy of the ancient world

Bharat ka itihas The sole living legacy of the ancient world पृष्ठ १२३

The Teacher to the World पृष्ठ १२४

Bharat ka itihas The sole living legacy of the ancient world

1 min read

The sole living legacy of the ancient world

Bharat, commonly referred to as India, is more than just a nation; it is the only country on Earth that has preserved the splendor of the ancient era. Indigenous cultures worldwide have been eradicated due to invasions or colonization. What we see today are mere remnants of the ancient world, found in lifeless museum corridors or inexpensive replicas in theme parks. Whether it's the grand Karnak Temple in Egypt or the remarkable Bamiyan Buddhist monasteries, nothing has withstood the onslaught of the Abrahamic faiths.

Bharat has endured fierce assaults on its way of life. Nevertheless, the core of its culture, rituals, and traditions is so deeply embedded in the hearts of its people that it has withstood the ravages of time. Thus, even after numerous attempts to obliterate its temples (such as the Somnath temple), they continue to stand today, shining and steadfast as symbols of resilience, patience, and profound devotion in the hearts of the people of this blessed land.

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/bharat-ka-itihas-the-sole-living-legacy-of-the-ancient-world/bharat-ka-itihas-the-sole-living-legacy-of-the-ancient-world/

The Teacher to the World

4 min read · ५ चित्र



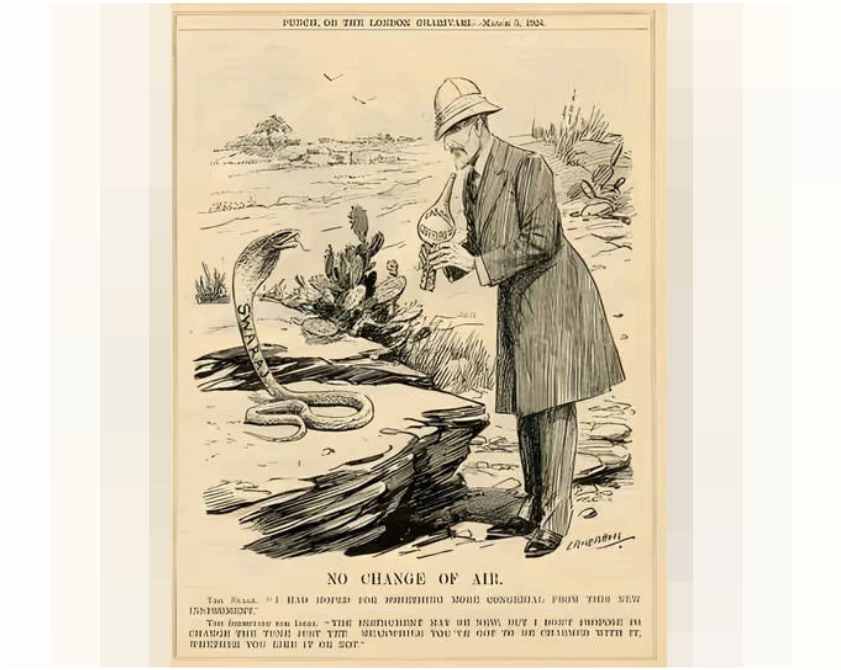
The Teacher to the World



Maharshi Patanjali depicted in meditation within a radiant golden aura.

Nalanda University was the most esteemed institution in the world, attracting seekers of wisdom from across the ancient globe who came

to learn from the most respected teachers available. Nalanda was not the only university in Bharat; there was also Takshashila University, which produced the master of economics, Sri Vishnugupta Chanakya. The crowning glory of Bharat was the Sharada Peetha in Kashmir, the epicenter of philosophical and scientific education for the world.



A Punch cartoon, 'No Change of Air', casting Indian self-rule as a cobra being charmed by a British official.

The Gurus of Bharat hold a strong belief in Karma Yoga. They were indifferent to the fact that Europeans appropriated the wisdom of this magnificent land, repackaging and copyrighting it as their own. Yet, when one master envisioned his disciple traveling to the land of the whites to share the sages' wisdom, the disciple overcame every obstacle to illuminate the world with the knowledge of this great land. This master was Sri Ramakrishna Paramhansa, and the disciple was Swami Vivekananda.

At that time, Bharat was still under British rule, and many around the globe perceived her merely as the land of snake charmers. Defying every misconception and making waves across the USA and beyond, that saffron-clad monk introduced the world to Karma Yoga, one of the most relevant teachings from the Bhagavad Gita. Bharat was ultimately recognized as the Vishwa Guru, the source of wisdom for the world.

Ahimsa and Modern India



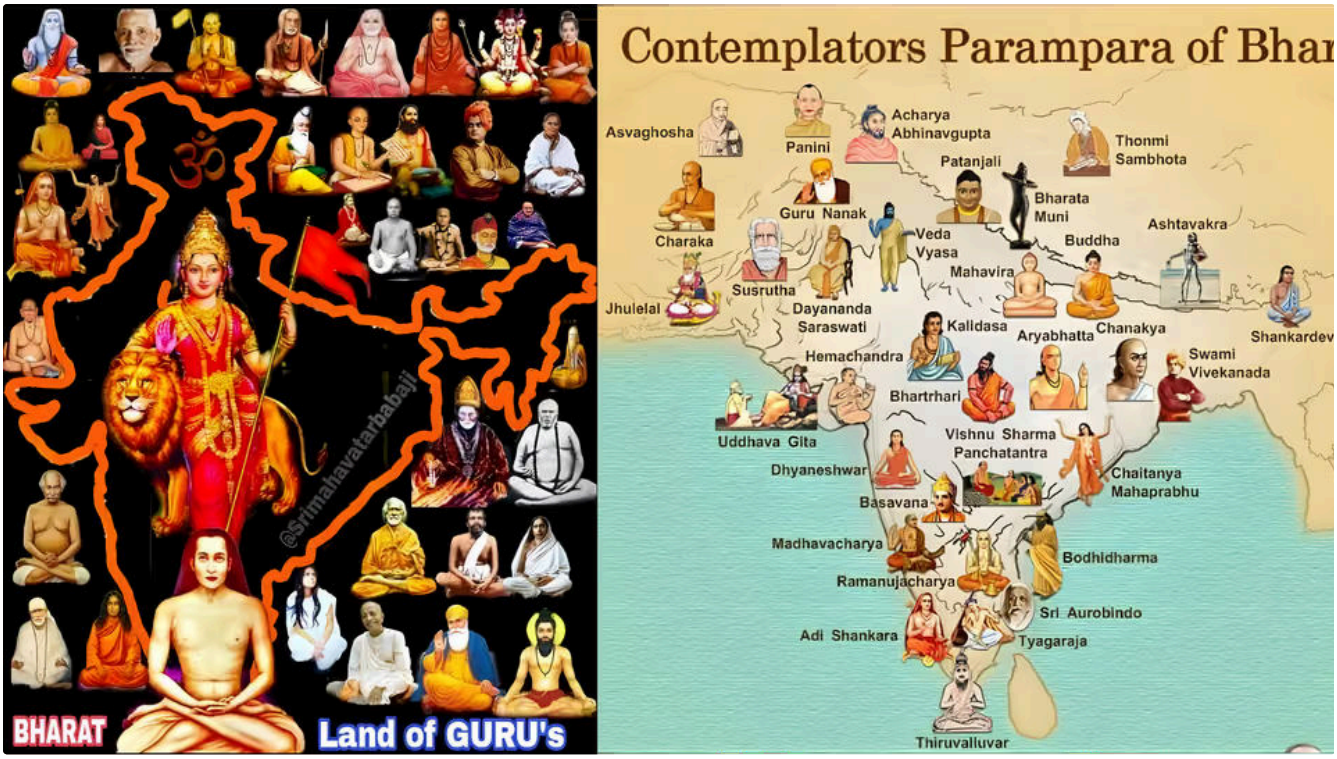
While the concept of Bharat is timeless, Bharat as a sovereign nation emerged on August 15, 1947. The journey to independence was fraught with challenges. The entire nation united repeatedly to resist the colonizers. Netaji Subhash Chandra Bose established the Indian National Army, exerting significant pressure on the British regime from abroad during World War II. Concurrently, Mahatma Gandhi, with his philosophy of ahimsa (non-violence), fostered internal resistance against British rule. Countless leaders and ordinary citizens sacrificed their lives for this cause, the cause to liberate the land they revered as their Mother, their goddess.

Ultimately, the British were compelled to depart, but they partitioned the South Asian landmass, Bharat, into West and East Pakistan, with the remainder designated as India. East Pakistan later became the independent nation of Bangladesh in 1970.

In the journey of modernizing Bharat to integrate into the global economy and to flourish as a hub of knowledge, people started to lose their appreciation for their own cultural wealth, knowledge, and life philosophies. The perspective began to lean towards the west; anything adopted from there was regarded as modern and right.

The ancient science of Yoga, originally documented thousands of years ago by Rsi Patanjali, was embraced by contemporary India only after receiving validation from the west. Times are changing! Now, the west is becoming receptive to Bharat's rich ideas and traditions.

This phase of Itihasa presents an opportunity for not just the people of Bharat, but for the entire world, to explore the depth of her knowledge, to study the wisdom of her sages, to learn from it, and to share these insights globally.



"O India! With this mere echoing of others, with this base imitation of others, with this dependence on others, this slavish weakness, this vile detestable cruelty — wouldst thou, with these provisions only, scale the highest pinnacle of civilization and greatness? Wouldst thou attain, by means of thy disgraceful cowardice, that freedom deserved only by the brave and the heroic?

O India! Forget not that the ideal of thy womanhood is Sita, Savitri, Damayanti; forget not that the God thou worship is the great Ascetic of ascetics, the all-renouncing Shankara, the Lord of Umâ; forget not that thy marriage, thy wealth, thy life are not for sense-pleasure, are not for thy individual personal happiness; forget not that thou art born as a sacrifice to the Mother's altar; forget not that thy social order is but the reflex of the Infinite Universal Motherhood; forget not that the lower classes, the ignorant, the poor, the illiterate, the cobbler, the sweeper, are thy flesh and blood, thy brothers. Thou brave one, be bold, take courage, be proud that thou art an Indian, and proudly proclaim, "I am an Indian, every Indian is my brother." Say, "The ignorant Indian, the poor and destitute Indian, the Brahmin Indian, the Pariah Indian, is my brother." Thou, too, clad with but a rag round thy loins proudly proclaim at the top of thy voice: "The Indian is my brother, the Indian is my life, India's gods and goddesses are my God. India's society is the cradle of my infancy, the pleasure garden of my youth, the sacred heaven, the Varanasi of my old age." Say, brother: "The soil of India is my highest heaven, the good of India is my good," and repeat and pray day and night, "O Thou Lord of Gauri, O Thou Mother of the Universe, vouchsafe manliness unto me! O Thou Mother of Strength, take away my weakness, take away my unmanliness, and make me a Man!" ~ Swami Vivekananda

■

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/bharat-ka-itihas-the-sole-living-legacy-of-the-ancient-world/the-teacher-to-the-world/

10

सनातन धर्म

10

१० सनातन धर्म

सनातन धर्म

मुख्य कारण यह है कि ये सनातन में मन की एकाग्रता बढ़ाने की एक वैज्ञानिक विधा है।सनातन काल से पूजा पद्धति प्रदेश,परिस्थिति व सामाजिक परिवेश के कारण माथे पर तिलक के भिन्न भिन्न आकार-कहीं गोल,कहीं त्रिपुण्ड,कहीं श्री आकार में। कहीं रोली-कुमकुम,कहीं चन्दन, कहीं भस्म का उपयोग देखा गया है।

३ मिनट पठन

तिलक का महत्त्व- विज्ञान दृष्टि से

Sanātana is nature, Dharma is the way.

Together they define the eternal way of life

चालीस वर्ष पूर्व प. पू. स्वामी जी के निर्देशन में स्थापित **गीता परिवार के पंचसूत्री सिद्धांतों में से एक है विज्ञान दृष्टि**

आज उस विषय में थोड़ा जानेंगे। लगभग हम सभी सेवियों ने माथे पर तिलक धारण करने का आग्रह बार बार सुना है।ये अनुरोध क्यों किया जाता है? क्या तिलक धारण करना कोई मुखमण्डल की शोभा बढ़ाने के लिए है।

Pull Quote 1: **तिलक का मूल उद्देश्य व भ्रूमध्य में ही क्यों?**

पर सभी में एक निश्चित बात है कि दोनों भवों के बीच में (भ्रूमध्य)में एक गोलाकार बिंदी का होना आवश्यक है -क्यों ? भ्रूमध्य में ही क्यों ? क्योंकि भ्रूमध्य की सीध में मस्तिष्क की गहराई में तीसरा नेत्र (Pineal gland) स्थापित है।

आज पश्चिमी देश परमाणु तकनीक आदि का विकास करके स्वयं को श्रेष्ठ समझने का दम्भ भर रहे हैं।उन श्रेष्ठ देशों में 17th-century French philosopher René Descartes ने Third Eye के अस्तित्व को स्वीकारा। उसे Pineal Gland का नाम दिया।इस वास्तविकता को हम सनातनी सहस्रों वर्षों से जानते हैं। शाण्डिल्य उपनिषद, मुण्डक उपनिषद, जाबाल उपनिषद श्वेताश्वतर उपनिषद में इसके बारे में विस्तार से बताया गया है।

Pull Quote 2: **तिलक केवल परंपरा नहीं, बल्कि सनातन विज्ञान की गहन साधना है।**

हमे पता है की मस्तिष्क में 86 अरब तंत्रिका कोशिकाएं(86 billion Neurons)होते हैं।ये न्यूरॉन्स हर मिलि सेकंड में एक दूसरे को इलेक्ट्रिकल इम्पल्स(electric impulse)भेजते हैं।इन सब का पावरहाउस स्विच कहाँ है ?हमारे ऋषि-मुनियों ने इसका पता सहस्रों वर्ष (Thousands years)पहले शरीर की चीर-फाड़ से नहीं, ध्यान की गहराइयों से लगाया।

इस भाग को हल्का सा दबाया जाए तो प्रभाव सीधे तीसरे नेत्र पर पड़ता है उसी को क्रियाशील व एकाग्रित रखने के लिए तिलक आदि लगाया जाता है।अनामिका से तिलक लगा कर अंगूठे से ऊपर की ओर दिशा दी जाती है।इसमें रोली-कुमकुम,चन्दन,भस्म और आकार का भिन्न -भिन्न प्रभाव होता है।

सनातन संस्कृति में महिलाओं को पुरूषों से अधिक समर्पित माना गया है और दायित्व दिए गए है।इसलिये वे सदैव (जीवन भर)तिलक(बिंदी) लगाती हैं।यदि विधवा हो जाएँ तो चन्दन का।क्योंकि सूक्ष्म कार्य करने में उनका कौशल अधिक होता है।

सनातन के तिलक धारण करने के,बिंदी लगाने के सिद्धांत का वैज्ञानिक कारण जान लेने के बाद अब सभी जान गए होंगे कि गीता परिवार में तिलक लगाने का आग्रह क्यों किया जाता है।

जी हाँ वैज्ञानिक दृष्टि से अब ये और बात है कि इसके कारण मुख मण्डल की शोभा भी बढ़ जाती है।

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/snaatn-dhrm/snaatn-dhrm/

11

Kids Section

Shree Krishna Alphabets पृष्ठ १३३

Ignited minds पृष्ठ १३५

श्लोक पझल गेम पृष्ठ १३७

Nachiketa: The Boy Who Chose Truth पृष्ठ १३९

Aahar पृष्ठ १४१

Dharma Detective Quiz: पृष्ठ १४३

Unscramble the Daivī Qualities पृष्ठ १४५

Mini-Game: Arrange the Ramayana Events पृष्ठ १४६

Theta Maze पृष्ठ १४८

Shree Krishna Alphabets

1 min read · १ चित्र



An ornamented flute rests across peacock feathers on a cream stone surface.



यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/kids-section/shree-krishna-alphabets/

11

११ Kids Section

Ignited minds

६ मिनट पठन

प्रश्न 1. यदि कोई हमारे साथ गलत करे, तो क्या क्रोध में अपने लिए खड़े होना गलत है?

जब कोई हमारे साथ गलत करता है, तब मन में क्रोध आना स्वाभाविक है, परन्तु क्रोध में कही गई बात अक्सर बिगड़ जाती है। यदि हम शान्त होकर अपनी बात समझदारी से कहें, तो सामने वाला हमारी बात अच्छे से समझता है। अपने अधिकारों की रक्षा करना आवश्यक है, परन्तु क्रोध किए बिना भी यह किया जा सकता है।

सीख: शान्त मन से कही गई बात सबसे अधिक प्रभावी होती है।

प्रश्न 2. चंचल मन को एक काम में एकाग्र कैसे करें?

मन को एकाग्र करने के लिए प्रतिदिन अभ्यास करना बहुत आवश्यक है। ध्यान करने से मन शान्त होता है। गीता जी का पठन मन को स्थिर और पवित्र बनाता है। पढ़ाई के बीच छोटे विश्राम लेने से मन फिर से ताज़ा हो जाता है और कार्य में रुचि बनी रहती है।

सीख: नियमित अभ्यास से एकाग्रता बढ़ती है।

प्रश्न 3. धर्म और कर्म में क्या अन्तर है?

धर्म हमें सही मार्ग दिखाता है और कर्म हमें उस मार्ग पर चलाता है। जब हम धर्म के अनुसार कर्म करते हैं, तब जीवन में शान्ति और सफलता मिलती है। केवल कर्म करना पर्याप्त नहीं, उसे सही भावना से करना आवश्यक है।

सीख: सही कर्म ही सच्चा धर्म है।

प्रश्न 4. यदि स्वर्ग के बाद पुनर्जन्म होता है, तो क्या नर्क के बाद भी होता है?

हाँ, होता है। आत्मा अपने अच्छे-बुरे कर्मों का फल भोगकर फिर पृथ्वी पर जन्म लेती है। यह नया जन्म सुधार का अवसर होता है, ताकि हम और अच्छे कर्म कर सकें।

सीख: हमारे कर्म ही हमारा भविष्य बनाते हैं।

प्रश्न 5. क्या साधुओं में केवल सात्त्विक गुण ही होते हैं?

साधुओं में सत्त्वगुण अधिक होता है, जिससे वे शान्त रहते हैं। परन्तु वे अभ्यास से अपने मन को नियंत्रित कर लेते हैं और किसी गुण के अधीन नहीं रहते।

सीख: आत्मसंयम से जीवन श्रेष्ठ बनता है।

प्रश्न 6. मोक्ष के बाद महापुरुष पुनः जन्म क्यों लेते हैं?

वे समाज का कल्याण करने, लोगों को सही मार्ग दिखाने और प्रेम फैलाने के लिए आते हैं। उनका जीवन सेवा से भरा होता है।

सीख: जीवन सेवा के लिए है।

प्रश्न 7. अच्छे और बुरे शब्द कैसे पहचानें?

जो शब्द किसी को दुःख पहुँचाएँ या अपमान करें, वे अच्छे नहीं होते। हमें हमेशा शिष्ट और मधुर भाषा बोलनी चाहिए।

सीख: मधुर वाणी सबका मन जीत लेती है।

प्रश्न 8. डायनासोर किस युग में रहे होंगे?

संभावना है कि वे बहुत प्राचीन काल में रहे हों। पृथ्वी पर जीवों का विकास समय के साथ हुआ है, इसलिए बड़े जीव पहले रहे होंगे।

सीख: संसार समय के साथ बदलता रहता है।

प्रश्न 9. रावण को भक्त क्यों नहीं कहा जाता?

उसकी पूजा प्रेम से नहीं, बल्कि लाभ पाने के लिए थी। सच्ची भक्ति निस्वार्थ होती है।

सीख: भक्ति में स्वार्थ नहीं होना चाहिए।

प्रश्न 10. क्या भूत होते हैं?

वे भी एक प्रकार की योनि हैं, पर हमें डरने की आवश्यकता नहीं। ईश्वर हमें साहसी बनने की शिक्षा देते हैं।

सीख: निर्भय रहना ही सच्ची शक्ति है।

प्रश्न 11. सच्ची तपस्या क्या है?

अपने कर्तव्यों को पूरी लगन और ईमानदारी से निभाना ही तपस्या है।

सीख: कर्तव्य पालन सबसे बड़ा धर्म है।

प्रश्न 12. क्रोध को कैसे शान्त करें?

ईश्वर का स्मरण करें, गहरी साँस लें और थोड़ी देर रुकें। मन अपने आप शान्त हो जाता है।

सीख: धैर्य से हर समस्या हल होती है।

प्रश्न 13. सत्सङ्ग का महत्व क्या है?
सत्सङ्ग हमें सही दिशा देता है और मन को शान्ति प्रदान करता है।
सीख: अच्छा संग जीवन को उज्ज्वल बनाता है।

प्रश्न 14. गीता अध्ययन में हमारा प्रयास क्यों आवश्यक है?
अवसर ईश्वर देते हैं, पर उसका लाभ तभी मिलता है जब हम परिश्रम करें।
सीख: प्रयास से ही सफलता मिलती है।

प्रश्न 15. श्रद्धा से चमत्कार क्यों होते हैं?
गहरी आस्था मन को शक्तिशाली बनाती है और असंभव को भी संभव कर देती है।
सीख: विश्वास में अद्भुत शक्ति होती है।

प्रश्न 16. वेद हमें कैसे प्राप्त हुए?
ऋषियों ने तपस्या से उन्हें जाना और वेदव्यास जी ने उन्हें लिखा।
सीख: ज्ञान साधना से प्राप्त होता है।

प्रश्न 17. ईश्वर को पाने का मार्ग क्या है?
श्रद्धा, भक्ति और अच्छे कर्म ही ईश्वर तक पहुँचाते हैं।
सीख: शुद्ध हृदय में ईश्वर वास करते हैं।

प्रश्न 18. साधु-सन्त अपने अनुभव क्यों नहीं बताते?
क्योंकि उनका आनन्द शब्दों से परे होता है और वे विनम्र रहते हैं।
सीख: सच्चा सुख भीतर होता है।

प्रश्न 19. सात्त्विक भोजन क्यों श्रेष्ठ है?
यह शरीर को स्वस्थ और मन को शान्त बनाता है।
सीख: जैसा भोजन, वैसा जीवन।

प्रश्न 20. अच्छे गुण कैसे विकसित करें?
ध्यान, अध्ययन, शुद्ध आहार और अच्छे व्यवहार से।
सीख: छोटे अच्छे प्रयास बड़े परिवर्तन लाते हैं।

Q21. Why was Bhima's grandson, Barbarik, not allowed to fight in the Mahabharata war, even though his arrows never missed and he vowed to support the weaker side?

Barbarik had promised to always help the weaker side in battle. But in the Mahabharata war, this would have caused endless fighting. Each time one side became stronger, the other would turn weaker, and Barbarik would switch sides again. This would keep the war going and could destroy both armies.

Shri Krishna stopped him because the war was meant to restore **Dharma (righteousness)**, not to follow strength or emotion. Supporting the weaker side is not always right — we must support what is just and true.

Takeaway:
Always stand with truth and Dharma, not simply with the weaker side.

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2026-01/kids-section/ignited-minds/

श्लोक पझल गेम

२ मिनट पठन · २ चित्र





वृत्ताकार भूलभुलैया का हल लाल रेखा से दिखाया गया है, दोनों ओर बालक-बालिकाएँ और बाल कृष्ण चित्रित हैं।

आईए! चलिए, खेलते हैं, श्लोक/श्लोकांक याद करने के लिए **श्लोक पझल गेम**

(**शब्द को पकड़िए** और श्लोक के चरण व श्लोक नंबर याद करने की कोशिश कीजिए।)

जैसे की

पितृ, देव व भूत सभी की पूजा कर ली परंतु इच्छापूर्ति कैसे हो?

उत्तर देखें

यान्ति **देवव्रता** देवान्, पितृन्यान्ति **पितृव्रताः**।

भूतानि यान्ति भूतेज्या, यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्।।

1. मुंबई के **समोसे** का **पिताजी, गुरु, चराचर, लोक** परलोक सभी पर, **अप्रतिम प्रभाव** हैं!!!!

2. **भूत, भविष्य, वर्तमान** सब जानो या ना जानो, परंतु **वेदों** को जानना तो बनता ही है।

3. पता है! सुबह **आदित्य** के **तेज** से संपूर्ण जगत में सभी लोगों के साथ, फूल भी **खिल** उठते हैं।

4. **यज्ञ, तप, दान** की बातें तो सुन ली, परंतु खाली पेट भजन ना होवे... सर्व **प्रिय आहार** मिल जाए बस! मानो बेड़ा पार!!

5. चलो बच्चो! अब **"ब्रह्म"** को जानते हैं। कैसे? पहले **उत्तर** दिशा में जाइए, **अग्नि** को प्रकट कीजिए, फिर देखिए कमाल!!!

6. **ब्राह्मण** के मुख से मोक्ष की बातें तो सुन ली परंतु **कर्मजान्** से छूट पाए क्या?

7. क्या कभी किसी ने सोचा?? इतनी बारिश में **अन्न** के अलावा **कर्म व यज्ञ भी उद्भव** होते हैं! बोलो।

8. **शीत-उष्ण** या सुख-दुख की **मात्रा** सहन करने की क्षमता बताने वाली मशीन है क्या कोई?

9. **प्रकाश** में इतना **सुख** और **ज्ञान** मिलता है कि सभी तत्व **निर्मल** हो जाए।

10. मैं तो नित्य ऐसी **बोध कथा** सुनता हूं कि **मेरे चित् व प्राण** तुष्यन्ति व रमन्ति में लीन हो जाते हैं।

1)11.43 2) 7.26 3) 15.12 4) 17.7 5) 8.24 6) 4.32 7) 3.14 8) 2.14 9) 14.6 10) 10.10

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2026-01/kids-section/shlok-pjhl-gem/



Yama, seated on his buffalo against a sunset sky, receives the boy Nachiketa, who stands before him with folded hands.

११ Kids Section

Nachiketa: The Boy Who Chose Truth

3 min read · १ चित्र

Long ago, in the peaceful age of great sages, there lived a wise and respected ṛṣi named **Uddālaka Āruṇi**. He was known far and wide for his knowledge of the Vedas and for living a life of discipline and truth.

One day, the sage began a sacred **yajña** — a holy ritual where everything one owns is offered away with honesty and a pure heart. But as the ritual continued, something was not right. Without noticing, Uddālaka started giving away old, weak cows — animals that were no longer useful.

Nearby stood his young son, **Nachiketa**.

Though small in age, Nachiketa had a sharp mind and a sincere heart. He watched quietly, thinking deeply.

"If Father is giving away everything," he wondered, "then what about me? To whom will he give me?"

With folded hands and a gentle voice, he asked, "Father, to whom will you give me?"

There was no reply.

He asked again — softly. Still silent.

When Nachiketa asked the third time, the sage, tired and distracted, spoke without thinking,
"I give you to **Yama Dev**, the god of death."

The words were heavy — yet Nachiketa did not cry.
He did not argue.
He only bowed.

He believed that words spoken by elders should always be respected.

With courage shining in his heart, the young boy set out alone toward the home of Yama Dev.

When Nachiketa reached there, he found the house silent. Yama Dev was away.

So the boy waited.

One day passed.
Then another.
Then a third.

No food.
No water.
No complaints.

Just patience and faith.

When Yama Dev finally returned, he was deeply moved to see a young child waiting so calmly at his door.

To make up for this hardship, Yama Dev said gently,
“My child, you have waited for three days. Ask for three boons.”

For the **first boon**, Nachiketa asked that his father’s anger be gone and that he welcome him home with love.

For the **second boon**, he asked to learn the sacred fire knowledge that leads to higher worlds.

Yama Dev gladly granted both.

Then came the **third boon**.

Nachiketa looked up bravely and asked,
“Some say the soul lives after death. Others say it does not. Please tell me the truth.”

Yama Dev tested him.

He offered gold.
A long life.
Kingdoms.
Pleasures and comforts.

But Nachiketa gently shook his head.

“These things fade with time,” he said softly.
“I do not want what ends. I want what is eternal. I want the Truth.”

Seeing the boy’s purity and courage, Yama Dev smiled with joy.

He taught Nachiketa the great secret of the **Ātmā** — the true Self that is eternal, fearless, and never dies.

Filled with wisdom and peace, Nachiketa returned home — not just as a child, but as a soul awakened by Truth.

Moral & Takeaways

• True wisdom begins with sincere questions
• Courage is not about age — it comes from the heart
• Pleasures are temporary, but Truth is eternal
• A pure heart receives the highest knowledge
• When we choose Truth, it always guides us forward

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2026-01/kids-section/nachiketa-the-boy-who-chose-truth/

11

Kids Section

Aahar

3. Steam or lightly boil the vegetables until soft. Let them cool and mash lightly.

2 min read

1. Banana–Ragi Pancake Squares(Naturally sweet, no sugar)

Ingredients

Ripe banana – 1 large

Ragi flour – ½ cup

(you may use whole wheat flour or oats flour instead)

Milk or water – ¼ to ⅓ cup (as needed)

Ghee – for cooking

Cardamom powder – a small pinch

A pinch of salt (optional)

Method

1. Peel the banana and mash it well in a bowl until smooth.

2. Add the flour and mix gently.

3. Slowly add milk or water to make a thick, smooth batter (not runny).

4. Add cardamom powder and mix again.

5. Heat a pan on medium flame and grease it lightly with ghee.

6. Pour a small ladle of batter and spread slightly into a small pancake.

7. Cook on low to medium flame until bubbles appear.

8. Flip and cook the other side till light golden.

9. Repeat for the remaining batter.

2. Baked Moong Dal & Vegetable Cutlets

Ingredients

For the cutlet mixture

Yellow moong dal – ½ cup

Mixed vegetables (carrot, bottle gourd, pumpkin, beans) – ½ cup, finely chopped

Grated paneer – 2 tbsp (optional, for softness)

Cumin seeds – ½ tsp

Ginger paste – ½ tsp

Turmeric powder – a pinch

Coriander powder – ½ tsp

Salt – as needed

For shaping & baking

1. Breadcrumbs or roasted sooji – 2 tbsp (optional, for firmness)

2. Ghee – 1–2 tsp (for brushing)

Preparation

1. Wash the moong dal and soak it in water for 3–4 hours.

2. Drain completely and grind the dal into a coarse paste (do not add water).

Method

1. In a bowl, combine moong dal paste, mashed vegetables, paneer, cumin seeds, ginger, turmeric, coriander powder, and salt.

2. Mix well to form a soft but firm mixture.

3. If the mixture feels sticky, add breadcrumbs or roasted sooji.

4. Divide the mixture into small portions and shape into flat round cutlets.

5. Heat a thick-bottomed tawa on **low–medium flame** and grease lightly with ghee.

6. Place the cutlets on the tawa, cover with a lid, and cook on **low flame for 5–6 minutes**. (This helps them cook inside.)

7. Remove lid, flip gently, and cook the other side till light golden.

8. Cook till both sides are firm and lightly crisp.

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2026-01/kids-section/aahar/

11

Kids Section

Dharma Detective Quiz:

2 min read

Instructions for Kids:
Read each situation carefully.

1. Your group is presenting tomorrow. One member did nothing, but now asks to put their name on the project.

What is the most Dharmic response?

A. Refuse and tell everyone they did nothing
B. Let them add their name to avoid conflict
C. Speak privately and decide fairly as a group

Best Dharma Choice: C
Why? Dharma is not just about truth, it's also about kindness. Speaking calmly and fairly balances honesty with compassion — you solve the problem without hurting anyone.
Takeaway: Being fair and respectful is always the strongest choice.

2. During a test, you see your friend's answer. You are unsure of yours.

What should you do?

A. Quickly glance and write the answer
B. Leave the question blank
C. Try your best and accept the result

Best Dharma Choice: C
Why? Dharma means doing your best and being truthful. Even if the answer is uncertain, honesty and effort matter more than a shortcut.
Takeaway: Truth and effort together are always victorious.

3. Your friend asks if their drawing is good. You don't like it.

What is the Dharmic way?

A. Say it's amazing even if it's not
B. Say it's bad honestly
C. Say something kind and suggest improvement

Best Dharma Choice: C
Why? Dharma is calm courage. You can be honest without being hurtful, and your friend can improve with gentle guidance.
Takeaway: Truth can be shared with kindness — that is true courage.

4. Someone posts an unkind comment about a classmate in a group chat.

What should you do?

A. Join in so you're not left out
B. Ignore it completely
C. Politely refuse and speak up

Best Dharma Choice: B
Why? Dharma is slow but steady and strong. Standing up for what is right may take courage, but it always protects what is good.
Takeaway: Even small acts of courage can make a big difference.

5. You are scolded by a parent for something you did not do.

What is the Dharmic response?

A. Shout back and defend yourself
B. Stay calm and explain respectfully later
C. Cry and say nothing

Best Dharma Choice: C
Why? Dharma teaches patience. Responding with calmness shows strength and respect, even when things seem unfair.
Takeaway: Patience and respect are powerful tools for resolving conflict.

Your Dharma Detective Mission: Remember, the path of Dharma is about truth, courage, kindness, and fairness. It may not always be the easiest choice, but it is always the right one.

##

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2026-01/kids-section/dharma-detective-quiz/

Unscramble the Daivī Qualities

1 min read

(Bhagavad Gītā – Chapter 16)

Instructions:
Below are some Daivī (divine) qualities taught by Bhagavān Krishna in Bhagavad Gītā, Chapter 16.
Unscramble the letters to discover these noble qualities.

1. AYAHAMB _____

2. ANDAAM _____

3. ASAHIM _____

4. AMSHKAA _____

5. SAMTYA _____

6. THEJA _____

7. AADY _____

8. NAJNA _____

9. CHSHAUAM _____

10. HATAP _____

Answers:

1. Abhayam

2. Daanam

3. Ahimsa

4. Kshama

5. Satyam

6. Tejah

7. Daya

8. Jnana

9. Saucham

10. Tapah

##########

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2026-01/kids-section/unscramble-the-daivi-qualities/

11

११ Kids Section

Mini-Game: Arrange the Ramayana Events

2 min read

The epic story of **Shri Rama** is full of thrilling events, brave heroes, and unforgettable lessons. Can you put the events in the **correct order**? Read carefully and let your imagination guide you!

Instructions for Young Adventurers:

Drag and drop the events (or imagine them in your mind) to arrange the story of Shri Rama from the very beginning to the triumphant end.

Events to Arrange:

- The king's **wives gave birth to four sons**.
- **Rama finally killed Ravana** and freed Sita.
- **Hanuman** flew across the ocean to Lanka, found Sita in the grove, and told her that Rama would come to rescue her.
- A ceremony called **Swayamvara** is held to choose the bridegroom for Sita.
- **King Dasharatha** sent Rama into exile, as promised to his second wife, Kaikeyi.
- A **rakshasa princess** tried to trick Rama, but Lakshmana wounded and drove her away.
- **Rama returned to Ayodhya** and was crowned king.
- **Bharata** begged Rama to return to Ayodhya and rule, but Rama refused.
- **A mighty battle** took place between Rama's army and Ravana's forces.
- **Dasharatha** offered a grand sacrifice to the gods, praying for sons.

जाँचें

उत्तर देखें

- **Bharata begged Rama** to return and rule Ayodhya, but Rama remained true to his promise.
- **King Dasharatha sent Rama into exile** as promised to Kaikeyi.

- **Hanuman flew to Lanka**, found Sita in the grove, and gave her hope that Rama would rescue her.
- **Rama finally killed Ravana** and rescued Sita.
- **A mighty battle** was fought between Rama's army and Ravana's forces.
- A **rakshasa princess tried to trick Rama**, but Lakshmana defeated her.
- A ceremony called **Swayamvara** was held to choose the bridegroom for Sita.
- **The king's wives gave birth to four sons** — Rama, Bharata, Lakshmana, and Shatrughna.
- **Dasharatha offered a sacrifice** to the gods, wishing for a son.
- **Rama returned to Ayodhya** and was crowned king.

जाँचें

Adventure Takeaways:

- Patience, courage, and truth always triumph.
- Loyalty and faith can move mountains — just like Bharata and Hanuman.
- Right action (Dharma) and perseverance lead to victory.
- Even the smallest helpers, like Hanuman, can change the course of destiny.

जाँचें

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2026-01/kids-section/mini-game-arrange-the-ramayana-events/

Theta Maze

१ मिनट पठन

Twenty little cells, paths twist and turn,

Some you follow, some you spurn.

With butter-soft steps and wisdom so deep,

How will Bal Krishna find his bansuri to keep?

बीस खानों की थीटा भूलभुलैया भारी,

हर मोड़ पे उलझन, राह लगे न्यारी।

लीला, बुद्धि, प्रेम से करो पूरी तैयारी,

बताओ कैसे मिलेगी कन्हैया को बांसुरी प्यारी?

उत्तर देखें

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/kids-section/theta-maze/

12

Regional Creative Mosaic

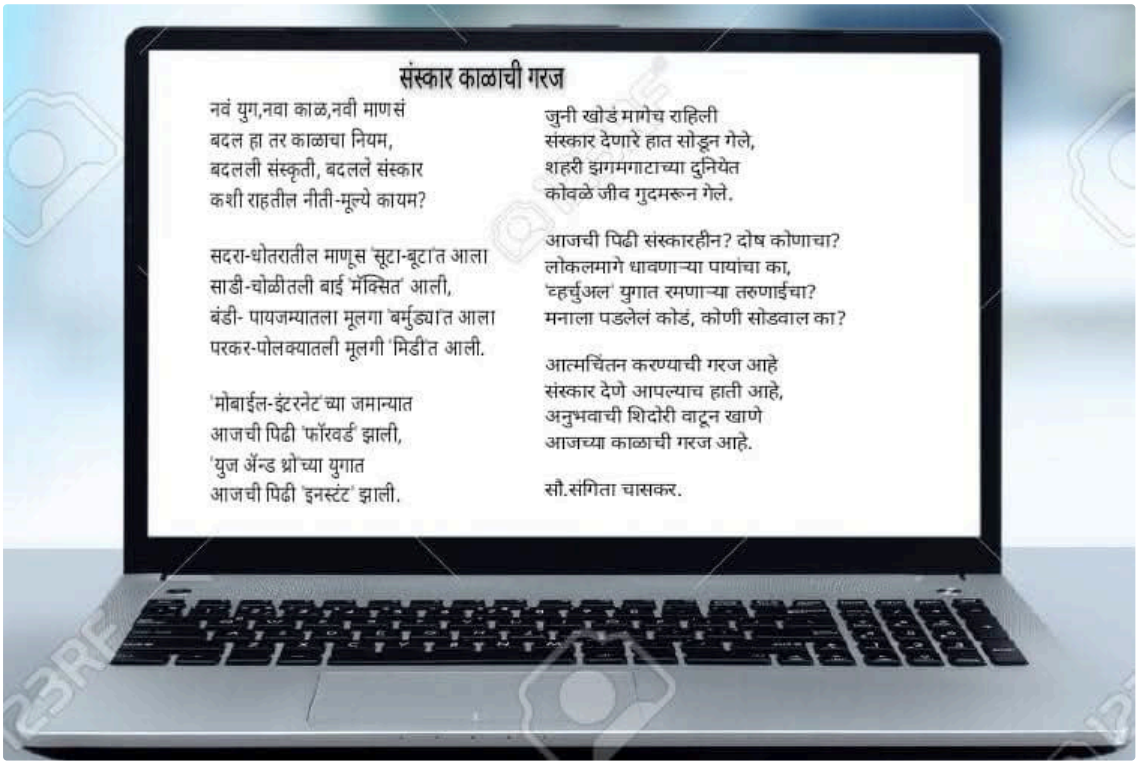
Regional Creative Mosaic पृष्ठ १५०

12

Regional Creative Mosaic

४ मिनट पठन

1



2

'खूब लढी मर्दानी वो तो झांसी वाली रानी थी' ये मशहूर सुभद्रा कुमार चौहान की पंक्ती पर सुझी हुई, गीता जयंती के शुभ अवसर पर मेरी चंद पंक्तिया इस प्रकार है/

भगवद्गीता महान जो, पाच हजार साल पुरानी है

धर्म कर्म संस्कार दे, सारी दुनिया आज भी दीवानी है //१//

भगवद्गीता जो श्रीकृष्ण अर्जुन संवाद रुपी कहानी है

दुनिया के सेंकडो देशोंने, जिसको पवित्र मानी है

खूब पढी गीता जो, श्री भगवान श्रीकृष्ण की वाणी है

जयंती जिसकी मनाये, वो सब ग्रंथों की रानी है

परम पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरी महाराजने ये थानी है

हर घर,हर कर भगवद्गीता को, अच्छे प्रचार से लानी है //२//

हम सब गीता परिवार सेवी, बहुत ही अभिमानी है

की हर कोशिश हर जगह परम गीता हमे पहुचानी है //

सारंग सबनीस

विलेपार्ले मुंबई

3

भगवद्गीता कविता

सातशे श्लोकांचे गेय काव्य

अठरा अध्यायात सांगितले

भगवान श्रीकृष्णांनी अर्जुनास

भूतो न भविष्यति ज्ञान दिले

गलितगात्र अवस्थेत हताश,

दिङ्मूढ झालेल्या अर्जुनास

मायापटल सारून श्रीकृष्ण म्हणे

अर्जुना धरावी तू सत्याची कास [१]

महाभारताच्या युद्धभूमीवर

अवतरला ज्ञानतेजोकलश

अमृत थेंब त्याचे आजही

प्राशन करीत आहे मानववंश [२]

अर्जुनविषादयोग दाखवी

विषाद आयुष्यातील आपला

सांख्ययोगात देह, आत्म्याचा

मिळतो आपल्याला दाखला [३]

कर्मयोग निरपेक्ष कर्माचे

महत्त्व सांगे आपणांस निक्षून

ज्ञानकर्मसंन्यासयोग दाखवी

त्या मार्गावरील उपाय अजून [४]

कर्मसंन्यासयोगासोबत आपण

करावे मन, इंद्रियांवर नियंत्रण

आत्मसंयमयोगात उद्धृत

ध्यानयोग, साधनेचे नियम [५]

परमसत्य, प्रकृती, भक्ती, विश्वज्ञान,

मुक्तीमार्ग सांगे ज्ञानविज्ञानयोग छान

अक्षरब्रह्मयोग देई अविनाशीब्रह्म,

देवत्त्व, भौतिक जग नि मृत्यूपूर्वीचे ज्ञान [६]

राजविद्याराजगुह्ययोग ब्रह्मविद्या,

ईश्वर स्वरूप आणि मोक्षमार्ग सांगती

विभूतीयोग श्रीकृष्णाच्या दिव्यशक्ती,

सर्वव्यापी मूळस्वरूपाचे वर्णन करती [७]

विश्वरूपदर्शनयोगात अर्जुनास

भगवंतांनी विराट, वैश्विक रूप दाखविले

अर्जुनाचा मोह, संशय दूर करूनी त्यास

धर्मसंस्थापनेसाठी तयार करविले [८]

भक्तीयोगात दिसते सगुण-निर्गुण भक्ती

आणि भक्तांचे प्रकार नि लक्षणे भक्तांची

ज्ञान-अज्ञान, क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ, पुरुष-प्रकृती

क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोगात दिसे भिन्नता यांची [९]

गुणत्रयविभागयोग त्रिगुणांचे वर्णन करी

पुरुषोत्तमयोग आत्मज्ञान मुक्तीचा मार्ग दाखवी

दैवासुरसम्पदविभागयोग दैवी असुरी प्रवृत्ती

ओळखून आध्यात्मिक उन्नती करण्यास शिकवी [१०]

श्रद्धात्रयविभागयोग दैनंदिन जीवनात

आध्यात्मिक कृतींचे करिती विवेचन

मोक्षसन्न्यासयोग जो ज्ञानाचा कळस

मोक्ष मिळवण्यास करिती मार्गदर्शन [११]

प्राचीन भारतीय तत्त्वज्ञानाचा

भगवद्गीता असे मुख्य ग्रंथ

कर्तव्य, धर्म, ज्ञान, भक्ती यांचा

मानव जातीस दिलेला दिव्यपंथ [१२]

©तनुजा प्रधान, अमेरिका.

4

भ्रम टूटा या नहीं

भ्रम टूटा या नहीं

सब ठीक है का भ्रम

सब अच्छा होगा का भ्रम

मानव जनित त्रासदी को प्राकृतिक आपदा कहने का भ्रम

पृथ्वी का तांडव होने पर जागे होने का भ्रम

हम तो अभी भी सोए हुए हैं

नेत्र अभी भी मूंदे हुए हैं

कदाचित जागने का ना अवसर मिले

माटी में निर्जीव कर ही मिले

दरकते इन पहाड़ों से

और उफनती इन नदियों से

मृत्यु के भी अवशेष ही मिले

तब माटी को दोष ही देंगे

और पुनः निर्माण करेंगे

पृथ्वी को अबला ही समझ

भ्रम करने की फिर भूल करेंगे

यह भ्रम नही भ्रम जाल है

मानुष अहम् ही स्वयं काल है

क्षणिक यह जीवन लीला भी नहीं

नष्ट हो जाए ऐसी यह धरा ही नहीं

समय कम है

और सोच मे डूबा यह मन है

देर ना हो जाए कहीं

भ्रम यह कभी टूटेगा भी या नहीं?

5.

తేజస్ శిక్షణలో మనసు మొలచిన మహా వృక్షం

మూడు రోజులు కాదు మూడు జన్మల వెలుగు లోపల దాగిన శక్తిని
బయటకు తెచ్చిన గురువుల తేజస్సుఆలోచన మారింది
ఆత్మవిశ్వాసం పెరిగింది

నేను చేయగలను అన్న సంకల్పం మనలో నిండింది

నిన్నటి నేను

సందేహాల బంధీని

ఈనాడు నేను

స్ఫూర్తితో నిండిన సైనికు రాలిని

ప్రతి శ్వాసలో స్మరణ

ప్రతి అడుగులో సంకల్పం

క్షణక్షణం శిక్షణే

అనుక్షణం ఆనంద లక్షణమే

తేజస్సు నేర్పింది మాటలు కాదు

జీవించాల్సిన జీవన పాఠం

నడవాల్సిన మార్గం కాదు

మనమే మారాలి అన్న భావం

ఈ మూడు రోజులు కాలంలో కలిసిపోవు

మన జీవితంలో

ఎప్పటికీ విత్తనాల వల్లే చల్లుతూ ఉంటాయి

మూడు రోజులు మూడు క్షణాల వలే కలిసిపోయిన కాలం

మళ్లీ మళ్లీ తిరిగి రాని క్షణాలు

ఎప్పటికీ మరిచిపోలేని ఈ క్షణాలు

క్షణం క్షణం అనుక్షణం ఆనంద శిబిరం

తేజ శిక్షణ శిబిరం

జీవితానికి దారి చూపిన ఓ వరం

Sarika Avasarala

■

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/regional-creative-mosaic/regional-creative-mosaic/

13

गीता भाव गीत

गीता भाव गीत ~डॉ संजय मालपाणी पृष्ठ १५५

गीता भाव गीत ~डॉ संजय मालपाणी

१ मिनट पठन • १ वीडियो

13 गीता भाव गीत ~डॉ संजय मालपाणी

13 गीता भाव गीत

~ रचना डॉ संजय मालपाणी

तप्त मन जब शुष्क हो

हरि नाम का संस्मरण हो।

भाव जब निष्पर्ण हो तब

भक्ति का अंकुरण हो॥

शत्रुता मन में घिरे जब

धर्म का विस्मरण हो तब

मैत्री मंगल स्मरण हो।

कृष्ण का अवतरण हो॥

क्रोध की ज्वाला जले जब

मोह का आवरण हो तब

सजगता से तरण हो।

पार्थ सा जागरण हो॥

अभय से अंतर जगे जो

अज्ञान का जब तम घनेरा

भयक्रांत मन संकीर्ण हो।

ज्ञान रवी अवतीर्ण हो॥

जब कामना का ज्वर उठे

संयमन का ले सहारा

और लोभ का अभिसरण हो,

शुद्ध अंतःकरण हो॥

मृत्यु जब नर्तन करे

अमृत सुधा का वरण हो।

दंभ दानव घेर ले तब

दिव्य दैवी शरण हो॥

अभिमान का विष दंश हो तब **मन करे सुमिरन सदा**

हृदय में श्री चरण हो

और दर्प का संहरण हो॥

असत् की अवधारणा पर **तमस् के वातावरण में**

सत्य का अवतरण हो।

ज्योति रश्मि किरण हो॥



वीडियो देखने के लिए स्कैन करें

YouTube ↗

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2026-01/giitaa-bhaav-giit/giitaa-bhaav-giit-ddon-snjy-maalpaannii/

14

Proud Moments

Proud Moments पृष्ठ १५८

14

Proud Moments

19 min read

Vrati

July 25

July

S No	Name	City	State
1	Dnyandev Popat Vidhate	Shikrapur	Maharashtra
2	Satya Gangadhara Rao Vadaga	Bengaluru	Karnataka
3	Lopamudra Mahapatra	Bhubaneswar	
4	Jaishri Purohit	Nagpur	Maharashtra
5	Madhuri Milind Shrotre	Beed	Maharashtra
6	Mugdha Jayant Kulkarni	Panvel	Maharashtra
7	Savita Datar	Mumbai	Maharashtra
8	Sowmya C R	Dakshina K	Karnataka
9	Suvarna Ramakrishna hegde	Hosagadde	Karnataka
10	Padmini saikrishna	Visakhapatnam	Andhra Pradesh
11	Swati Shrikant Bapat	Belgaum	Karnataka
12	Badgujar Shobha	Navi Mumbai	Maharashtra
13	Dimple Dikshit	Ahmedabad	Gujarat
14	Hasmitaben Pathak	Godhra	Gujarat
15	Shital manishbhai dharsandiya	Surat	Gujarat
16	Bharati Dattatray Morankar	Pune	Maharashtra
17	Vinaya Kulkarni	Ranipet	Tamil Nadu
18	Kalyani Vemana	Nalgonda	Telangana
19	Sneha MadhukarKulkarni	Satara	Maharashtra
20	Priya Pandurang Narlawar	Nanded	Maharashtra
21	Rupali Ravindra Bharambe	Jalgaon	Maharashtra
22	Bharathi Hemanath	Edison	New Jersey
23	Manisha Katkar	Mangalwedha,Solapur	Maharashtra
24	Chandrakant Avinash Kulkarni	CITY	Maharashtra
25	L Ratna kumari	Hyderabad	Telangana
26	Parvati Upadhya	Kumta	Karnataka
27	Savita Vasudeo Joshi	Chinchwad,Pune	Maharashtra
28	Susmita Eknath Kulwade	Kada	Maharashtra

		July	
29	Vimpa Vijay Sarvaiya	CITY	Maharashtra
30	Nandini Nitin kurundkar	Latur	Maharashtra
31	Jyotsna Tryambak Ingale	Nhavi	Maharashtra
32	Vineeta Chintamani Paranjape	Mumbai	Maharashtra
33	Dr Kiran Rani Saxena	Bareilly	Uttar Pradesh
34	Veerendra Kumar Trivedi	Banswara	Rajasthan
35	Anupama Thakur	Mandi	Himachal Pradesh
36	Neera vijay moghe	Kolhapur	Maharashtra
37	Jayashree pradhan	Bhubaneswar	Odisha
38	Vijaya raghavan mk	Mysuru	Karnataka
39	Akrura Chandra Bhuyan	Bhubaneswar	Odisha
40	Racherla Shiva bhavani	Guntur	Andhra Pradesh
41	Piyush Sharma	Mumbai	Maharashtra
42	Vijay Karanjekar	Pune	Maharashtra
43	Maya anand balote	Sangamner	Maharashtra
44	Chandrika B	Bangalore	Karnataka
45	JAYA GURUDAS SAWANT	Mumbai	Maharashtra
46	Rohit kota	Middlesex	New Jersey
47	Mulakaloorishylaja	Visakhapatnam	Andhra Pradesh
48	Sanjeevani Suresh Kalekar	Pune	Maharashtra
49	Smt Anuradha Mishra	Pune	Maharashtra
50	Savita Kunte	Nagpur	Maharashtra
51	Vinoda Shetty	Panaji	Goa
52	Pushpa Dilip Chaudhari	Bhusawal	Maharashtra
53	Alka Shirke	Pune	Maharashtra
54	Pranjal prashant ballal	Raipur	Chhattisgarh
55	Padmaja Bijapurkar	Purb Burdwan	West Bengal
56	Savitha Kamath	Mangalore	Karnataka
57	Pramila Laxmanrao Bondar	Ambajogai	Maharashtra

Aug 25

August

S No	PRN	Name	City	State
1	261448	Makarand Prabhakar Ghare	Nashik	Maharashtra
2	1228314	Rashmi Sanjay Ingole	Pune	Maharashtra
3	1037708	Usha Rani Sahu	Aska	Odisha
4	1489689	Kunj	East singhbhum	Jharkhad
5	1286952	Rekha killedar	Latur	Maharashtra
6	694541	Saisoham mishra	Pune	Maharashtra
7	847501	Aruna singisetty	Bangalore	Karnataka
8	509112	Kovela Padmavathi	Hyderabad	Telangana
9	1073582	HEMLATA DEVIDAS JAKATDAR	Abhona	Maharashtra
10	239701	Shakuntala Amrit Dhake	Thane	Maharashtra
11	221978	Mukta Goel	Delhi	Delhi
12	91393	Vaidehi Pande	Nagpur	Maharashtra
13	355202	Parul Pritesh Patel	Pune	Maharashtra
14	949107	Arun Swami	Cupertino	California
15	185852	Harsha Virendra Davda	Mumbai	Maharashtra
16	1004830	Veeralakshmi	Hyderabad	Telangana
17	409985	Veerendra Kumar Trivedi	Banswara	Rajasthan
18	805261	Kripi	Delhi	Delhi
19	126187	Deepika Kulkarni	Hubballi	Karnataka
20	1172518	Nilima Ashok Ratnaparkhi	Akola	Maharashtra
21	1449609	Kanhaiya sharma	Hapur	Uttar Pradesh
22	771210	Ahire Lalita Pandharinath	Shirpur	Maharashtra
23	123005	Lata Dikshit	Mumbai	Maharashtra
24	12568	Savita Chidrawar	Pune	Maharashtra
25	1627550	Swardhuni Amit Joshi	Latur	Maharashtra
26	1199237	V Venkateswara Rao	Nellore	Andhra Pradesh
27	477305	Bhargavi	Banglore	Karnataka
28	1398635	Kommana Nagajapati	Hyderabad	Telangana

		August		
29	623263	Subha chandramohan	Bhilai	Chhattisgarh
30	803656	Nabha Uday Abhyankar	Surendranagar	Gujarat
31	581264	TILOTTAMA KOCHGAVAY.	Bokaro Steel CITY Jharkhand	Jharkhand
32	319232	PADMA AGARWAL	Angul	Odisha
33	1002629	Jyotsna Rishi	CITY	Bihar
34	179775	Smt. Sunita N Nagar	Burhanpur	Madhya Pradesh
35	97490	Madhavi venkatesh kancharlawar	kinwat	Maharashtra
36	403697	Kushailya Devi	Jammu	Jammu and Kashmir
37	565567	Dr Shashi Thakur	Sagar	Madhya Pradesh
38	789151	Ashalatha Nayak	Udupi	Karnataka
39	628375	Kusum Agarwal	Champa	Chhattisgarh
40	957114	Jonnalagadda Vanisree	Nandigama	Andhra Pradesh
41	40884	Alka Suresh Bhargav	Thane	Maharashtra
42	973029	Swapnil Chandrashekhar Harshe	CITY	Maharashtra
43	1125517	Seema Advani	Raipur	Chhattisgarh
44	993713	Madhu Rani Agarwal	Gurugram	Haryana
45	117817	Sandhyaben Vishnubhai patel	Ahmedabad	Gujarat
46	79148	Vibha Piyush Trivedi	Ahmedabad	Gujarat
47	278014	Dr Shubhangi Patange	Nanded	Maharashtra
48	628970	Latha Jayakrishnan	Chennai	Tamil Nadu
49	178914	Sripriya Dumpa	Thane	Maharashtra
50	618322	Abolee chandrashekhar Fadnavis	Nagpur	Maharashtra
51	999471	Sohan Lal kala	Dehradun	Uttarakhand
52	202577	Veena Verma	New Delhi	Delhi
53	826494	madhu gupta	bhopal	Madhya Pradesh
54	1242513	Dr Neha bhatt	Vadodara	Gujarat
55	1275108	Belaganti Usha Rani	Guntakal	Andhra Pradesh
56	831427	Vasantha Rao	Khargar, New mumbai	Maharashtra
57	883773	Shivangi kushwah	Seoni	Madhya Pradesh

		August		
58	34047	Bhavana doshi	Pune	Maharashtra
59	883364	Subhadra Misra	Brahmapur	Odisha
60	528262	Manjoo	Bangkok	Kanchanaburi
61	292473	NIRANJANA MANIAR	Vadodara	Gujarat
62	404392	Archana Rangankar	Mumbai	Maharashtra
63	125607	Neela Ratnakar Ranade	Dhule	Maharashtra
64	688601	ANIL KUMAR AMBASTA	PATNA	Bihar
65	776507	D VENKATESWARA RAO	Rajahmundry	Andhra Pradesh

Sep 25

	Sept		
S No	Name	City	State
1	Bhagyalakshmi Ramesh.	Trivandrum	Kerala
2	Anagha Sanjay Deshpande	Edmonton	Alberta
3	Swarada Sujit Wankhade	Pune	Maharashtra
4	Gummadi Pushpalatha	Hyderabad	Telangana
5	SHWETA S NEKLIKAR	Mumbai	Maharashtra
6	Aparna Dave	Pratapgarh	Rajasthan
7	Nidhi Singhal	New Delhi	Delhi
8	Ragini pandey	Bilaspur495001	Chhattisgarh
9	Mridula P	Bangalore	Karnataka
10	Charusheela Suresh Wani	Fremont	California
11	Shubhada Paranjape	Harrow	AOL
12	Bulusu Pavani kamala Gayathri	Hyderabad	
13	Seema kelkar	Bangalore	Karnataka
14	Rupali Ravindra Bharambe	Jalgaon	Maharashtra
15	Parul Madhusudan Dave	Vashi, Navi- Mumbai	Maharashtra
16	Vitthal Vishwanath Naik	Kankavali	Maharashtra
17	Meennath Narayan Lakhote	Nagpur	Maharashtra
18	Chaitanya Atavale	Bangalore	Karnataka
19	Soundarya Lalitha	Bengaluru	Karnataka
20	sushama parekh	Pune	Maharashtra
21	M. Venkatesh Mehendale	Udupi	Karnataka
22	Minakshi Ramesh Thakor	Vadodara	Gujarat
23	VIJAYBHAI VAJSHURBHAI GARANIYA	Rajkot	Gujarat
24	Savithri HM	Bengaluru	Karnataka
25	Sarita Jain	Delhi	Delhi
26	Nar Bahadur Saund	Mahendranagar	Mahakali
27	Vijaya Lakshmi Shukla	Bilaspur	Madhya Pradesh
28	Veena Pathak	Sitamarhi	Bihar

	Sept		
29	Veena Ghalasasi	Karad	Maharashtra
30	Vandana jain	NOIDA	Uttar Pradesh
31	Ramani Malladi	Vizianagaram	Andhra Pradesh
32	Leena Gorakh	Mumbai	Maharashtra
33	KIRANDUBEY	JABALPUR	Bihar
34	Charusheela Satish Dande	Champaign	Colorado
35	Nirmala Rajendra Wadekar	Rahuri	Maharashtra
36	Koduganti Krishna Vijaya Lakshmi	Khanpur Hyderabad	Telangana
37	Anita Goel	Herndon	District of Columbia
38	Karanam usha rani	Hyderabad	Telangana
39	Vidya shanker sharma	Allahabad	Uttar Pradesh
40	Vijay Laxmi	Gurgaon	Haryana
41	Shobha somani	CITY	Chhattisgarh
42	Sunita Bankar	Ahmednagar	Maharashtra
43	Barkha Agrawal	New Delhi	Delhi
44	Dr Pushpalatha	Chikkaballapur	Karnataka
45	VASISHTA V BHAT	Honnavar	Karnataka
46	Sandhya Anil Manke	Mumbai	Maharashtra
47	Vibha Rajendra Patil	Amravati	Maharashtra
48	Sarita Naresh Patil	Akola	Maharashtra
49	Nabha Sunil Patil	Nanded	Maharashtra
50	Sujata sunil khiste	Aurangabad	Maharashtra
51	Sreerupa Dutta	Howrah	West Bengal
52	K S MANJULA	Bangalore	Karnataka
53	K S NAGAMANI	Vijayawada	Andhra Pradesh
54	THOTA PRABHAKAR	Visakhapatnam	Andhra Pradesh
55	Dr Rushikesh Shrikant Nagalkar	Amravati	Maharashtra
56	Jayshri Take	Ahmednagar	Maharashtra
57	K Alivelu Manga	Visakhapatnam	Andhra Pradesh

	Sept		
58	Nita laxman bhujbal	Panvel	Maharashtra
59	Arathi	Puducherry	Puducherry
60	Sugandha Palande.	Jabalpur	Madhya Pradesh
61	Shila Mahanta	West Garo Hills	Meghalaya
62	Nalini	Kanpur	Uttar Pradesh
63	Sridevi Kothamasu	Noida	Uttar Pradesh
64	Surekha Kulkarni	Thane	Maharashtra
65	Viha Vishal Phasate	Indore	Madhya Pradesh
66	Sangeeta Khandelwal	Indore	Madhya Pradesh
67	Kamalabai Bhutada	Deulgaon Raja	Maharashtra
68	Rupal Kothari	Mumbai	Maharashtra

Oct 25

		Oct	
S No	Name	City	State
1	Jagarlamudi Kartisha	Hyderabad	Telangana
2	Manjushree Sooraj	Calicut	Kerala
3	Sowmya Shivakumar	Moodabidre	Karnataka
4	Manorama panda	Dharamgarh	Odisha
5	Daggula Achyutha reddy	Khammam	Telangana
6	Vemuri prakasha valli	Hyderabad	Telangana
7	Madhuri Chandrashekhar Nikam	à¤ªà¥	Maharashtra
8	Sangita Prashant Wedhane	Nashik	Maharashtra
9	Rajasekhara Gupta Jaini	Dhone	Andhra Pradesh
10	Rupali Ravindra Bharambe	Jalgaon	Maharashtra
11	Subhasis Haldar	Amtala, South 24 Parganas	West Bengal
12	Chhavi bansal	Ghaziabad	Delhi
13	NARAMALA VEERA BHUPAL REDDY	Hyderabad	Telangana
14	Saradha Rani Mandadi	Fremont	California
15	SAI SANTHI GOKARAKONDA	Bengaluru	Karnataka
16	Manasi Vilas Prabhudesai	Thane	Maharashtra
17	Radha Mohan Sunkara	Guntur	Andhra Pradesh
18	Shailaja Bapat	Thane	Maharashtra
19	Prasanna Menon	Mumbai	Maharashtra
20	Kiran Jodhani	Kolkata	West Bengal
21	Dina Mukesh Kansara	Mumbai	Maharashtra
22	ramya golla	Rajamahendravaram	Andhra Pradesh
23	Chhama Rajeev Agarwal	New Panvel	Maharashtra
24	Shailendra bharadwaja	Ajmer	Rajasthan
25	Shyamala S	Thodupuzha	Kerala
26	Manisha thakkar	Dombivali	Maharashtra
27	MANGALA DOLAS	Bhopal	Madhya Pradesh
28	Alpana Biswas	Behala Kolkata	West Bengal

		Oct	
29	Dr Mithilesh Upadhyay	Banglore	Karnataka
30	Anita Patel	New Delhi	Delhi
31	Gayathri Chaganti	Hyderabad	Telangana
32	Parmeshwari Joshi	NEW DELHI	Delhi
33	Varsha Dattarao Jadhav	Nashik	Maharashtra
34	Manisha Ramesh patil	Sangamner	Maharashtra
35	Sonawane mohan vasant	Nashik	Maharashtra
36	Nirmala	Bangalore	Karnataka
37	Usha kumari	Parassala	Kerala
38	Poonam	Dearka	Delhi
39	Shreya Gautam	Jaipur	Rajasthan
40	Kolla Narasimha Rao	Hyderabad	Telangana
41	Surabhi Sudhakar kandhare	Pune	Maharashtra
42	Ashwini Arun Dongaonkar	Pune	Maharashtra
43	Rameshwar dayal Goswami	Bhopal	Madhya Pradesh
44	Rabindranath Sar	Bhubaneswar	Odisha
45	IShan Shrestha	Pune	Maharashtra

Nov 25

	Nov		
S No	Name	City	State
1	Jyoti srihari	Mumbai	Maharashtra
2	PRASANNA VISHWANATH	Bengaluru	Karnataka
3	Rani Gadde	Hyderabad	Telangana
4	Madhu	Muzaffarnagar	Uttar Pradesh
5	Rashmi Pagey	Bhopal	Madhya Pradesh
6	P N L Purna Lakshmi	Nellore	Andhra Pradesh
7	ASHALATHA VINNAKOTA	Rajamahendravaram	Andhra Pradesh
8	JYOTI CHANDRAKANT BARSHIKAR	Banglore	Karnataka
9	Vidya M Pai	Thirthahalli	Karnataka
10	Parvati Markandey	North Goa	Goa
11	K Vijayalakshmi	Hyderabad	Telangana
12	Rekha Patel	Ajmer	Rajasthan
13	Nirupama Singamaneni	Tirupati	Andhra Pradesh
14	Priti Takale	Pune	Maharashtra
15	Suresh K Shetty	Virar	Maharashtra
16	Manjula Hosadurga.	Mysore	Karnataka
17	VENKATA BHASKARA NAGAMANI KOLLEPARA	Narasapuram	Andhra Pradesh
18	Kkomal C Gurnaani	Surat	Gujarat
19	Dr Neha bhatt	Vadodara	Gujarat
20	Abha Jakhar	Gurgaon	Haryana
21	Uma shetty	Margao	Goa
22	Seema jaywant wane	Pune	Maharashtra
23	Shobharani jonna	Hyderabad	Telangana
24	PREETI NEELKAMAL TRIVEDI	Mandsaur	Madhya Pradesh
25	Bhima Pandurang Kale	Pune	Maharashtra
26	Gouri Prasanna Tripathy	CUTTACK	Odisha
27	Shashi Gupta	Delhi	Delhi
28	Mrs Usha Prakash Mahajan	Thane	Maharashtra

	Nov		
29	Vidya Madhwrao Badwaik	Bhandara	Maharashtra
30	Vani ramaka	Warangal	Telangana
31	Archana Somnath Mankar	Palghar	
32	Duvvuri Lolakshi	Hyderabad, Telangana	Telangana
33	Trupti Patel	Ahmedabad	Gujarat
34	Ruchi Bisen	Bhilai	Chhattisgarh
35	CHANDRIKADEVI	Ernakulam	Kerala
36	ANURADHA PARAG MAHAJAN	Mumbai	Maharashtra
37	Ujwala HEBBALKAR	Moshi pimpri chinchwad pune	Maharashtra
38	Mamta Somani	Kolkata	West Bengal
39	Sarada vetcha	Hyderabad	Telangana
40	Smt Poonam bajpai	Jabalpur	Madhya Pradesh
41	Anuradha Sunkara	Guntur	Andhra Pradesh
42	Ulka Dhananjay Peshkar	Nagpur	Maharashtra
43	Prabhakar	Bengaluru	Karnataka
44	Nishigandha Ninad Soman	Amravati	Maharashtra
45	Katukam sunitha	Rajanna Siricilla	Telangana
46	Ambika atul waghmare	Amravati	Maharashtra
47	AADITYA VIJAYVERGIYA	Kota	Rajasthan
48	Suchitra Desai	Bengaluru	Karnataka
49	Sneha divyakant narkhede	Pune	Maharashtra
50	usha gupta	Central Delhi	Delhi
51	Manjusha Jahagirdar	Pune	Maharashtra
52	Vijaya Singh.	Ghaziabad	Uttar Pradesh
53	Hari Prasad Varda P	Bengaluru	Karnataka
54	Dr K N SRINIVASAN	Bangalore	Karnataka
55	SHRINIVAS SAHASRABUDHE	Pune	Maharashtra
56	Smita Shriniwas Kulkarni	Mumbai	Maharashtra
57	Arun Govind kulkarni	Sangli	Maharashtra

	Nov		
58	Reena Sodhani	Noida	Uttar Pradesh
59	Sri gowri	Koppa	Karnataka
60	Sushila kashinath targude	Mukhed dist nanded	Maharashtra
61	Shamala joshi	Thane	
62	Ratna Kumari	Hyderabad/India	Telangana
63	Nalini Mishra	Hyderabad	Telangana
64	Aruna kela	Lucknow	Uttar Pradesh
65	Prachi Pramod Kotwal	Nashik	Maharashtra
66	Vidya Nandkishor Pande	Nagpur	Maharashtra
67	DrTrinathPati	Jharsuguda	Odisha
68	Nilima Ramesh Kulkarni	Sangali	Maharashtra
69	Ashok Mhatarba Vishwasrao	Junnar	Maharashtra

Dec 25

	Dec		
S No	Name	City	State
1	Beldi Radhika	Guntur	Andhra Pradesh
2	K Durga Prameela	Tanuku	Andhra Pradesh
3	Bonta Usha	Visakhapatnam	Andhra Pradesh
4	Akanksha Anay Bandgar	Mumbai	Maharashtra
5	Meenal Sadanand Apte	Thane	Maharashtra
6	D S S Chandramathi Devi	Kakinada	Andhra Pradesh
7	SUDHA JAYDEV NAIR	Navi Mumbai	Maharashtra
8	Meennath Narayan Lakhote	Nagpur	Maharashtra
9	Arunkumar Rallabandi	Hyderabad	Telangana
10	Veena Kanthawar	Crestwood	Kentucky
11	Pradnya Prashant Pitkar	Nagpur	Maharashtra
12	Ridhi Sharma	New Delhi	Delhi
13	Padigela ramadevi	Kamareddy	Telangana
14	Meenaben shah	Modasa	Gujarat
15	GAYATHRI DEVI	Hyderabad	Telangana
16	Shwetha Venkataramanan	Chennai	Tamil Nadu
17	JAYA GURUDAS SAWANT	Mumbai	Maharashtra
18	Jayati maheshwari	Bhilwara	Rajasthan
19	Sowbhagya T G	Chitradurga	Karnataka
20	Anjali Puntambekar	Pune	Maharashtra
21	Sunita Malla	Jammu	Jammu and Kashmir
22	Shashi Patankar	Bhilai	Chhattisgarh
23	Kalyani Shripad kulkarni	411041	
24	Meenakshi Bhagyam	Harrogate	England
25	Dharmavarapu Malathi	Nellore	Andhra Pradesh
26	Manjusha kamat	Margao	Goa
27	K V Surekha	Guntur	Andhra Pradesh
28	Sasanapuri Ramalakshmi	Visakhapat	Andhra Pradesh

	Dec		
29	Jayalaxmi Achar	Bangalore	Karnataka
30	Shreerang Oak	Mumbai-Dombivli	Queensland
31	Sau Yogini Pradeep Rao	Jalgaon	Maharashtra
32	Vasudev Chouhan	Raipur	Madhya Pradesh
33	Vallurupalli padma	Vijayawada	Andhra Pradesh
34	Shailaja Shivashankar	Hassan	Karnataka
35	Polisetty Saiuma	Tadipatri	Andhra Pradesh
36	Sulabha Arvind Gokhale	Nashik	Maharashtra
37	Beena Paresh Dave	Pune	Maharashtra
38	Shubhangini Prafulla Summanwar	PUNE	Maharashtra
39	Sushama Deshmukh	Thane	Maharashtra
40	Dr.Sarojini Panda	Bhubaneswar	Odisha
41	Ashok khede	Vadodara	Gujarat
42	SUSHMA PABOTHU	BANGALORE	Karnataka
43	Ramani Malladi	Vizianagaram	Andhra Pradesh
44	Nita laxman bhujbal	Panvel	Maharashtra
45	Vandana vinod padalkar	Chatrapati sambhaji nagar	Maharashtra
46	Shreyanvi Oak	Mumbai-Dombivli	Queensland
47	Swati Sanjay Chavan	Mumbai	Maharashtra
48	Aswathy Rajesh	Bengaluru	Karnataka
49	Pvnlakshmi	Rajahmundry	Andhra Pradesh
50	Kothamasu Vani Rama Sujatha	Bhimavaram	Andhra Pradesh
51	Krishna Jiwan Singh	Ranchi	Jharkhad
52	Saroj Periwal	Ahmedabad	Gujarat
53	Ghanshyam Dodiya	Ahmedabad	Gujarat
54	Vasantha Madabhushi	Hyderabad	Telangana
55	Sridevi Kothamasu	Noida	Uttar Pradesh
56	Hrisik Dev Bharadwaj	Darrang District	Assam
57	Seetarami Reddy Velpula	Nandyal	Andhra Pradesh

	Dec		
58	Neeta Nandkumar Malkhare	Solapur	Maharashtra
59	Sushila allamwar	Nanded	Maharashtra
60	CHUNDI NARASIMHA SWAMY	Hyderabad	Telangana

Vichakshan Verse

July 25

S No	Name	City	State
1	Dimple Dikshit	Ahmedabad	Gujarat
2	Kamini Mehta	Mumbai	Maharashtra
3	Rajani Chamadia	Rewa	Madhya Pradesh
4	Uma shetty	Margao	Goa
5	Padmavathi Karna	Kukatpally, Hyderabad	Telangana
6	Rameshbhai Bhagvanbhai Zala	Ahmedabad	Gujarat
7	Lakshmi Pushpa Kodali	Hyderabad	Telangana
8	Radha Madhyastha	Miyazaki	Miyazaki
9	Sadhana Gomekar	Nagpur	Maharashtra
10	Renu Agarwal	Mumbai	Maharashtra
11	Ajay Gupta	Meerut	Uttar Pradesh
12	Tulasi Dalavai	Bengaluru	Karnataka
13	Sharmila Padmakar Deshmukh	Pune	Maharashtra
14	YATHARTHA AGRAWAL	Biratnagar	Kosi
15	Nagamalleswari Rachakonda	Guntur	Andhra Pradesh
16	Gomati Kathane	pune	Maharashtra
17	Jayant Balkrishna Kulkarni	New Panvel (West)	Maharashtra
18	Snehal Suhas Majgaonkar	Pune	Maharashtra
19	Jyoti Shinde	Pune	Maharashtra
20	Kunadharaju Rama Devi	Bhimavaram	Andhra Pradesh
21	Arati Hemant Naik	Kalyan East Dist Thane	Maharashtra
22	Kiran Ramakrishnan	Pune	Maharashtra
23	Omprakash Varma	Nashik	Maharashtra
24	Rayapudi sridevi	Rajahmundry	Andhra Pradesh
25	RAVIKANT KARDA	Mumbai	Maharashtra
26	Roopashri Kumar	Bengaluru	Karnataka

Sep 25

S No	Name	City	State
1	Vinita Vaghela	Ahmedabad	Gujarat
2	Jharna makhija.	MUMBAI ANDHERI LOKHANDWALA	Maharashtra
3	Seema Ravikant Pandit	Pune	Maharashtra
4	Nupur Gupta	Mumbai	Maharashtra
5	Alka vinod Autkar	Amravati	Maharashtra
6	Usha Digambar Karambelkar	Kolhapur	Maharashtra
7	Naga Sri Latha	Hyderabad	Telangana
8	Radhika Varada	hyderabad	Andhra Pradesh
9	Manavi Upadhyaya	Bangalore	Karnataka
10	Yogita Bipin Kharade	Mumbai	Maharashtra
11	Bhavani Nagasarapu	Narasaraopeta	Andhra Pradesh
12	Dakshina Malladi.	Mumbai	Maharashtra
13	Rani gupta	Biaora	Madhya Pradesh
14	Thanu Pradeep	Kochi	Kerala
15	Geeta devi	Pakur	Jharkhand
16	Sujatha Balachandran	Chennai	Tamil Nadu
17	Kunda Laxman Patil	Bhusawal	Maharashtra
18	Tanvi Desai	Bangalore	Karnataka
19	Aparna Dnyanesh Joshi	Ratnagiri	Maharashtra
20	Somani Sunanda Ravindra	Ahmednagar	Maharashtra
21	Shashikirana Bhave	CITY	Karnataka
22	Poori Soujanya	Tandur	Telangana
23	Bhagyashree Dilip Belgudri	Gadhinglaj Kolhapur	Maharashtra
24	Sumitra Bhat	Bangalore	Karnataka
25	Janaki N	Bengaluru	Karnataka
26	Bhavana Prakash Nayak	Mumbai	Maharashtra
27	Deoram Ganpat Dumbre	Navi Mumbai	Maharashtra
28	Jayasri sivapuram	Pune	Maharashtra
29	Sudha Kamath	Karkala	Karnataka

S No	Name	City	State
30	Varsha Vijay Patil	Pune	Maharashtra
31	Ammaji Muppalla	Visakhapatnam	Andhra Pradesh
32	Gayathri Holla	UDUPI	Indiana
33	Yogesh Chandra Mishra	Lucknow	Uttar Pradesh
34	Budumuru kalyani	Visakhapatnam	
35	Mugdha Jayant Kulkarni	Panvel	Maharashtra
36	Aruna Shiva	Secunderabad	Telangana
37	Pratibha Laxman Nankar	Dombivali, Maharashtra	Maharashtra
38	Lata Kancharlawar	Nanded	Maharashtra
39	Rekha Rajendra Parkar	Devgad	Maharashtra
40	Vasudha Dongre	Karkala	Karnataka
41	Pushpa nayar	Bengaluru	Karnataka
42	VENKATA BHASKARA NAGAMANI KOLLEPARA	Narasapuram	Andhra Pradesh
43	Shubhangi Barhate	CITY	Maharashtra
44	Medha Vinayak	Sagar	Karnataka
45	NANDA VIJAY AYACHIT	Nagpur	Maharashtra
46	Indra Mohan	Bengaluru	Karnataka
47	Dhara Girija	Guntur	Andhra Pradesh
48	Kalpana Vijayji Kabra	Jalgaon	Maharashtra
49	Vimpa Vijay Sarvaiya	CITY	Maharashtra
50	Nirmala Shashikant Dandage	à¤¸à¤¾à¤¤à¤¾à¤°à¤¾	Maharashtra
51	Shashikala Jadhav	Karad	Maharashtra
52	Pushpa Vijay Chaudhari	CITY	Maharashtra
53	Sita Singhal	Agra	Uttar Pradesh
54	Bhavna Dineshchandra Sevak	Ahmedabad	Gujarat
55	Suchita Subhash Pingle	CITYPune	Maharashtra

Nov 25

S No	Name	City	State
1	Arati Shyam Bhutada	Pune	Maharashtra
2	Falguni Pathak	Visakhapatnam	Andhra Pradesh
3	Priya Prashant Deshmukh	Chikhli	Maharashtra
4	Shamala Shripad Palsuledesai	Mumbai	Maharashtra
5	Dr Amruta Deshmukh	Aurangabad	Maharashtra
6	Dr.Shruti Samir Jamadagni	Pune	Maharashtra
7	Purti Pramod kulkarni	Pune	Maharashtra
8	Sayli Kedar Sapre	Bangalore	Karnataka
9	Manju Somani	Mumbai	Maharashtra
10	Hasmitaben Pathak	Godhra	Gujarat
11	KIRAN MUNDADA	Parbhani	Maharashtra
12	Sanjita Agarwal	Dhuliyan	West Bengal
13	Neela Chaitanya Thakar	Pune	Maharashtra
14	Sasmita Padhi	Bhubaneswar	Odisha
15	Sadhana Doshi	CITY	Maharashtra
16	Bhaskar N Patel	Danville	Illinois
17	Archana Singh.	Muzaffarpur	Bihar
18	Saroja Shivaram Bhat	Tirupati	Andhra Pradesh
19	Ushaprasad	Mysore	Karnataka
20	Ayodhya Mangesh Deshmukh	City Jalna	Maharashtra
21	Heena Shanker Dave	CITY	Gujarat
22	Archana Balaji Parsewar	Sonpeth,Parbhani	Maharashtra
23	Rajani Bharat Belhekar	Sonai	Maharashtra
24	Shaila deshmukh	Thane	Maharashtra
25	Priti Lalit Gediya	Mumbai	Maharashtra
26	Kumkum Bhatnagar	Lucknow	Uttar Pradesh
27	Vishakha Prashant Sontake	Mumbai	Maharashtra
28	Abhay Madhukarrao Deshmukh	Latur	Maharashtra
29	Veena Dwivedi	Village: Bhiura, Atraulia, Azamgarh	Uttar Pradesh

S No	Name	City	State
30	Veena Ganorkar	Bhopal	Madhya Pradesh
31	Dakshakunvarba Jagdishsinh Gohil	Ahmedabad	Gujarat
32	Pushpa Sinha	Patna	Bihar
33	Arunaben C Belani	Ahmedabad	Gujarat
34	Vaishali Vinayak Samant	CITY	Maharashtra
35	Aarati Mujumdar	Pune	Maharashtra
36	Deepali Kathane	Nagpur	Maharashtra
37	Munmun Roy	Howrah	West Bengal
38	radha rani vangapandu	Hyderabad	Telangana
39	Varsha Ashok Desai	Mumbai	Maharashtra
40	Kamal Bhange	Aurangabad	Maharashtra
41	Shilpa Mehta	CITY	Maharashtra
42	Yogesh ladha	Nawa city	Rajasthan
43	Yadvendra Somra	Sonipat	Haryana
44	Suneeta Godkhindi	Mysuru	Karnataka
45	Beena Mangesh Lahoti	Gulbarga	Karnataka
46	Rajesh Arora	Faridabad	Haryana
47	Rupali Ravindra Bharambe	Jalgaon	Maharashtra
48	Angeli Mam Bhat	Jammu	Jammu and Kashmir
49	Shubhangi Sanjay Malvade	Bhuinj	Maharashtra
50	Radhika Shivaji Nikam	Navi Mumbai	Maharashtra
51	Dr Sangeeta	Navi Mumbai	Maharashtra
52	Saniha Ravi Shetty	Mumbai	Maharashtra
53	Suman Ashok patil	Pune	Maharashtra
54	Chandra Prakash Pandey	Lucknow	Uttar Pradesh
55	Babasaheb Haribhau palve	Pune	Maharashtra
56	Sunita Subhash Jadhav	Ulhasnagar	Maharashtra
57	Nisha Rani sonowal	Dibrugarh	Assam
58	Ashish Vimalkant Pandey	Sambhajinagar	Maharashtra

S No	Name	City	State
59	Swati Amit Maheshwari	Nasik	Maharashtra
60	Anupama Thakur	Mandi	Himachal Pradesh
61	Aadya Bhave	Bengaluru	Karnataka
62	Sarita Bajaj	Biratnagar	
63	Varsha Vilas Deshpande	Akola	Maharashtra
64	Mukta Vijay pokale	Sonpeth	Maharashtra
65	Kamal Shamsundar Lakhotiya	CITY	Maharashtra
66	Lata Prabhakar Rege	Mumbai	Maharashtra
67	Sangita Sanjay Deo	Amravati	Maharashtra

Vichakshan Reverse

Aug 25

S No	Name	City	State
1	Manisha Sanjay Kawale	Mumbai	Maharashtra
2	Harati Dumpala	CITY	Karnataka
3	Sharvari Krishna Parab	Mascat	Muscat
4	PADMAVATHY PRABHAKAR	Dombivali	Maharashtra
5	Asmita Pawar	Belgaum	Karnataka
6	Sayoni Datta	Bangalore	Karnataka
7	Meera Gupta	Meerut	Uttar Pradesh
8	Madhuri patil	Bhilai	Chhattisgarh
9	Meenakshi veeranna Takkalki	Belagavi	Karnataka
10	Vasudha Deshpande	Pune	Maharashtra
11	Munmun Roy	Howrah	West Bengal
12	Mrs Kavita Pravin Bhusari	CITY. Nagpur	Maharashtra
13	Saroja Shivaram Bhat	Tirupati	Andhra Pradesh
14	Geeta devi	Pakur	Jharkhand
15	Yogesh Chandra Mishra	Lucknow	Uttar Pradesh
16	KIRANBALA NAGAR	Acton	Massachusetts
17	Vijayalakshmi S	Mangalore	Karnataka
18	Bharti kushwaha..	Shahdol	Madhya Pradesh
19	Archana Gejendra Jog	Khed Ratnagiri	Maharashtra
20	Vaishali Balduwa	Bhisi	Maharashtra
21	Alaka Surendra Karnik	Pune	Maharashtra
22	Reeta Chawla	Ludhiana	Punjab
23	Rupali Kabra	Jalgaon	Maharashtra
24	Varun Pathak	CITY	Maharashtra
25	Shreyasha Shrikant Deshmukh	Barshi	Maharashtra
26	Guthula Jhansi Lakshmi	Gandhidham	Gujarat
27	Sunita goel	Delhi	Delhi
28	Anitha Hurgat	Dharmabad	Maharashtra
29	Ranjana R Bhat	Bengaluru	Karnataka

S No	Name	City	State
30	KRISHNAN R	Trichirappalli	Tamil Nadu
31	Shailaja Udaysingh Pisal Deshmukh	Wai	Maharashtra
32	Meera Mangesh Trifaley	Nagpur	Maharashtra
33	Er Deva Sharma Paudel	Kathmandu	Bagmati
34	Nisha kulshreshtha	Greater Noida	Uttar Pradesh
35	Chandralekha	Navi Mumbai	Maharashtra
36	Chetna A Sachde	CITY	Maharashtra
37	Ritu Sharma	Amritsar	Punjab
38	Anita Somani	Bhilwara	Rajasthan
39	Vidya Nishtala	Hyderabad	Telangana
40	Harsha Amar Rathi	Amravati	Maharashtra
41	Tulasi Dalavai	Bengaluru	Karnataka
42	SMITA GIRISH SOMANI	Sangamner	Maharashtra
43	Malati Bhagwat Patil	Bhusaval	Maharashtra
44	Kiran Bhardwaj	Hyderabad	Telangana
45	Jaini Deepika	Dhone	Andhra Pradesh
46	M Ananda kumar	CITY	Andhra Pradesh
47	Manjari Belapurkar	Vadodara	Gujarat
48	Pratibha Khamamkar	Chandrapur	Maharashtra
49	Gagan Bihari Bhuyan	Bhubaneswar	Odisha
50	YATHARTHA AGRAWAL	Biratnagar	Kosi
51	Rajeshwari Umesh Kondawar	CITY	Maharashtra
52	Swati Amit Maheshwari	Nasik	Maharashtra
53	Ibungoton Sinam	Flat no 3C, 55 South End Park, Kolkata	West Bengal
54	Shanta Shah	Ahmedabad	Gujarat
55	Lata Kancharlawar	Nanded	Maharashtra
56	VIJAY CHUNILAL BALSARA	CITY	Gujarat
57	Prakash Ramchandra Joshi	Jule Solapur, Solapur	Maharashtra
58	Saroj Rani	Delhi	Delhi

S No	Name	City	State
59	Shaila Kailas Parashar	Nashik	Maharashtra
60	Dipika Mandhania	Jaipur	Rajasthan

Oct 25

S No	Name	City	State
1	Poori Soujanya	Tandur	Telangana
2	Suma prashanth bhat	Kumta	Karnataka
3	Pramila Deshmukh	Noida	Uttar Pradesh
4	Bhavana Prakash Nayak	Mumbai	Maharashtra
5	Radha Madhyastha	Miyazaki	Miyazaki
6	Manavi Upadhyaya	Bangalore	Karnataka
7	Sudha Kamath	Karkala	Karnataka
8	Thanu Pradeep	Kochi	Kerala
9	Hemakiran Krishnamurthy	Bengaluru	Karnataka
10	Pushpa nayar	Bengaluru	Karnataka
11	Bhavani Nagasarapu	Narasaraopeta	Andhra Pradesh
12	Alka vinod Autkar	Amravati	Maharashtra
13	Gayathri Holla	UDUPI	Indiana
14	Bhagyashree Dilip Belgudri	Gadhinglaj Kolhapur	Maharashtra
15	Satyavathi	Khammam Telangana	Telangana
16	Kamini Mehta	Mumbai	Maharashtra
17	Tanvi Desai	Bangalore	Karnataka
18	Naga Sri Latha	Hyderabad	Telangana
19	Mrinalini Sachin Joshi	CITY	Gujarat
20	Sumitra Bhat	Bangalore	Karnataka
21	Jayasri sivapuram	Pune	Maharashtra
22	Rekha Phalak	CITY	Maharashtra
23	Kirti Shidhaye	Chh.Sambhajinagar	Maharashtra
24	Somani Sunanda Ravindra	Ahmednagar	Maharashtra
25	Yogita Bipin Kharade	Mumbai	Maharashtra
26	Snehal Suhas Majgaonkar	Pune	Maharashtra
27	Radhika Varada	hyderabad	Andhra Pradesh
28	Janaki N	Bengaluru	Karnataka
29	Gomati Kathane	pune	Maharashtra

S No	Name	City	State
30	Shubhangi Barhate	CITY	Maharashtra
31	Nupur Gupta	Mumbai	Maharashtra
32	Dhara Girija	Guntur	Andhra Pradesh
33	Suchita Daulat Sawant	Mumbai	Maharashtra
34	Jharna makhija.	MUMBAI ANDHERI LOKHANDWALA	Maharashtra
35	Medha Vinayak	Sagar	Karnataka
36	Sujatha Balachandran	Chennai	Tamil Nadu
37	Jyoti Shinde	Pune	Maharashtra
38	Pratibha Laxman Nankar	Dombivali, Maharashtra	Maharashtra
39	Ammaji Muppalla	Visakhapatnam	Andhra Pradesh
40	VENKATA BHASKARA NAGAMANI KOLLEPARA	Narasapuram	Andhra Pradesh
41	Rayapudi sridevi	Rajahmundry	Andhra Pradesh
42	Mugdha Jayant Kulkarni	Panvel	Maharashtra
43	Bhagwati Gautam Patel	Dapoli	Maharashtra
44	Kailash chandra agrawal	Mathura	Uttar Pradesh
45	Nirmala Shashikant Dandage	à¤¸à¤¾à¤¨à¤¾à¤°à¤¾	Maharashtra
46	Shashikala Jadhav	Karad	Maharashtra
47	Budumuru kalyani	Visakhapatnam	
48	Anilesh Kumar Mishra	Mumbai	Maharashtra
49	Srividya Balakrishnan	Bengaluru	Karnataka
50	Nirmala Sadashivrao Upadhye	Ambad	Maharashtra
51	Aruna Shiva	Secunderabad	Telangana
52	Arati Hemant Naik	Kalyan East Dist Thane	Maharashtra
53	Ajay Gupta	Meerut	Uttar Pradesh
54	Sadhana Gomekar	Nagpur	Maharashtra
55	NANDA VIJAY AYACHIT	Nagpur	Maharashtra
56	BHAGTI KAPOOR	West Delhi	Delhi
57	Indra Mohan	Bengaluru	Karnataka
58	Kanchan Sunil Pathak	Amravati	Maharashtra

S No	Name	City	State
59	Shailaja ulhas inamdar	Delhi	Delhi
60	Seema arya	Jaipur	Rajasthan
61	Omprakash Varma	Nashik	Maharashtra
62	NARENDRA PRASAD VYAS	Bhopal	Madhya Pradesh
63	Bhavna Dineshchandra Sevak	Ahmedabad	Gujarat

Dec 25

S No	Name	City	State
1	Rameshbhai Bhagvanbhai Zala	Ahmedabad	Gujarat
2	Arati Shyam Bhutada	Pune	Maharashtra
3	KIRAN MUNDADA	Parbhani	Maharashtra
4	Sasmita Padhi	Bhubaneswar	Odisha
5	Falguni Pathak	Visakhapatnam	Andhra Pradesh
6	Usha Digambar Karambelkar	Kolhapur	Maharashtra
7	Dr.Shruti Samir Jamadagni	Pune	Maharashtra
8	Purti Pramod kulkarni	Pune	Maharashtra
9	Priya Prashant Deshmukh	Chikhli	Maharashtra
10	Rajesh Arora	Faridabad	Haryana
11	Dr Amruta Deshmukh	Aurangabad	Maharashtra
12	Samarth Rathi	Akola	Maharashtra
13	Veena Dwivedi	Village: Bhiura, Atraulia, Azamgarh	Uttar Pradesh
14	Sangita Sanjay Deo	Amravati	Maharashtra
15	Manju Somani	Mumbai	Maharashtra
16	Shamala Shripad Palsuledesai	Mumbai	Maharashtra
17	Dimple Dikshit	Ahmedabad	Gujarat
18	Archana Singh.	Muzaffarpur	Bihar
19	Rupali Ravindra Bharambe	Jalgaon	Maharashtra
20	Kumkum Bhatnagar	Lucknow	Uttar Pradesh
21	Seema Ravikant Pandit	Pune	Maharashtra
22	Yadvendra Somra	Sonipat	Haryana
23	Veena Ganorkar	Bhopal	Madhya Pradesh
24	Neela Chaitanya Thakar	Pune	Maharashtra
25	Suman Ashok patil	Pune	Maharashtra
26	Priti Lalit Gediya	Mumbai	Maharashtra
27	Radhika Shivaji Nikam	Navi Mumbai	Maharashtra
28	Vimpa Vijay Sarvaiya	CITY	Maharashtra
29	Hasmitaben Pathak	Godhra	Gujarat

S No	Name	City	State
30	Dakshakunvarba Jagdishsinh Gohil	Ahmedabad	Gujarat
31	Sanjita Agarwal	Dhuliyan	West Bengal
32	Nisha Rani sonowal	Dibrugarh	Assam
33	Vishakha Prashant Sontake	Mumbai	Maharashtra
34	Shaila deshmukh	Thane	Maharashtra
35	Yogesh ladha	Nawa city	Rajasthan
36	Dr Sangeeta	Navi Mumbai	Maharashtra
37	Varsha Ashok Desai	Mumbai	Maharashtra
38	Smritikana Banerjee	Chinsurah	West Bengal
39	Rajani Bharat Belhekar	Sonai	Maharashtra
40	Arunaben C Belani	Ahmedabad	Gujarat
41	Suchita Subhash Pingle	CITYPune	Maharashtra
42	Shilpa Mehta	CITY	Maharashtra
43	Ayodhya Mangesh Deshmukh	City Jalna	Maharashtra
44	Beena Mangesh Lahoti	Gulbarga	Karnataka
45	Narayan Appachar	Salem	Oregon
46	Deoram Ganpat Dumbre	Navi Mumbai	Maharashtra
47	Rekha Rajendra Parkar	Devgad	Maharashtra
48	Kunda Laxman Patil	Bhusawal	Maharashtra
49	Sadhana Doshi	CITY	Maharashtra
50	Shubhangi Sanjay Malvade	Bhuinj	Maharashtra
51	Kamal Shamsundar Lakhotiya	CITY	Maharashtra
52	Babasaheb Haribhau palve	Pune	Maharashtra
53	Shashikirana Bhave	CITY	Karnataka
54	Bhaskar N Patel	Danville	Illinois
55	Archana Balaji Parsewar	Sonpeth,Parbhani	Maharashtra
56	Lata Prabhakar Rege	Mumbai	Maharashtra
57	Kiran Ramakrishnan	Pune	Maharashtra

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2026-01/proud-moments/proud-moments/